पाकड़ पर प्रेत

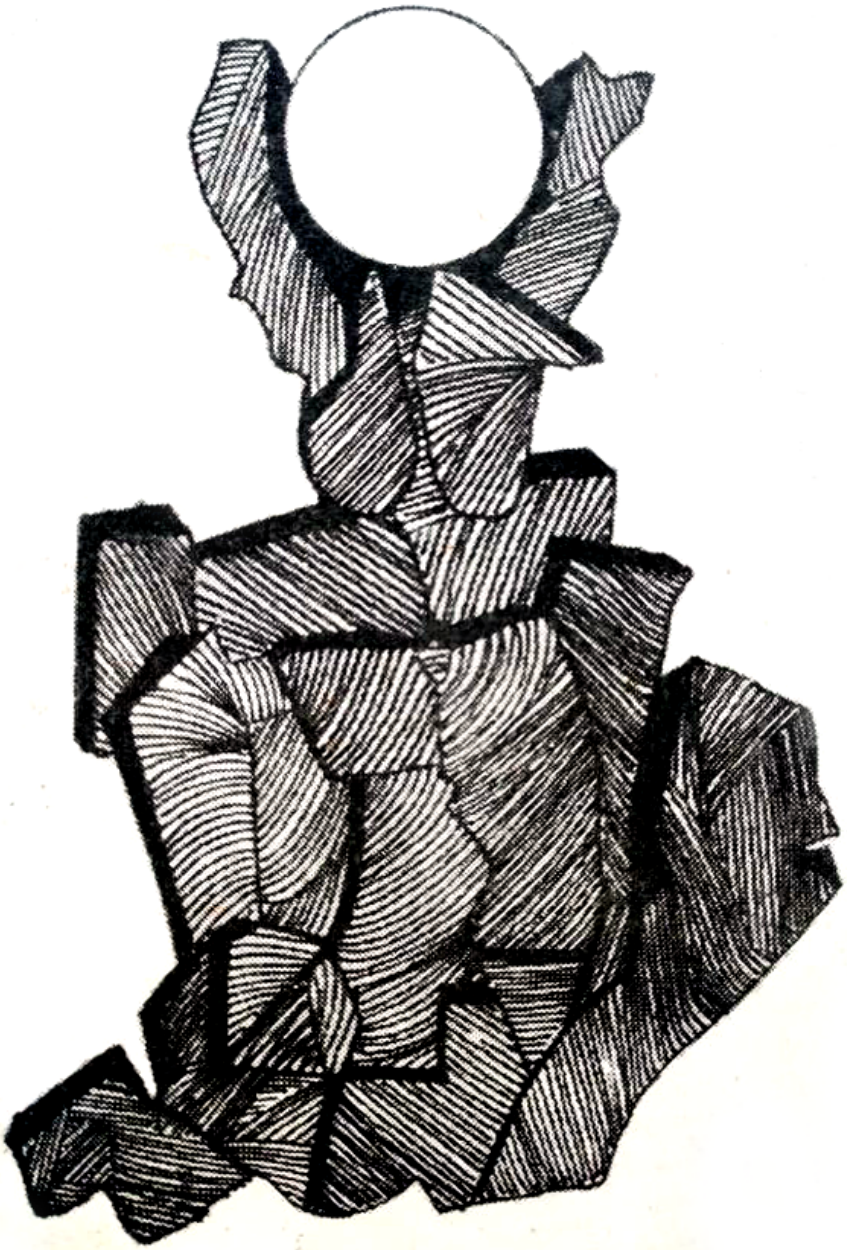

डॉ. अमरेन्द्र

पाकड़ पर प्रेत

अंगिका कहानी-संग्रह

पाकड़ पर प्रेत

(अंगिका कहानी-संग्रह)

लेखक

डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक

कृति : पाकड़ पर प्रेत
लेखक : डॉ. अमरेन्द्र
प्रथम प्रकाशन : ई. २००७
सर्वाधिकार : लेखक
प्रकाशक : अंगिका संसद, भागलपुर-2
मुद्रक : एम. एल. प्रिंटर्स, भागलपुर-2
मूल्य : ५०/-

PAKAR PAR PRET By Dr. Amrendra

आपनोॅ बचपन केॅ
जे अभियो रुपसा के चानन नद्दी किनारी में
खेलतें-कूदतें होतै ।

—अमरेन्द्र

दू टा बात

ई कहानी-संग्रह के नाम की होतै—जखनी सोचलियै—तेॅ एक-एक कहानी के शीर्षक मनोॅ में ऐलै—बदरकटुवोॅ रौद, वापसी, चन्दन विष व्यापत नहीं, आरनी-आरनी । मजकि नाम रहलै एक्के—'पाकड़ पर प्रेत' ।

लागलै, ई शीर्षक एक हेनोॅ शीर्षक छेकै, जे सब कहानी के शीर्षक घुमाय-फिराय केॅ बनेॅ पारेॅ । सब कहानी में कोय-न-कोय सुख के किंछा छै—यानी कि विशाल पाकड़ गाछी के छाँव आरो सब सुख पर भाङ्गटोॅ बैठलोॅ छै—प्रेत नाँखी ।

ई केना होय गेलै—कहानी लिखै के वक्ती तेॅ सोचवो नै करलेॅ छेलियै कि हेनोॅ होय जैतै ! की कहानी के यहेॅ नियति होय छै ?

जे हुएँ, हम्में आपनोॅ ई कहानी सिनी के बारे में कुच्छू नै कहै लेॅ चाहै छियै—कुछ कहतै तेॅ विद्वान आलोचक और प्रबुद्ध पाठक—कि संग्रह रोॅ कहानी कहानी छेकवो करै कि नै ?

मजकि एक बात जे हम्में कहे लेॅ चाहै छियै, ऊ ई, कि संग्रह के दू कहानी—'एक सावित्री रोॅ मौत' आरो दुसरोॅ 'रैन भई चहुँ देस' ही हेनोॅ कहानी छेकै, जे पुरानोॅ कहानी छेकै, ओकरौ में 'एक सावित्री रोॅ मौत' आरो पुरानोॅ' । ई दोनों के बीच के पुरानोॅ कहानी छेकै 'भरखर राती के भोर', जे रेडियो भागलपुर सें प्रसारित होलोॅ छेलै, जे ई संग्रह में कोय कारणवश नै आवेॅ पारलै । ई कहानी हिन्दी में 'आधी रात की सुबह' के नाम सें नवभारत टाइम्स, पटना १८ दिसम्बर १९८८ में प्रकाशित छै । एकरो पहिलें 'एक सावित्री रोॅ मौत' के भी हिन्दी भाषान्तर के प्रकाशन १० जुलाई १९८८ के नवभारत टाइम्स, पटना में होय

चुकलों छेलै । २००५ में आवी कें एकटा कहानी लिखलियै—'कहानी के कोख' ।

फेनू बाद में जत्तें कहानी लिखलों गेलै—ऊ सब २००६ में, जे ई संग्रह में छै । बस दुए कहानी 'पगलवा मरी गेलै' आरो 'सुख' ई. सन २००७ के सृजन छेकै । सब समेटी-उमेटी कें तोरा सिनी के सम्मुख; स्वीकार करों, तभियो ठीक, नै करों, तभियो ।

—अमरेन्द्र

चैत मास शुक्ल सप्तमी
वि. सं. २०६४

कहानी-क्रम

१. पाकड़ पर प्रेत	९
२. बरकटुवों रौद	१६
३. वापसी	२३
४. चन्दन विष व्यापत नहीं	३२
५. माय	४१
६. कहानी के कोख	५१
७. जहाँ न आपनों कोय	५५
८. धरमदास रों कपली गाय	६४
९. एक सावित्री रों मौत	७५
१०. रैन भई चहुँ देस	८२
११. पगलवा मरी गेलै	९०
१२. सुख	९५
१३. भय	१०२
१४. रहस्य	१०४

पाकड़ पर प्रेत

रात उतरै में आभी ढेरे देर छेलै । जोगबरिया की आय सें रही रहलोॅ है, कचहरी हाता के ई दुकानी में । जोॅन दिनोॅ सें शहरोॅ में गोड़ राखलेॅ छै, वही दिनोॅ सें । मतरकि कभियो ऊ आपना केॅ है रँ अनभुआर हेनोॅ नै पैलोॅ छेलै, नै ई रँ भयभीते, जे रँ आय आपना केॅ महसूस करी रहलोॅ छेलै । ओकरोॅ चाय-पान के दुकान ठीक बरोॅ गाछी के नीचेॅ छेलै, जे ओकरोॅ वास्तें घरो के काम करै, मतरकि आय यहेॅ घोॅर ओकरोॅ वास्तें राकस के मूँ रँ लागी रहलोॅ छै, गाछी के कोय्यो ठाहुर पर जेन्हैं कोय चिड़ियाँ पंख फड़फड़ावै आरो एक्को पत्ता सरसरावै, तेॅ चौंकी पड़ै ऊ। ओकरोॅ मनोॅ में शंका के आंधड़-बतास चली रहलोॅ छेलै, ‘‘हमरौ खूब मालूम छै कि आय दस सालोॅ के बाद रमखेलिया के याद विसेसरा केॅ कैन्हें पड़लोॅ छै । आय तांय कहाँ हेरैलोॅ छेलै ओकरोॅ मति ? कहियो तेॅ याद नै करलकै । हमरौ खूब मालूम छै कि अनचोके ओकरोॅ पिरीत कैन्हें जागलोॅ छै’’ जोगबरिया नें मने-मन सोचलेॅ छेलै आरो आपनोॅ बाँया तरत्थी पर दाँया हाथ के एक घुस्सा जमैतें कहलेॅ छेलै, ‘‘विसेसरा, बस यहेॅ समझेॅ कि तोहें हमरोॅ भाय छेकैं, ऊ सौतैले कैन्हें नी, आखिर छेकैं तेॅ भाइये । जों भाय नै रहतियैं, तेॅ तहूँ जोगबरिया के गोस्सा देखिये लेतियैं । कोर्ट कचहरी जे होतियै, ऊ देखलोॅ जैतियै । आरो की कोर्ट-कचहरी के दाँव-पेंच तोहें हमरा सें ज्यादा जानै छैं । अरे, हमरोॅ जिनगिये कोर्ट-कचहरी के मुंशी-वकीलोॅ के बीच गुजरलोॅ छै । हमरा एकरोॅ इलिम रहेॅ-न-रहेॅ कि चाय-पान में कत्तेॅ चीनी-पत्ती आरो चूना-खैर लगै छै, मतरकि कानून केना चलै छै, ऊ तेॅ हम्में जानवे नी करै छियै । ई

चाय-पान, चीनी-चूना के ज्ञान तें रमखेलिया कें छै, जेकरा तोहें उड़ावै लें चाहै छैं, मतरकि जानी लें विसेसर, तोरों ई मंसा जिनगी भर नै पूरैवाला छौं । हों..... ई तोरों लें लगोर होतौं, हमरों लें हमरों बेटा छेकै ।'' सोचतें-सोचतें हठाते ओकरों ध्यान रमखेलिया दिश गेलै, जे दुकानी के एक ओरी में बेंची बिछाय कें चित्त लेटी गेलों छेलै, छाती पर दोनों हाथ राखलें, एकदम घोर नींदों में ।

जोगबरिया भी ओकरे बगलों में सुतै छै, दुकान कें समेटी-उमेटी, तीन बेंची कें जोड़ी एकदम चौकी रँ बनाय लेलकों आरो वहीं पर सुती रहलों ।

ऊ धीरें-धीरें बेंची सें उठलै आरो रमखेलिया के दोनों हाथ कें छाती सें हटाय कें नीचें करी देलकै, ''कहै छै छाती पर हाथ राखी कें सुतला सें खराब-खराब सपना आवै छै ।'' वैनें माय सें सुनलों बातों कें याद करनें छेलै ।

छाती पर हाथ धरी सुतला पर रमखेलिया कें तें सपना की ऐतै, हों, जोगबरिया कें आयकल खराब-खराब सपना जरूर आवी रहलों छै, जों न दिनों सें ओकरा अशुभ के शंका मिललों छै आरो यहें सपना के कारण ऊ आयकल रात-रात भरी भरसक जागले रही जाय छै। जगले रहै छै तें हेन्है कें नै; आयके तें बात छेकै, वै नें विसेसरा कें सरजुग के पान दुकानी पर देखलें छेलै । पान लेला के बादो ऊ घंटा भरी वहें दुकानी पर खाड़े रही गेलों छेलै । चबाय तें रहलों छेलै पान, मतरकि ओकरों नजर रमखेलिये दिश छेलै । वैं समझी रहलों छलै कि हम्में ओकरा नै देखलें छियै, मतरकि ओकरा की मालूम, जों न दिना सें ओकरों नीयत के पता हमरा चललों छै, हम्में आपनों अजनबी गहकियो पर नजर राखै छियै । आयकल, तें आदमी कें दिन-दहाड़े उड़ाय लै भागै छै, रमखेलिया के आभी उमिरे की होलों छै, बारह बरिस के तें होतें-होतै ।''

पता नै ओकरों मनों में की ऐलों छेलै, ऊ धीरें-धीरें सरयुग के दुकानी दिश बढ़लै, वाहीं सें हिन्नें-हुन्नें सब दुकानी के आगू-पीछू कें कोन्हराय-कोन्हराय कें देखलें छेलै आरो फेनू निचिन्त होय आपनों बेंची तक लौटी ऐलों छेलै । सोचलकै, ''रात बीतै में अभियो आधों पहर बाकी छै, कैन्हेंनी वें एक झपक मारी लौं । फेनू तें फरचों होय के पहिले, जे आँख खुलतै तें दस बजें रातिये फुर्सत .....कांही कोय शंका-ऊंका के बातो नै छै'' आरो केहुनी बल्लों लेटतें आपनों टाँग बेंची पर चढ़ाय लेलें छेलै । नींद लानै के खयालों सें वैं आँखो बन्द करी लेलकै, मतरकि आय ओकरा केन्हौ कें नींद नै आवी रहलों छेलै । रही-रही कें विसेसर के चेहरा ओकरों आँखी में घुरी आवै छेलै, आरो ओकरों चेहरा याद करी ऊ फेनू बुदबुदैलों छेलै, ''केन्हों छटलों बदमाश लागें लागलों छै ई । आय

सें दस साल पहिलका सें एकदम अलग । तखनियो कड़ा रुख के तें छेवे करलै । नै रहैतियै तें खाली माय्ये-बाबू के की, पूरा टोला-मुहल्ला के विरोध करी कें फुलटुस दा के विधवा कनियैनी कें आपनों घोंर केना लै आनतियै ! विसेसर नें टोला में हकाय कें कही देलें छेलै, ''रमखेलिया आबें हमरों बच्चा छेकै, आरो एकरी माय हमरी कनियैन ।''

वैनें पिछलका दिनों कें याद करलकै, ''मतरकि सालो नै पुरलों होतै, घरों में गाली-गलौज मचें लागलों छेलै । रमखेलिया माय कें ओकरों सांय के नाम लैकें की-की नै गाली पढ़ें लागलों छेलै, आरो रमखेलिया, रमखेलिया तें टुक-टुक खाली ताकै । भुखलों-प्यासलों टौव्वैतें रहै । जबें मय्ये कें दाना नसीब नै छेलै तें बेटा कें कहाँ सें होतियै । टोला-पड़ोसों सें तें पहलें सें दुश्मनी छेलै, ई बीहा लै कें । फेनू विसेसरै कोंन कमाऊ छेलै । दिन भरी हिन्नें-हुन्नें सें झाड़ी लानै तें घोंर चलै.....विसेसरां भले घरों सें आँख मुनी लेलें छेलै, आरो सब केना मुनतियै ! एक घरों के दू दुआर रहलै सें की होय जाय छै । कानवों-कपसवों दीवार-द्वार थोड़े जानै छै । हमरों जी फाटी कें रही गेलों छेलै,

''मतरकि सचमुचे यहें बात छेलै ?'' जोगबरियां आपनों दिमागों पर बल देलें छेलै आरो तुरत्ते ऊ बोली उठलों छेलै, ''नै, नै, ई तें नै छेलै । बात कुछु आरो छेलै । जोंन दिन हम्में ओसरा पर रमखेलिया कें खेलतें देखलें छेलियै, वही दिन हम्में एकदम सें अवाक रही गेलों छेलियै, ओकरा निरयासी कें देखलें छेलियै—एकदम हमरे बेटा के नाक-नक्श लेलें छै । सोचलें छेलियै—आय ऊ जों जिन्दा रहतियै, तें हेने होतियै, छिनमान हेने ।''

केन्हों पगलाय गेलों छेलै जोगबरिया—आपनों गोदी में आपनों पहिलों टा पूत पावी कें । सोरी घोंर भी नै बुझलें छेलै वैनें आरो दिन-रात सोरिये घरों में घुसलों रहै । टोला-पड़ोसा के रिश्ता में भौजाय लगैवाली जनानी सिनी लाजो लगावै, मतरकि ओकरा पर कोय असर नै । वैं सोचैं लागलै—कत्तें-कत्तें सपना देखलें छेलै वैनें, अपनी कनिलयैनी से भी कहीं ज्यादा.....मतरकि छवो महीना भर नै टिकलै, आपनें नसैलै तें मय्यो कें साथे-साथ लै गेलै । हँकरी-हँकरी कें जान दै देलें छेलै, एकदम सें तेजी देलें छेलै अन्न-पानी कें .....पता नै, रमखेलिया कें देखत्है कैन्हें हमरा लागलों छेलै कि हमरे बेटा फेनू जनम लेलें छै, आरो ऊ दिन एक बातों पर रमखेलिया माय के गोदी सें एकरा लै कें हम्में यहाँ चललों ऐलों छेलियै । ऊ दिन सें लै कें आय तक कोय्यो नै खोज-खबर लेलकै, विसेसरा तें तखनी ई बातों सें खुशे होलों छेलै.....यहाँ ऐला के ठीक साले भरी बाद गाँव के पुरानों दोस्त मंगलिया सें हमरा भेंट होलों छेलै तें वहीं बाते-बात

में बतैलें छेलै कि रमखेलिया कें है रँ लै आनला पर विसेसरां कहलें छेलै—ठिक्के होलै, जे विपत्ति उठाय कें लै गेलै, अच्छा होतियै कि ओकरी मैय्यो कें उठाय लै जैतियै, जानों के जंजाल छुटतियै । सारों, आपनों पेट तें पालना मुश्किल, वहाँ पर ई मौगी लें अन्न जुटैवों कत्तें मुश्किल छै, हम्मी जानै छियै । ऊ तें जुआनी के तरंग में हम्में अन्हरों बनी कें एकरा लै आनलियै । नै आनतियै तें एक पेट साँढ़ नाँखि डकरतें पालतें रहतियैं.....

जोगबरिया मने-मन भुनभुनैलों छेलै, ''तें खबर कैन्हें नी करवाय देलैं, तोरा लगोर जनानी उठाय के साहस, तें हमरा नै । जों रमखेलिया माय आवै वक्ती जरियो टा आपना मोंन देखैतियौ, तें सब फैसला तखनिये होय जैतियौ । हम्में तें यही सोची ओकरा सें कुछ नै कहलें छेलियै कि की समझतै वैं—ई घरों के लोग जनानी कें लोटा-थरिया समझै छै, जे चाहें वही उठाय कें चली दें । तखनी ई बात जों हमरों मनों में नै ऐलों होतियौ तें विसेसर आय ऊ हमरा लुग होतियौ । दुकानी के पीछू तें खाली पड़लों जग्घों छेवे करै, एकटा ढावा खसाय देतियै । वही में उमिर काटी लेतिय वैं । हों आबें उमिरे तें काटना छै। तोहें तें ओकरा उमिरो नै काटै लें देतें होवैं । ऊ जनानी के साँय होय के दावाहो करै छैं आरो पेटो नै पालै छैं.....विसेसरा, जों ऊ यहाँ होतियै तें पेट खातिर कोय मरद के पैर नै पकड़ै लें पड़तियै, जानी ले । मंगलिया के एक बातों सें हम्में जानी लेलें छियौ कि तोहें ऊ बेबस जनानी सें की-की करवाय रहलों छैं । की समझलें छैं—सरंग में गहन लागै छै तें खाली चांदे-सुरूज जानै छै—गहण तें बाद में लागै छै, दुनिया पहिलें जानै छै आरो फेनू आग कांही लागौ, धुइयां तें दूर तांय दिखाय पड़ै छै ।''

ऊ दिन बाजार करतें हठाते लपटोलिया के डोंगी का मिली गेलों छेलै, तें जोगवारी कें गाँव के खिस्सा सुनैतें हाँसी कें कहलें छेलै ''आबें तोहरों भाय तें काफी मौज-मस्ती में छौ, खाय-पीयै के कोय कमी नै । कनियाँय कें महतो बाबू कन नौड़पनी के काम मिली गेलों छै, फेनू कमी कथी के रहतै । आबें तें सुनै छियै, विसेसरौं डाँटना-फटकारना छोड़ी देलें छै, महतो बाबू डाँटै-फटकारै सें मना करलें छै । आबें की जानौ, की बात छै.....'' महतो बाबू के बात याद ऐत्हैं जोगबरिया बेचैन होय उठलै ।

जोगबरिया कें मालूम छै कि महतो बाबू इलाका भरी में कत्तें दबंग आरो मातवर आदमी छेकै, हुनकों इच्छा के विरुद्ध तें पंचायतो नै खखसै छै । ओकरा याद पड़लै—यहें महतो बाबू के घरों सें दू सौ गज के दूरी पर सिकोरिया के बारात जाय रहलों छेलै, सिकोरिया डोली पर बैठलों छेलै । महतो बाबू के

सामना सें भला सिकोरिया जेन्होॅ आदमी डोली पर बैठी केॅ बीहा करै लेॅ जाय, ई तेॅ एकदम अनकूटठोॅ बात भेलै । महतो बाबू नें आपनोॅ दू आदमी केॅ भेजी केॅ डोली लौटवैलेॅ छेलै आरो आपने घरोॅ के सामना वाला खजूरी गाछी सें सिकोरिया केॅ बाँधी केॅ की रँ पिटवैलेॅ छेलै, वहेॅ खजूरी गाछी के खजूरिये साटोॅ सें । कहलेॅ छेलै—हमरोॅ आँखी के सामना सें डोली पर चढ़ी केॅ जाय के गौरव के परिणाम की होय छै, जानी लेलेॅ नी ।.....

जोगबरिया के सौंसे देह भौआय उठलै, जेना महतो बाबू के आदमी ओकरे देहोॅ पर वहेॅ खजूरी के साटोॅ बरसावेॅ लागलोॅ रहेॅ । देखतैं-देखतैं वैनें आपना केॅ सिकोरिया के जग्घा पर बाँधलोॅ पैलेॅ छेलै आरो सामन्हैं में महतो बाबू कुर्सी लगवाय केॅ बैठलोॅ होलोॅ गुर्राय रहलोॅ छेलै, ''की रे जोगबरिया, पुस्त-दर-पुस्त तोरोॅ बाप-दादा हमरोॅ घरोॅ के जोगबारी करतें ऐलौ आरो वहीं सें घोॅर भरी के पेट पोसैतें रहलौ..... से कत्तेॅ अन्नोॅ सें खून बढ़ी गेलौ कि हमरै सें रार करै पर उतरी ऐलोॅ छैं.....बिना हमरा पुछलैं, विसेसर के बेटा केॅ उठाय केॅ चली देलैं—सुनाफड़ में बनलोॅ मन्निर के देवता के सोनावाला आँख उखाड़ी लेलैं, आंय रे.....आँख की गाड़लेॅ होलेॅ छैं, आँख उठाय केॅ हिन्नें नी देख''

आरो जोगबरिया केॅ लागलोॅ छेलै कि वैं नें जबेॅ आँख उठैलकै तेॅ देखलकै, वहाँ पर महतुए बाबू नैं, ओकरोॅ भाय विसेसरा भी खाड़ोॅ छेलै आरो विसेसरे के बगलोॅ में ओकरी कनियैन । ओकरा लागलै—महतो बाबू के फेनू आवाज उठलोॅ छेलै, ''विसुनमा, जरा दैं तेॅ फेनू सें गिनी केॅ बीस साटोॅ एकरोॅ देहोॅ पर । बच्चा-चोरी के केस अभी एकरा मालूमे नै छै ।''

जोगबरिया केॅ जना करेन्ट लागी गेलोॅ रहेॅ । ऊ एकदम तिलमिलाय केॅ उछली पड़लोॅ छेलै । डरलोॅ-डरलोॅ आँखी सें चारो दिश हेरलेॅ छेलै । कांही कुछ न छेलै । ओकरोॅ आपनोॅ स्वभाव पर गुस्सो ऐलोॅ छेलै, मतरकि है सोची केॅ कि कहीं है सब होयवाला घटना के पहिलकोॅ भास ही तेॅ नै छेकै । ओकरी माय कहै छेलै, कोय बहुत बड़ोॅ घटना होय वाला रहेॅ तेॅ मनें पहिलेॅ ओकरोॅ भास कराय दै छै । ई बात याद ऐत्हैं ऊ फेनू एकदम सें सिहरी उठलै । जों विसेसरां महतो बाबू के बल्लोॅ पर एकरा मंगवाय लेलकै, तबेॅ की होतै । हमरोॅ दुनियां के की होतै । रमखेलिया आगू में खेलतेॅ-धूपतेॅ रहै छै तेॅ बेटे नै, खगड़िया वाली भी आँखी के सामना में घुरतें रहै छै । मरला सें की आदमी के यादो मरी जाय छै, फेनू हमरोॅ बिना तेॅ यहू मुरझाय केॅ रही जैतै । देखै नै छियै, घोॅर जाय के नामे सें केन्होॅ मनझमान बनी जाय छैं..... आय सें पाँच साल पहिले एकरी माय ऐली छेलै, एकरा लै लेॅ ही । कत्तेॅ मनैला-कहला के बादो ई यहेॅ कहतेॅ

रही गेलै, हम्में बाबू छोड़ी कें कहूँ नै जैबौं'' ऊ क्षण कें याद करतें जोगबरिया के आँख लोराय गेलै आरो बोली उठलै, ''आरो हम्मूं तोरा नै छोड़ें पारौं बेटा, तोहें केकरों लें लगोर रहें पारें, हमरों लें एकदम अपनसुत ।''

एक क्षण लेली लागलै कि ऊ एकदम मजगूत होय उठलों छै । काहीं सें कोय डोंर नै कि तखनिये एक शंका ओकरा मनझमान करी देलकै—मानी लै छियै विसेसरा के कहला पर महतो बाबू कुछ नहियो ध्यान दें, मतरकि रमखेलियैं माय जो विससेर के बातों में आवी कें महतो बाबू सें कहै, तबें की होतै ?.. कोय ठिकानों नै, आखिर कत्तों मरद मारें-चुरें, दुल्हा-कनियैन एक समय एक्के होय जाय छै ।'' जोगबरिया नें मनों के शंका कें बल देतें मने मन कहलें छेलै, ''कोन ठिकानों, विसेसरा के बातों में आवी कें रमखेलिया माय महतो बाबू सें कहलें रहें कि हमरा हमरों लड़का मंगवाय दें, हमरों सहारौ होतै आरो बचलों समय में मालिकों के कामो करी देतै । हुऍं-न-हुऍं, महतों बाबू ई सोचलें रहें कि रमखेलिया तें आबें खेत-बारी करै लायक होय्ये गेलों होतै, कैन्हें नी ओकरा बुलवाय लेलों जाय.....मतरकि ज्यादा तें यहें बात सच लागै छै कि है चाल विसेसरा के ही छेकै । ओकरा मालूम होय गेलों छै कि रमखेलिया एकदम चालू-पुरजा होय गेलों छै । गाँव में चाय-पान के दुकान खोली देभैं तें हमरों बुढ़ारी तक के व्यवस्था होय जैतै आरो ई बात वैं रमखेलियो माय लुग रखलें होतै, शैत यहू कहलें होतै कि वैं जाय कें महतो बाबू कें कहें—हुनी जेना भी हुऍं रमखेलिया कें गाँव बुलवाय दें । .....मतरकि है हुऐ नै पारें'' वैनें आपनों शंका कें एकदम निर्मूल करतें हऍं आपना कें समझैलें छेलै, ''जो हेने बात होतियै, तें रमखेलिया कें गोद में तखनी देतें ई कहतियै—आय सें तोहीं एकरों बाप । ई तोरहे छाया, तोरहे लाठी—वैनें विसेसरा के बात एकदम सें टाली देलें होतै—मारो-लात खाय कें नै मानलें होतै, आखिर वहूँ तें जानै छै कि कोनी विपदा के घड़ी में हम्में ई लगोरों कें बचैनें छियै.....'' ऊ ओकरों दिश सें निचिन्त होय कें फेनू विसेसरा बारे में सोचलें छेलै, ''जे हुऍं, जों विसेसरा यहाँ ऐलों छेलै तें आरो कुछ व्यवस्था वें जरूरे करलें होतै । हुऍं सकै छै कि दू-चार आदमी कें आरो हिन्नें-हुन्नें बैठलें रहें, आरो समझैलें रहें कि—सुनाफड़ देखत्हैं रमखेलिया कें उठाय लेना छै । आरो जों मानी लें, विसेसरा रमखेलिया कें गायब करवाय में सफल होय जाय छै तें हम्में की ओकरा पावौं पारवै ? नै कभियो नै, रोजे तें बच्चा गायब करै के बात सुनै छियै, आरो फेनू महीनो-महीनो सुनतें रहै छियै कि हो बच्चा नै मिललै—आखिर मिललै तें फलां जंगल में टुकड़ा-टुकड़ा करलों.....''

जोगबरिया एकदम घामे॑ घमजोर होय उठलै । ओकरा लागलै कि ओकरो॑ गोड़ थरथरावे॑ लागलो॑ छै । जेना आपना पर ओकरा कोय अधिकारे नै रही गेलो॑ रहे॑ । नै जाने॑ कैन्हें ओकरा लागे॑ लगलो॑ छेलै कि विसेसरा के आदमी सिनी हिन्नें-हुन्नें काँही छिपलो॑ बैठलो॑ छै । जबे॑ कि वैं जानै छेलै—ई सब ओकरो॑ भरम छेकै, यहाँ ते॑ रातो भर कचहरी जागले रहै छै, दुए बजें चुल्हा में आग पड़ी जाय छै आरो चार बजे भोर सें हॉटलो॑ में खाना बनाना शुरू होय जाय छै, एक होटल के बात थोड़े छेकै, दस-दस हॉटल में सवो सौ नौकर-चाकर जमले रहै छै । एक हाँक देतै, ते॑ पूरा कचहरी गनगनाय उठतै । तहियो नै जानौ, आय जोगबरिया के॑ ई सब बातो॑ पर कोय विश्वास नै होय रहलो॑ छेलै । ओकरा लागी रहलो॑ छेलै, सब कोय ऊँघी रहलो॑ छै । भय में ओकरो॑ आँख वकील तरूण बाबू आरो मुंशी अशोकी बाबू के बैठकी दिश गेलै, जहाँ पर हुनका दोनों के उठत्हैं कोय-न-कोय बैठले रहै छेलै, आय वहू पर कोय नै छेलै । जोगबरिया के हृदय अनहोनी होय के आशंका सें भौआय उठलै, ''की सचमुचे में ते॑ कोय अनहोनी नै होय वाला छै !'' मतरकि वैं जानै छै, पिटपिटिया के बात अलग छै, एकरा सें अलग ऊ पांचो आदमी के॑ अकेल्ले देखे॑ सकै छै, यहूँ उमिरो॑ में एतना ताकत ते॑ छेवे करै । वैनें सरंग दिश देखलकै—आभियो फरचो॑ होय के दूर-दूर तक ठिकानो॑ नै छेलै, जबकि बो॑र गाछी पर बैठली चिड़िया सिनी एक दाफी हाँक पारी चुकलो॑ छेलै ।

पहिलो॑ दाफी ओकरा लागलो॑ छेलै कि ऊ आय तक मुर्दघट्टी के॑ जोगी रहलो॑ छै, जहाँ लोग आवै छै, आपनो॑ संबंध-विच्छेद करै ले॑ । आरो बड़ी थकचुरुवो॑ होय के॑ सोचले॑ छेलै ''फेनू हैनो॑ जग्घो॑ के॑ जोगिये के॑ की होतै । तभियो रात ते॑ काटनै छै ।''

जोगबरिया नें आपनो॑ तीनो ठो बंची के॑ रमखेलिया के बेंची सें सटाय देलकै आरो वही पर गोड़ बिथारी के॑ बैठी गेलै । फेनू सिरहाना दिश एत्ते॑ खिसकी ऐलै कि ओकरो॑ आरो रमखेलिया के तरबा एक सीधी में आवी जाय । वैनें आपनो॑ गल्ला सें लिपटलो॑ गमछी के॑ उतारलकै आरो आहिस्ता-आहिस्ता ओकरा आपनो॑ साथें रमखेलिया के एड़िया के नीचें सें पार करी देलकै । ओकरो॑ दोनों छोर के॑ एक करतें आहिस्ता-आहिस्ता गाँठ लगैलकै । एक गाँठ नै, तीन-तीन गाँठ—कस्सी के॑, हौले-हौले कि रमखेलिया के नीन नै टुटे॑ । जोगबरिया एक दाफी फेनू ओकरा देखलकै, ऊ आभियो निभोर सुती रहलो॑ छेलै । दोनों केहुनिया के सहारा लेतें वहू वाहीं पर चित्त लेटी गेलै—ई तीनडेरिया पर आँख गड़ैनें ।

बदरकटुवोॅ रौद

''कुल्हड़िया चुनाव में खाड़ोॅ होय केॅ रहतै ।......कुल्हड़िया'' आपनोॅ नाम केॅ याद करत्हैं ओकरोॅ मोॅन एकदम कस्सोॅ होय उठलै, ''है नाम जरूरे कैथ टोली या बभन टोली आकि रजपुतानी टोलोॅ के लोगें राखलेॅ होतै । गुअर टोली के चौधरी परिवारो के भी करतूत हुएँ पारेॅ । यहू भला कोय नाम होलै—कुल्हड़िया ....नै हमरोॅ बोली कुल्हाड़ी रँ, नै करतूत, तभौं हम्में कुल्हड़िया आरो जेकरा आँख न कान, ओकरोॅ दिपुआ नाम । शिवचन्नर के बेटा के सूरत सब्भैं देखवे करै छै, मतरकि नाम की छेकै—सुदर्शन ।'' ई सोचियै केॅ, आभी-आभी जे ऊ आपनोॅ नामोॅ सें कलपित्तोॅ हेनोॅ होय गेलोॅ छेलै, हँसी पड़लै, ''बड़का टोलोॅ के यहेॅ रँ रिवाजे रहलोॅ छै'' वैनें मने-मन सोचलेॅ छेलै आरो सामनें में राखलोॅ मूढ़ी-कचरी के बीचोॅ में दाँया हाथ के बिचलका ओंगरी ढुकाय केॅ घुमावेॅ लागलोॅ छेलै । ''एतना टा मूढ़ी-कचरी सें भला की होय वाला छौ'' अजनसिया नें कहलेॅ छेलै, ''जानी ले कुल्हड़िया, माल सें चार गुना ज्यादा चखना रहै छै, तभिये खाय-पीयै में मजा आवै छै, ठहर हम्में जंगली दा कन सें पाँच टका के आरो कचरी लै आवै छियौ ।'' ई कही केॅ अजनसिया जे गेलोॅ छेलै तेॅ आभी तांय नै लौटलोॅ छेलै, दस मिनिटोॅ सें ज्यादा होय गेलोॅ होतै ।

''लागै छै, वें बनलोॅ-बनैलोॅ के जग्घा पर ताजा छकवावेॅ लागलोॅ होतै, तबेॅ तेॅ आध घन्टे के बरोबर देर समझोॅ । भीड़-भाड़ में ताजा के चक्कर । अजनसिया केॅ समय-कुसमय के कोय ज्ञान नै छै.....ज्ञान रहतियै तेॅ साधू महतो के सामने में ई कहतियै, 'कुल्हड़िया, अबकी तोरा इल्कशन में खाड़ोॅ होन्है छौ, छोॅ या खोॅ । फैसला होय केॅ रहना छै' अजनसिया के बातोॅ पर महतो की रँ कनखलोॅ छेलै, आरो एकरोॅ बाद की हुनी चुप्पे-चाप बैठलोॅ होतै, सब औजार

भिड़ाय देलें होतै । अखाड़ा के पुरानों पहलवान छेकै, कोंन दाँव-पेंच के इलिम नै छै,.....बाप रे बाप, ओत्ते बड़ों लाग-भाग वाला मिसिर जी जें दिल्ली सें ओत्तें बड़ों मंत्री कें उतारी देलकै, ई मुर्दघट्टी रँ गाँव में, ओकरा तें मात दै में देरे नै लागतै महतो जी कें; तें भला हमरा हेनों इग्गी-दुग्गी कें की बुझतै, मतरकि जे हुएँ, अजनसिया के बातों पर कनखलों छेलै महतो जी जरूरे आरो कनखै के कारणो छै, होन्है कें नै.....महतो बाबू के जत्तें चलती रहौ कैथपट्टी आरो बभन टोली में, कुम्हार टोली, रजक टोली आरो बेलदारी टोला में हुनकों एक नै चलै वाला छै आरो जो ई तीन पट्टी कें मिलाय देलों जाय, तें की मजाल छै कि चुनाव के फैसला महतो जी के पच्छों में होय जैतै'' ई सोचिये कें कुल्हड़िया के आँखी में एक चमक आवी गेलै । ऊ हठाते एत्तें गदगद होय गेलै कि अजनसिया के बिना ख्याल करल्हैं एक मुट्ठी चखना आपनों गलफरों फाड़तै वैमें राखी लेलकै । मुँह में चखना राखतैं वैनें जाँघी के बगलों में राखलों महुआ के बोतल दिश देखलेलकै, मतरकि आँख फेरी लेलकै । सोचलकै, एक बूँद भी कम देखतै, तें कचकचों करतै, यहू नै कि यै में पीवी कें पानी मिलाय देलों जाय, मुँह में राखत्हैं ओकरा सब पता लागी जाय छै, दस टाका बेसी दै कें आनलें छै, दोनों बोतल.....फेनू, आबें ओकरा आवै में देरिये कतना छै, ऐत्है होतैं'' आरो ई सोचत्हैं, मुँहों के चखना कें जेना-तेना कुचली-काचली निगली लेलकै । सवादों के कोय सवाले नै छेलै । साथे-साथ वैनें मूरी-कचरी कें वहें रँ समेटी देलकै, जेना अजनसिया समेटी गेलों छेलै ।

वैनें आँख उठाय कें एकपैरिया दिश देखलकै । अजनसिया के काँही छायाहौ तांय नै दिखैलै । जबड़ा आरो मसूड़ा में फँसलों कचरी के कण कें वैनें जिह्वा सें लारी-लारी कें समेटनें छेलै आरो फेनू ओकरा कंठों के नीचें उतारी देलें छेलै । मुँह कें फुर्सत मिलत्हे वैनें आपनों ठोरों कें विचित्रे रूप देतें सोचलें छेलै, ''चार कचरी छकवाय में सौंसे दिन लगाय छै, तें एकरा सें चुनावों में टोला सिनी के लोग की छकैतै । ई चोट्टा आरो कुछ नै करतै, दस-पन्द्रह जुत्ता बीच रास्ता में सब के सामना दिलवाय देतों आरो कुछ नै । बड़का-बड़का के तें यै दंगल में थाह-पता ढेर लागै छै । मंचे पर भाषण देतें बम सें उड़ी जाय छै, तें हमरा के पूछै छै । तैहाकरों चुनाव छेकै, जबें मुँहों सें कोय उरेफ नै निकालै छेलै, आरो जो उरेफ नै निकालै छेलै, तें बातो छेलै । आयकों नेता सिनी हेनों बाढ़-सुखाड़ के राशि निगलै वाला नै छेलै, नै घरदुक्की करैवाला—अखबारों में साफ फोटू छपै छै, लाज छै ! तभियो वहें सिनी जीतै छै.....जीतै वास्तें चाहियों बानर सेना, इनरासन के परी और पैसा, आरो हमरों पास की छै, एक अजनसिया आरो

साँझकों वक्ती के एक बोतल दारू । एकरों इन्तजाम आयकल अजनसिये करै छै, नै तें वहू नदारत । गिनलों-गुथलों टाका चुनाव वक्ती लें सेती कें राखी देलें छियै । आबें जे एक बोतल महुआ के इन्तजाम नै करें पारै छै, ऊ चुनाव वास्तें एत्तें-एत्तें टाका कहाँ सें लानतै । टाकाहौ की एक-दू लाख, कम-सें-कम तीन-चार लाख । एत्है-एत्है टाका होतियै तें बड़का पार्टी सें टिकिट नै लै लेतिये—है निरदलीय । जे भी दस-पन्द्रह हजार जमा करलें छेलियै, दिलो दा वाला अधकठिया खरीदै लें, वहू ई अजनसिया खरच-वरच करवाय देतों, आरो कुछ नै, दौड़ै-धूपै आरो नाम दाखिल करै में तें आभी तांय पाँच हजार उड़ी चुकलों छै । धन की छेकै, अरे जरा सें मुट्ठी सें खोलों तें ओकरा बीस जोड़ गोड़ निकली आवै छै, फेनू के ओकरा पकड़ें पावें ।''

कुल्हड़िया एक क्षण लेली मनझमान होय उठलै, मजकि जल्दिये आपना पर काबू पैतें खुद कें समझैनें छेलै, ''कोयरी धूपों सें डरलै आरो गुआरों पानी सें, तें होय गेलै तरकारी उपजैलों आरो भैंस पाललों । चुनाव छेकै, दस पन्द्रह हजार गेलों तें समझों कि घाम गिरी कें रही गेलै, यहाँ तें बीस-पच्चीस लाख टाका उड़ी जाय, ई कहों कि देहों के सबटा खूने गिरी जाय छै, तभियो लड़वैय्या ठहरी नै जाय छै, तबें हमरै की दुख । आरो जों लगतें-पिलतें हम्मू निकली जाय छियै, तबें तें गिनतें नी रहों सीबियाय मकान आरो मारतें नी रहों छापा । टेर लागल्है नुनुआ कें तबें नी । टेरो लागतै तें केसे नी करतै । केस खुलतें-खुलतें आरो सजा होतें-होतें की हम्में जिन्दे रहवै । सरकारी केस तें नेता सिनी वास्तें खेलोड़ । केशो बाबू के की होलै, भला ओत्तें बड़ों पार्टी के ओत्तें बड़ों मंत्री । कोंन सीबियाय के दम छेलै घरों में राखलों सरकारी गोदाम के माल कें निकाली लेतियै । सामान कहाँ राखलों छेलै आरो पुलिस छापा मारी रहलों कहाँ ! मंत्रियो खुश, विरोधियो खुश, जनताओ खुश आरो पुलिसो खुश—ई छेकै राजनीति के खेला । आरो जों ई पाशा हमरों पच्छों में आवी जाय छै तें मत पूछ.....'' सोचतें-सोचतें ओकरा लागलै कि ऊ आबें कमर आरो माथा पर हाथ रखी कें नाचें लागतै । ऊ भीतर सें एकदम गनगनाय उठलै आरो वहें खुशी में वैनें हाथ मूरी-कचरी दिश बढ़ैलकै, मतरकि ओकरा छूऐ सें पहिलें हटाय लेलकै; जेना ऊ धोखाहै में बिच्छू कें पकड़ै लें जाय रहलों रहै आरो ऊ संभली गेलों रहें । वैनें समझी लेलें छेलै कि चखना सें चुटकियो भर उठाय के मतलब छै, अजनसिया के गोस्सा बढ़ैबों ।

''कचरी साथें फुलौड़ी छकवावें लागलों छेलियै, यही में देर लागी गेलै । की कहियौ मरदे, पर्व के मेला-ठेला रहें कि इलेक्शन-मिलेक्शन के मेला-ठेला, सब

सें ज्यादा भीड़ जंगली के दुकानी पर'' फुलौड़ी कें चूर करी मूरी सें मिलैतें अजनसिया कहलकै, ''झूठ नै कहै छियौ, चुनाव में जों जंगली खाड़ों भै जाव, तें सब कें मात दै दै । चुनाव चिन्ह होतै कचरी आरो घोषणा पत्र में लिखलों जैतै—बड़का होटल बंद करी कें वै जग्घा में मूड़ी-घुंघनी के दोकान खुलवैलों जैतै । हफ्ता में तीन रोज इच्छुक कें चखना मुफ्त दिलवैलों जैतै ।'' कहतें-कहतें अजनसिया नें जोर के ठहाका लगैनें छेलै आरो हाँसतें-हाँसतें कहनें छेलै ''आबें तें हेने उलूल-जुलूल के घोषणा करलों जाय छै, चुनाव जीतै लें । देश-समाज जाव चुल्हा-भांड़ी में.....अच्छा आपनों घोषणा-पत्र में की छपतै, कुल्हाड़ी'' हठाते अजनसिया गंभीर होय उठलों छेलै ।

''अरे हों, ई बातों पर हमरा सिनी तें विचारे नै करलें छियै ।'' कुल्हड़िया नें चखना के एक बड़ों फक्का मुँहों में डालतें कहलकै । ई देखी कें अजनसियौं ओकरों सें एक बड़ों फक्का मुँहों में डालतें पलास्टिक वाला गिलासों में दारू कें ढालें लागलै ।

महुआ केरों गंध बोतल सें निकलना छेलै कि दोनों के चेहरा फागुन में परास के फूल नाँखी खिली गेलै । अजनसियां पौआ गिलासों में लगभग टापे-टुप दारू भरी देलें छेलै । कुल्हाड़ियां उठाय कें ओकरा मुँहों सें लगैवे करतियै कि अजनसिया रोकलकै, ''ठहर, पहिलें गिलास तें टकराव । अरे, मों र-मिनिस्टर बनवैं, कल मजलिस में पीवैं, आरो जों हेनें आदत रहतौ तें आन शहरी नेता की कहतौ ।'' गिलास कें ओकरा गिलास सें छुलैतें अजनसियां कहलें छेलै आरो एक घूंट में पूरे गिलास कें कंठों के नीचें उतारी देलें छेलै; जेन्हों कि कुल्हड़ियां ।

दोनों एक क्षण लेली आँख मुनी कें मौन होय गेलों छेलै, जेना कि कंठों सें नीचें उतरतें दारू के धार कें पहचानतें रहें । आरो आँख मुनले कुल्हड़िया नें कहलकै, ''हों; तें तोहें घोषणा के बात करी रहलों छेलैं, से तें तोंही सब जान । हम्में ठहरलियौ टिप्पा मार, ...ई तें समझें कि जनतंत्र-गणतंत्र में हमरों सिनी हेनों आदमी राज करें पारें, नै तें, गदहो देखी कें नै रेकै वाला छेलै । भगवान खूब सुख दें स्वर्ग में गान्ही बाबा आरो लेहरू जी कें, जे हेनों शासन लागू करी कें गेलै । लेकिन बात यहाँ लेहरू जी के नै छै, बात यहाँ छै हमरों ।''

''मतरकि सबसें पहिलें बात उठै छै भोटर के आरो भोटर होय छै जात के, धरम के । आबें सबसें पहिलें ई सोचना छै—दूसरा सिनी कें कोन-कोन जातों के सहारा मिलें पारें । बाभन, राजपूत आरो वैश के सहयोग तें मिलै सें रहलौ, ऊ तीनों तें जैथौ भजप्पा आरो कांग्रेस में । इनलों-गिनलों कें छोड़ी दैं तें

कोयरी-कुरमी तीर में । पासवान, लोजपा में आरो मुसलमान लोजपा-कांग्रेस छोड़ी कें कन्हौं जावें नै पारें । यादव तें लालू यादव के छेकै । लालटेन छोड़ी कें कन्हौं जावें नै पारें । बचलै कैथ, कैथों कें पकड़िये कें की होतै । ओकरों भोटे की छै, जन्नें लुढ़कौ, कोय अन्तर नै पड़ै छै, हेना में तोरों ढिबरी केना जलतौ, पहिलें यै पर सोचना छै । फेनू तोरों जातों के वोटे कतना टा छौ कि नारा देलों जाय—बेटी आरो वोट जात कें ।'' ई सब बात अजनसिया आँख कें मुनले-मुनले कोय भविष्य जानै में लीन योगी-मुनी हेनों कहलें छेलै ।

''तें की तोहें है सब बातों पर पहिलें सें नै सोचलें छेलैं, जे आय आठ-दस हजार खरच करवाय कें सोचै लें कही रहलों छैं ।'' अजनसिया के बातों सें कुल्हड़िया के आँख खुली गेलों छेलै, मजकि ओकरों बातों में बेचैनी के भास करियो कें अजनसिया नें बिना आँख खोलले कहलकै, ''फिकिर नॉट कुल्हड़ी, फिकिर नॉट । इलाका में एतने टा जात थोड़े छै, अरे छत्तीस करोड़ देवता छै तें समाज में छियत्तर करोड़ जात । जेना पियाज में परत-पर-परत रहै छै नी कुल्हड़ी, होन्है कें यहाँ जात में जात छै—राजपूत छै तें वै में छै—जादन, भदौरिया, चौहान, बनौत, कछवाहा, केनवार, पछियारा.... कायस्थ छै तें कायस्थ में श्रीवास्तव, अम्बष्ठ, करन, राढ़ी.... बाभन छै तें बाभन में कनौनिया, गौड़, मैथिल, राढ़िये....., फेनू देखैं, राढ़ी कैथ छै तें वहू में घोष, सिन्हा, मजूमदार, दास, दत्ता जत्तें उपाधि, ओत्ते कैथ—सब पियाज के छिलका नाँखी, जखनी चाहें उतारी कें राखें । तोहें चीचों सिनी कें देखलें छै नी, जखनी धारा पाती चलै छै तें एक-दूसरा के पुछड़ी मुँहों में लेलें, पैर-गोड़ पटकी दैं तें सब तिल मिल ।'' ई कही अजनसिया खूब जोरों सें हाँसलों छेलै आरो कहलें छेलै, ''की समझलैं कुल्हाड़ी ! खाली टाका चाहियों । इलेक्शन की छेकै, टाका के खेल । तोहें की करलें छैं, आरो की करवैं । ई देखै छै कोय । फुल प्रचार कर आरो टाका बहाव, फेनू देखैं खेल । आगिने सें आगिन लागै छै कुल्हाड़ी । एक तें पन्द्रह हजार टाका के बललों पर चुनाव लड़ै लें चललों छैं, वहू में निर्दलीय आरो चिंता करै छैं, लाख करोड़ के ....चल पहिलें एक-एक गिलास आरो गल्ला के नीचें उतार, ई सब बातों में दिमाग ज्यादा खरच होय छै । ज्यादा सोचभैं तें दोनों बोतल गंगाजल बनी जैत्हौ ।''

अबकी कुल्हड़ियाँ हीं गिलासों में दारू ढारलें छेलै आरो आपना में गोठों गिलास सें ज्यादा नै ढारलें छेलै । वैं जानै छै, अजनसिया डेढ़ों बोतल पचाय लेतै तें ऊक-बिक नै करतै, ओकरों तें अद्धा में ही मों न औल-बौल हुएँ लागै छै । सें वैनें आपना सें बेसिये अजनसिया के गिलासों में ढारलें छेलै आरो

आपनोॅ गिलास लै केॅ ओकरोॅ दिश बढ़ैलेॅ छेलै । यै पर अजनसिया कहलेॅ छेलै, ''नै, जाम एक्के बार टकरैलोॅ जाय छै ।''

ओकरोॅ बातोॅ सें कुल्हड़िया केॅ झेंप होलोॅ रहेॅ आकि आरो कुछ, से बात नै छेलै । आबेॅ ओकरोॅ मोॅन उनमनी होय चललोॅ छेलै; चखना-दारू पर कम, जमा पूँजी आरो खरचा पर ज्यादा । ओकरा समझै में नै आवी रहलोॅ छेलै कि घंटा भरी पहिलें यही अजनसिया की-की रँ ढाढस दै वाला बात करी रहलोॅ छेलै, आरो इखनी एक गिलास ढारत्हैं बदललोॅ-बदललोॅ बात करेॅ लागलोॅ छै।'' तबेॅ घंटा भरी के बाद आरो निसाँव चढ़ला पर यें यहू कहेॅ पारेॅ है चुनावी मेला-ठेला में तोरोॅ दुकान की चलै वाला छौ । अरे जहाँ आबेॅ बिजली सें चलैवाला तर-ऊपरी चलै छै, जैमें बम्बै के हीरोइन पतुरिया सें ज्यादा भीड़ जुटावै छै, वैमें तोहें चाहै छैं कि कागज के घोड़ा नचाय केॅ भीड़ केॅ अपना दिश खीची लौं; है भला होय वाला छै । जुग-जमाना बदली गेलै, एक-एक करोड़ टाका लैकेॅ जितलोॅ दल के किश्मत पलटी दै छै....तोहें कथी लेॅ पड़लोॅ छैं कुल्हाड़ी है चुनावोॅ-पुनावोॅ के चक्कर में । तोरोॅ बचलोॅ दस-पन्द्रह हजार टाका तेॅ पच्चीस आदमी केॅ आपनोॅ पच्छोॅ में ही लानै पर पार होय जैतौ । है कि पचपन साठ वाला चुनाव छेकै कुल्हाड़ी ।'' कुल्हाड़ी नें ढेर सिनी बात एक्के साथ सोची लेलेॅ छेलै ।

ओकरोॅ मनोॅ में कुछ शंका उठलोॅ छेलै, जेकरोॅ निदान लेली ऊ अजनसिया केॅ घूरलकै, जे आबेॅ गल्ला सें नीचें दुसरोॅ गिलास उतारी केॅ एकदम खामोश होय गेलोॅ छेलै; आपनोॅ दोनों हाथ केॅ पीछू करी आरो पिछुए आपनोॅ मूड़ी केॅ जरा सें झुकैलेॅ; जेना, मुनलोॅ आँखी सें सरंग देखतें रहेॅ ।

''इखनी एकरा टोकना ठीक नै होतै । टोकला सें भारी बवाल । कही चुकलोॅ छै—निसाँव वक्ती दिमागी बात नै । आरो यहीं कहलेॅ छेलै कि चल एकान्ती में बैठी केॅ सब योजना तय करी लेलोॅ जैतै । छोटकी केॅ कही देलेॅ छियै—चुपचाप बोतल गाछी जड़ी में राखी दै लेॅ—वाँही पाँच रोजोॅ के पलान सोची लेलोॅ जेतै ....आरो इखनी सरंग हियाय रहलोॅ छै ।.....कुछ नै होतै, परसुवे नाँखी सबटा पीवी लेतै आरो कहतै, ई सिनी बातोॅ पर दुसरोॅ दिन चर्चा । इखनी मूड नै खराब कर.....कहीं हेनोॅ तेॅ नै, यैं....कोय ठिकानोॅ नै, आय भले ई हमरोॅ साथ छै, मतरकि पिछुलका बीस सालोॅ में ई कोॅन-कोॅन पार्टी के साथें नै रहलोॅ छै । कोन पार्टी केॅ यैं देवता के पार्टी नै बताय चुकलोॅ छै, कोॅन कोॅन नेता केॅ यैं मसीहा नै कही चुकलोॅ छै, जेकरा हम्में जानै छियै कि हत्या करवाय में महीनो जेल काटी चुकलोॅ छै.....आय वही अजनसिया हमरो लेॅ प्रचार करतै, भोट दिलैतै,

लोगो॑ के॑ बतैतै—जबे॑-जबे॑ धर्म के हानी होय छै, तबे॑-तबे॑ कुल्हाड़ी हेनो॑ देवता नेता के अवतार होय छै—अधर्म आरो अन्याय सें जनता के॑ मुक्ति दै ले॑.....।'' आरो आखरी बात सोचत्हैं ओकरो॑ चेहरा फेनू सें खिले॑ लागलै । ''को॑न ठिकानो॑, अजनसिया के बोली के जादू काम करिये जाय ।'' ई सोचत्हैं ओकरो॑ मो॑न गुदगुदाय उठलो॑ छेलै आरो खिललो॑ चेहरा सें वैनें दोनों हाथो॑ से एक-एक मुट्ठी चखना उठनें छेलै आरो दाँया हाथ के लगभग सबटा चखना मुँहो॑ में राखतें चबाबे॑ लागलो॑ छेलै । फेनू बाँयो हाथ के मुँहो॑ में लैके॑ । बड़ी तेजी सें ओकरो॑ जबड़ा चले॑ लागलो॑ छेलै । लागी रहलो॑ छेलै; जेना ऊ बड़ी तेजी सें बहुत कुछ बात सोची रहलो॑ रहे॑ । देखत्हैं-देखत्हैं वैनें गिलास वाला दारू के॑ मुँह सें नै लगाय के॑ पहिलें बोतल वालाहै गट-गट करी पीवी गेलो॑ छेलै आरो तबे॑ गिलासो वाला के॑ नै छोड़ले॑ छेलै ।

कुल्हड़िया के माथो॑ हन-हन करे॑ लागलो॑ छेलै । आरो देह-हाथ एकदम इस्थिर । आँख दोनों एकदम बंद आरो बंद आँखी में सपना घूमे॑ लागलो॑ छेलै—ठेला पर एक ठो काठो॑ के कुर्सी छै, जेकरा पर कुल्हड़िया हाथ जोड़ले॑ बैठलो॑ होलो॑ छै, ...गल्ला में कन्डेली फूलो॑ के आठ-दस माला छै । ओकरो॑ आगू सें फटलो॑ कमीज के॑ कुछ हेनो॑ ढंग सें सीलो॑ गेलो॑ छै कि सबसें पहिलें लोगो॑ के नजर वहीं ठां पड़े॑.....कुल्हड़िया के पीछू पाँच आदमी खड़ा छै, जे जोर-जोर सें कठपुतली नाँखी हवा में हाथ भांजतें नारा दै रहलो॑ छै—गरीबो॑ के नेता केन्हो॑ होय, कुल्हड़ी भैया हेन्हो॑ होय.....ठेला के पीछू पचास लोग साथ दै रहलो॑ छै आरो सबसें आगू छै अजनसिया, जेना ऊ रेगिस्तान में कोय गाड़ी के॑ खींचतें ऊँट रहे॑ ।

पर क्षण्हैं में कुल्हड़िया के॑ फेनू लागलै कि ऊ धीरे॑-धीरे॑ कोय देवता के मूर्त्ति बनी गेलो॑ छै, आरो ओकरो॑ पीछू-आगू के सबलोग कीर्त्तन-भजन में लीन छै, सब जोर-जोर सें 'जय-जय' के नारा लगाय रहलो॑ छै । पंडी जी हाथ उठाय-उठाय के॑ कही रहलो॑ छै—मूर्त्ति विसर्जन के समय होय रहलो॑ छै, जल्दी करो॑ । कुल्हड़ियाँ देखलकै, ओकरो॑ ठेला गाँव के बड़की पोखरिया दिश बढ़ी रहलो॑ छै ।

वैनें आपनो॑ माथो॑ के॑ एक झटका देले॑ छेलै, आरो फेनू वहीं सें सोचना शुरू करले॑ छेलै—अजनसिया आगू-आगू बढ़ी के॑ भीड़ के॑ समझाय रहलो॑ छै—सौसें इलाकां, ई भितरिया मो॑न बनाय लेले॑ छै कि अबकी मुहर कुल्हाड़ी नेता के ढिबरी पर । बस आबे॑ तोरा सिनी के आर्शीवाद चाहियो॑ ।

कुल्हड़िया के अपने-आप दोनों हाथ उठी गेलो॑ छेलै, मजकि निसाँव एत्है जमी गेलो॑ छै कि ऊ वाँही चित्त होय के॑ लेटी गेलै ।

वापसी

कुन्दन नें लैम्प के रौशनी एकदम हल्का करै के खयाली सें ही बत्ती केॅ नीचें करी देलेॅ छेलै, एतन्है नीचें कि ऊ रौशनी में लैम्प के खाली चिमनिये झलकी रहलोॅ छेलै । जाड़ा के दिन । जल्दिये साँझ उतरी ऐलोॅ छेलै । माघ-पूसोॅ के दिने की....होना केॅ आभी बजते की होतै ? वैनें झुकी केॅ वहेॅ मटियैन्होॅ रौशनी में आपनोॅ कलाई के घड़ी देखलकै । छोॅ बजी रहलोॅ छेलै ।

.....''की अभियो सृष्टि आवेॅ पारै छेॅ ?'' ओकरोॅ मनोॅ में शंका उठलोॅ छेलै, मतर, तुरन्ते शंका केॅ समेटियो लेलेॅ छेलै, ''कैन्हें नी, अभी समइये की होलोॅ छै । शहर में तेॅ होन्है केॅ आदमी रात भरी ऐन्हैं-जैन्हैं रहै छै, जाड़ा के दिन होलै तेॅ की, आठ-नौ बजेॅ तांय तेॅ आवा-जाही लागलोॅ रहतै.... कखनियो आवेॅ सकै छै.....नै आवै के कोय सवाले नै छै.....

पता नै, ओकरोॅ मनोॅ में की बात उठलोॅ छेलै कि वैनें फेनू सें रौशनी तेज करी देलेॅ छेलै आरो कोठरी के चारो दिश नजर केॅ दौड़ैलेॅ छेलै । एक विद्वान के कोठरी जेना रहै छै, होने छेलै । वैं आपनोॅ बिछौना पर दू तीन किताबोॅ के साथें डायरी केॅ कुछ हेनोॅ ढंग सें राखी देलेॅ छेलै, जेकरा देखत्हैं कोय यही समझै कि ऊ अभी पढ़िये रहलोॅ छेलै जे ऊ आवी गेलै.....सृष्टि के देलोॅ उपन्यास 'गुनाहों का देवता' टेबुल पर सामनाहै कुछ हेनोॅ ढंग सें राखलेॅ छेलै कि ऐत्हैं कोठरी के कोय चीजोॅ पर सबसें पहिलें नजर पड़ेॅ तेॅ वहेॅ किताबोॅ पर । है कहना मुश्किल छेलै कि किताबोॅ पर लाल रं के कोन खिललोॅ फूल धरलोॅ होलोॅ छेलै, जेकरा कुन्दन नें एक दाफी उठैनें छेलै आरो फेनू होनै केॅ किताबोॅ पर

आहिस्ता सें राखी देलें छेलै ।

एक क्षण लेली वांही ऊ खाड़ों रहलै, फेनू घुमी कें कोठरी के भिड़कलों केबाड़ आपना दिश आहिस्ता सें खींचने छेलै । सूरज वाला प्रकाश एकदम खतम होय गेलों छेलै आरो वै जग्घा पर सड़क के किनारी-किनारी खड़ा बिजली खंभा पर ट्यूब आरो बल्ब जगमगावें लागलों छेलै, जेकरों रोशनी में कारों शीशा नाँखी सड़क चमकी रहलों छेलै । मोटर, स्कूटर बोहों के रेत रँ सड़क पर बही रहलों छेलै आरो सड़के के दोनों दिश आदमी के चीटी रं कतार । कुन्दन नें वहें रोशनी में फेनू आपनों घड़ी के सूई देखलें छेलै—साढ़े छों ।

ओकरों चेहरा पर शांति के एक भाव झलकी उठलै आरो केबड़ा कें फेनू वैन्हें भिड़कैतें हुएँ टेबुल के एक दिश पड़लों कुर्सी पर आवी कें बैठी रहलै ''कहीं हेनों नै हुएँ कि सृष्टि बिना दस्तक देले अन्दर आवी जाय आरो ओकरों सब परेशानी एक्के बारगी उजागर हो जाय'' यही सोची वैनें बैठलें-बैठलें फेनू रास कें नीचें करी देलकै ।

वहें मटियैलों रौशनी में आय हठाते ओकरा ऊ दिन याद आवी गेलै, जेकरा ई बीचों में वैं कभियो यादो नै करलकै, याद करै के जरूरते नै पड़लों छेलै । पाँच-छों महीना, पाँच-छों दिन नाँखी गुजरी गेलों छेलै । हों, पाँच महीना सें बेसी नै होलों होतै, जबें सें कुन्दन नें सृष्टि कें पढ़ाना शुरू करलें छेलै । सृष्टि के बाबूजी धरमचंद शहर के नामी वकील । जेहनों शान-शौकत, होन्है कें शालीनतौ में बढ़लों-चढ़लों । कोंन घरों में, एक दिनों में एक दाफी, धरमचंद के चर्चा नै होय जाय । कोंन हेनों घरों के माय-बाबू नै होतै, जे आपनों बच्चा कें सृष्टि हेनों सुशील आरो पढ़लों-लिखलों होय के उपदेश मौका मिलत्हैं नै देतें होतै । ई कम बड़ों बात नै छेलै कि हेनों घरों में कुन्दन कें पढ़ावै के काम मिली गेलों छेलै, वहू में सृष्टि कें, जेकरों बारे में कॉलेज सें लै कें मुहल्ला तक में हल्ला छेलै कि एकरों सम्मुख तें प्रोफेसरो के घिग्घी बंधलों रहै छै—नै जानें, कखनी की पूछी दें । साईन्स के विद्यार्थी छेली सृष्टि, बस जरा-सा कहीं कुछ समझै में ओकरा दिक्कत हुऐ तें हिन्दी के नया किसिम के कविता । ई सब बात वैनें विमलेन्दु सें सुनलें छेलै । नै तें एत्तें बड़ों शहर में की छेकै—केकरा मालूम। फुर्सत कहाँ छै, केकरौ । विमलेन्दु, जे ओकरों पितियैतों भाय, जे खुद्दे सहायक होय के साथे सृष्टि कें पढ़य्यो के काम करै छेलै, नें ही बतैलें छेलै—सृष्टि के पढ़ाय लेली एकटा टीचर ठिक्को करलों गेलों छेलै । कोय शक नै—खूब विद्वान छेलै । खाली हिन्दिये के नै, जेहनों लच्छेदार हिन्दी, होन्है, आचारशास्त्र आरो राजनीति के । धरमचंद तें गदगद छेलै ऊ टीचर पावी कें,

मतरकि सृष्टिये नाखुश । आबेॅ, जबेॅ कि सृष्टिये नाखुश छेलै तेॅ ऊ टीचर ऊ घरोॅ में टिकै पारतियै कत्तेॅ ? बात ई छेकै कि सृष्टि छै जरा खुल्ला मिजाज के लड़की, कोय बातोॅ के चर्चा केकरौ सें करी दिऍ पारेॅ, पंडितो सें प्रेम के चर्चा धर्मविज्ञान नाँखी करेॅ पारेॅ । बस यहेॅ होलोॅ छेलै—एक दिन, सृष्टि पूछी देलकै—गुरूजी आपनें कभियो केकरौ सें प्रेम करलेॅ छियै ?.....टीचर तेॅ सुन्तहै आग होय गेलोॅ छै, जेना गंगा नहाय लेॅ जैतै कोय पुजारी पर कोय अंडा फोड़ी देलेॅ रहेॅ । हुनकोॅ समुच्चा नीतिशास्त्र नंगोटा बान्ही केॅ खाड़ोॅ होय गेलोॅ छेला आरो फुंफकारलेॅ जे घरोॅ से बाहर भेलै तेॅ दोबारा नै ऐलै, महीनबारियो लैलेॅ नै ऐलै, जबकि महीना पूरै में एक दिन आरो बची रहलोॅ छेलै । धरमचंद नें ओकरोॅ खोज खबर भी लैलेॅ चाहने छेलै, मतरकि सृष्टि मना करी देलेॅ छेलै । ठीक दसे दिन बाद हिन्दिये पढ़ाय वास्तें कुन्दन केॅ ऊ घरोॅ में बुलैलोॅ गेलोॅ छेलै । बुलैलोॅ की गेलोॅ छेलै, ई कहोॅ कि विमलेन्दु नें ओकरोॅ हिन्दी-ज्ञान के एत्हैं पुल बाँधी देलेॅ छेलै कि दुसरे दिन सृष्टि केॅ पढ़ाय लेलोॅ बुलाय लेलोॅ गेलोॅ छेलै । नै बुलाय के कोय सवाले नै छेलै, विमलेन्दु ऊ घरोॅ के एन्हे विश्वासी पात्र छेलै, जेकरोॅ बात केॅ टारवोॅ धरमचंद केॅ भी मुश्किल लागै ।

आरो सचमुचे में कहला मुताबिके कुन्दन नें वहाँ आपनोॅ हिन्दी-ज्ञान के अद्‌भुत परिचय देलेॅ छेलै । पहिलें तेॅ ऊ काफी धुकचुकैलोॅ छेलै, मतरकि वहाँ पहुँची केॅ ओकरा लागलै—बेकारे वैं रात भरी पढ़ाय के रियाज करतें रहलै आरो दुकान जाय केॅ नया-नया किताब उलटाय के जहमत उठैलकै । जबेॅ रियाजे करलेॅ छेलै आरो किताब केॅ उलटैले छेलै, तेॅ हौ सब सृष्टि के सामना में राखै सें चुकलो नै छेलै । आईना नाँखी घूमी जाय छै कुन्दन के सामना सें सब बितलोॅ बात । औसतन लड़की सें कुछ उच्चोॅ कद, नै कारी, नै गोरी—नै मोटी, नै पतरी—छरहरी, जै पर पंजाबी कुरता आरो पजामा । कुर्ता पर ऊपर सें लै केॅ नीचेॅ तक राजस्थानी काम । आँख सें लै केॅ सौंसे देह में अदभुत चंचलता आरो बोली ? बोली तेॅ देहात के कोय जनानी रं मुक्त, पीपर गाछी सें छनी केॅ ऐतें जेठ के हवा,.....कुन्दन सृष्टि सें कुछ पुछतियै, एकरोॅ पहिलें सृष्टियैं कहलेॅ छेलै—पढ़ाय सीधे वहाँ सें शुरू होतै, जहाँ पहिलकोॅ गुरू जी छोड़ी गेलोॅ छै, यानी स्त्री के प्रति कवि के भोगवादी दृष्टि—विषय ई छेलै कि साहित्य में नारी के सौन्दर्य के बढ़ी-चढ़ी केॅ चित्रण की पुरुष के भोगवादी दृष्टि के सबूत नै छेकै आरो कि स्त्री के थोड़ोॅ टा भी हँसी केॅ बोलबोॅ, बनी-ठनी केॅ रहबोॅ पुरुष वास्तें ई बात के प्रमाण नै बनी जाय छै कि ऊ स्त्री के पुरुष लेॅ रसमय निमंत्रण छेकै ?

कुन्दन नें बड़ोॅ शांत स्वरोॅ में समझैनें छेलै कि देह के सौन्दर्य, चाहे स्त्री

के रहें कि पुरुष के, ऊ आखरी सौन्दर्य नै हुऍ पारें । सौन्दर्य तें अनन्त विचार के चेतना छेकै, जेकरा मोटा-मोटी आदर्श के बोध कहलों जावें सकै छै । घंटा भरी कुन्दन देह आरो प्रेम पर बोलत्हैं रही गेलों छेलै । सृष्टि तें दंग छेवे करलै, धरमचंद भी दंग छेलै, जे औसाराहै पर एक कुर्सी बिछाय कें बैठी रहलों छेलै । हेना कें देखाय के तें यही दिखाय रहलों छेलै कि हुनी फाइल कें समझै में व्यस्त छै, मतरकि हुनकों ध्यान कुन्दने के बातों पर छेलै । शैत आभी आरो देर वैं पढ़ैतियै, मजकि बीचे में धरमचंद नें कुन्दन कें बोलाय लेलें छेलै आरो सामना के कुर्सी पर हाथ पकड़ी कें बैठतें हुऍ सीधे पूछलें छेलै, ''की आरो कहीं ट्यूशन चलै छै ?''

''नै'' बड़ा संक्षिप्त-रँ उत्तर वैनें देलें छेलै ।

''कहाँ पर डेरा राखलें छौ ?''

''तिलकामांझी में ।''

''ठीक छै । होना कें ई कोठरी देखी रहलों छौ नी, एकरों दरवाजा सड़क दिश खुलै छै आरो खिड़की ऐंगना दिश । ई हमरे कोठरी छेकै । जों तोरों मों न करौं कि हम्में यहाँ रहौं, तें कोठरी खोलवाय देभौं । कोय दिक्कत नै होत्हौं, कोठरिये में सब कुछ के व्यवस्था छै ।''

''बाबू जी, ठिक्के तें कही रहलों छौं ।'' सृष्टि नें हुलसी कें कहलें छेलै ।

मतरकि कुन्दन नें ई बातों पर कोय जवाब नै देलें छेलै । एकदम्मे चुप बैठी रहलों छेलै । ओकरों चुप्पिये देखी कें नै तें धरमचंद नें बात कें आगू बढ़ैलें छेलै, नै तें सृष्टिये नें । बात कें बदलै के खयालों सें ही हुनी कहलें छेलै—अभी प्रेम पर जे विचार राखलों—वहें ठीक छै, हम्मूं मानै छियै कि प्रेम शरीर कें बान्है वास्तें औजारे खाली नै छेकै, ई मन के मुक्ती के भी मार्ग छेकै, जेकरों श्रेष्ठ परिणति त्याग में होय छै, प्रेम खाली शरीरे के नै, मनो के परिभाषा होय छै.....होना कें नया विचार आयकों आदमी कें ज्यादा बान्है वाला छै—कही कें हुनी निर्मल हँसी हँसी देलें छेलै ।

कुन्दन कें एक-एक बात याद छै । पाँच-छों महीना बितल्है सें की होय छै । याद रहै के तें आदमी कें बचपन के बातो याद रही जाय छै । बाते-बात में एक दिन धरमचंद नें ओकरा बतैलें छेलै—सृष्टि के संकेते पर हुनी ई कोठरी कें खोलवैनें छेलै आरो आपनों रुचिये मुताबिक सृष्टि नें ऊ कोठरी के सामान हिन्नें-हुन्नें करी कें सजैलें छेलै, जेकरे कारण आफिस रँ लगै वाला ऊ कमरा ड्रायंग रूम में बदली गेलों छेलै । कोठरी सें नेता जी आरो गाँधी के तस्वीर तें नै उठवैनें छेलै, मजकि जों न दीवाल पर खाली ठाकुर प्रसाद के कलैण्डर टंगलों

छेलै, ओकरा हटवाय केॅ वहाँ शकुन्तला के एक बड़ोॅ रँ पेंटिंग टांगी देलेॅ छेलै, जे वैं आपनोॅ कोठरी सें निकाली आनलेॅ छेलै । माय के कोठरियो सें नरगिस के पोट्रेट लानी केॅ ऊ वहेॅ दीवाल पर टांगी देलेॅ छेलै । धरमचंद जी सें वैं जानलेॅ छेलै कि सब परिवर्तन के बादो गाँधी आरो नेता जी के तस्वीर केॅ जरियो टा नै छूलेॅ छेलै । ई दोनों तस्वीर के जानकारी देतें हुनी बीचे में कहलेॅ छेलै—जोॅन दिन ई दोनों तस्वीर घरोॅ में ऐलोॅ छेलै, ऊ दिन लागलोॅ छेलै कि तस्वीर नै, दोनों के ही आगमन घरोॅ में होलोॅ रहेॅ । सृष्टि वास्तें तेॅ दोनों—गुरूदेव; बिना मूड़ी झुकैनें बाहर नै जावेॅ पारेॅ छै, ई दू तस्वीर नै छेकै, सृष्टि के शील आरो दृढ़ता के चिन्ह छेकै, जे वैनें ई घरोॅ सें पैलेॅ छै, जेकरा छोड़ी केॅ ऊ जीयै नै पारेॅ । यहेॅ कारण वैं तस्वीर नै हटैलकै । हम्में जबेॅ ई परिवर्तन पर कहलियै—''वाह, की हुलिया बदली केॅ राखी देल्हौ तोहें—नेताजी आरो गांधी साथें, शकुन्तला-नरगिस। अजीब टेस्ट छै नया पीढ़ी के । वन्दे मातरम केॅ भी पोप सांग बनाय केॅ ही गावै के शौक ।'' तेॅ सृष्टि हमरोॅ बातोॅ पर जानै छौ, की कहलकै ! कहलकै, ''मजकि यै में खराबिये की छै बाबू जी, आबेॅ दू आँख मिललोॅ छै, तेॅ दोनों आँखी सें ही दुनिया केॅ देखना चाहियोॅ । एक आँख मुनी केॅ देखला सें आदमी खाली आपने सूरत नै बिगाड़ी लेतै, देखवइयो केॅ ऊ केन्होॅ लागतै, ई तेॅ सोचले जावेॅ पारेॅ .....आबेॅ तोंही देखौ नी ।'' आरो ई कही केॅ सृष्टि नें एक आँख मुनी केॅ हमरा देखलेॅ छेलै तेॅ हम्मू खिलखिलाय केॅ रही गेलियै आरो हँसत्हैं-हँसत्हैं कहलियै, ''तोरा सें बात करै में पार पैवोॅ मुश्किल । होना केॅ कोठरी केॅ देखै लायक बनाय देलोॅ छै जरूर.....बस जरा-सा बदलाव के जरूरत छौं.....ई कुन्दन वाला कुर्सी नी छेकै, एकरा ऊ दिश करी दौ ।'' जानै छौ वै पर सृष्टि तुनकी केॅ कहलकै, ''नै बाबू जी, नै, गुरूजी आरनी के माथोॅ होन्है केॅ नीतिशास्त्र के सेन्ट्रल लाइब्रेरी बनलोॅ रहै छै । सड़ै सें बचाय लेली ई व्यवस्था करलोॅ गेलोॅ छै।'' कहतें-कहतें सृष्टियो के ठोरोॅ पर मुस्कान फैली गेलोॅ छेलै आरो हम्में तेॅ तखनी एकदम सें खुली केॅ हँसी पड़लियै । हसत्हैं-हँसत्हैं हुनी यहो कही देलेॅ छेलै, ''हम्में तेॅ समझै छियै कि ई परिवर्त्तन सृष्टि नें यै लेली करलेॅ छै कि तोहें यही रहोॅ। विमलेन्दु तेॅ रहिये रहलोॅ छै ।''

कुन्दन के आँखी में ऊ सब दिरिश घुमी आवै छै....वैनें साइकिल वाँही दिवाल सें सटाय केॅ खाड़ोॅ करलेॅ छेलै आरो कोठरी दिश मुड़ी गेलोॅ छेलै.... ''आय सें याँही पढ़ाय-लिखाय चलतै'' अभी कोठरी में हम्में ढुकलोॅ नै होवै, कि आपनोॅ कुर्सी पर बैठली सृष्टि नें खड़ा होतें कहलेॅ छेलै आरो सामना के कुर्सी दिश ईशारा करलेॅ छेलै । मंत्रमुग्ध नाँखी हम्में वहेॅ कुर्सी पर बैठी रहलियै ।

''तेॅ गुरू जी, आपनें केॅ मालूम छै कि कल बात केॅ कहाँ पर छोड़ी देलेॅ छेलियै आपनें ।'' सृष्टि नें गुरू जी पर कुछ विशेष बल देतें ही पुछलेॅ छेलै ।

''बेशक, उर्वशी के शंका के समाधान में छेलै पुरूरवा । पंक्ति छेलै,

दृष्टि का जो पेय, वह रक्त का भोजन नहीं है
रूप की आराधना का मार्ग आलिंगन नहीं है ।

''मजकि तोहरा पुरूरवा के हेनोॅ बात कुछ अटपटैलोॅ रँ नै लागै छौं, जों नै, तेॅ उर्वशी रक्त के भाषा पढ़ै लेॅ कैन्हें कहतियै । ठिक्के तेॅ रक्त दिमाग सें ज्यादा बली होय छै, की तोरा हेनोॅ नै लागै छौं । हमरा तेॅ यही लागै छै, लहू के सामना में बुद्धि के कोय बोॅल नै चलै छै । जों हेनोॅ नै होतियै तेॅ कण्व हेनोॅ ऋषि के आश्रम के बीच पली-बढ़ी केॅ भी शकुन्तला के विवेक केना बही जैतियै ।''

तखनी अकबकैलोॅ बस हम्में एतन्हैं कहलेॅ छेलियै, ''लहू के हेनोॅ पुकार नैतिक नै मानलोॅ जावेॅ सकेॅ ।''

''मजकि, गुरू जी, तोहें है तेॅ बतावोॅ कि सीमोन द बोउवार आजीवन अविवाहित सार्त्र के साथें रहलै, जेकरा सें प्रभावित होय केॅ अज्ञेय हेनोॅ कथाकारो 'नदी के द्वीप' उपन्यास लिखै छै; तोहें ई संबंध में की कहै लेॅ चाहवौ ।''

''सृष्टि, बहस के कोय अंत नै हुऍ पारेॅ । मतरकि तोहें जोन सीमोन द बोउवार आरो सार्त्र के बात करी रहलोॅ छौ, हुनकोॅ बारे में तोरा यहौ मालूम होतौं कि बोउवार सार्त्र सें पहिलें जोन प्रेमी केॅ चाहै छेलै, ऊ ओकरा सें ब्याहो करैलेॅ चाहै छेलै, मतरकि असमये में प्रेमी के मृत्यु नें ओकरोॅ मनोॅ केॅ झकझारी देलकै आरो एकरै प्रतिक्रिया हुऍ पारेॅ कि बोउवार केॅ शादिये सें नफरत होय गेलोॅ छेलै, शैत यहेॅ कारण छेलै कि सार्त्र जबेॅ बोउवार के जीवन में ऐलै आरो वहूं ओकरा सें बीहा के प्रस्ताव राखलकै, तेॅ वैनें इनकार करी देलेॅ छेलै । सीमोन द बोउवार आपनोॅ जिनगी भर आपनोॅ प्रेमी मैर्लोपोन्ती केॅ नै भूलेॅ पारलेॅ छेलै'' तखनी कहतें-कहतें हम्में एकबारगिये चुप होय गेलोॅ छेलियै आरो हमरा सें कहीं ज्यादा गंभीर होय गेलोॅ छेलै सृष्टि ।

फेनू उर्वशी काव्य के पन्ना उलटतें-पुलटतें ही हम्में कहलेॅ छेलियै, ''तबेॅ स्त्री में पुरुष सें कहीं ज्यादे खतरा सें खेलै के साहस होय छै, बोउवार के ही बात नै छै, उर्वशियो अविवाहिते रही केॅ पुरूरवा केॅ पुत्र दिऍ सकै छै..... तखनी नै जानौं, मनोॅ में की सोचतें हुऍ किताब केॅ मोड़ी एक दिश राखी देलेॅ छेलियै । सृष्टिं कुछ जवाब नै देलेॅ छेलै । ओकरोॅ आँख कुछ देर लेली हमरोॅ आँख पर गड़ी केॅ रही गेलोॅ छेलै, जेना कि हमरो । कुछ क्षण लेली हेने होय गेलोॅ छेलै, जेना हौ सन्नाटा में आरो कोय होतियै तेॅ आसानी सें दोनों के दिलोॅ

के धड़कन सुनी लेतियै । हठाते हमरा दोनों के नजर झुकी गेलोॅ छेलै । जेना, दोनों दू कठपुतली रहेॅ, जे एक्के इशारा पर एक्के रं नाँचतेॅ-बैठतें रहेॅ.....

कुन्दन केॅ एक-एक बात याद छै । छोटोॅ-छोटोॅ बात याद आवी रहलोॅ छै, जेकरा पर वैं कभियो ध्याने नै देलोॅ छेलै—एक दाफी सृष्टि नें कागज के मटर नाँखी गुल्ली बनैलेॅ छेलै आरो फेनू टेबुल पर राखी तर्जनी सें यै रँ उड़ैलेॅ छेलै कि ऊ हमरोॅ छाती सें टकरैतें ओकरे पास लौटी गेलोॅ छेलै, जेकरा वैनें फेनू होनै केॅ उड़ैलेॅ छेलै, जे दुसरोॅ दाफी हमरोॅ बालो सें टकरैतें दूर छिटकी गेलोॅ छेलै । जबेॅ हम्में कहलियै, ई की रँ के बचकाना हरकत छेकै ?.....यै पर वैं कहलेॅ छेलै, ''यै में परेशान होय के कोय बाते नै छै । फ्रायड बाबा कहै छै कि आदमी के अन्दर गन्दगिये भरलोॅ छै आरो डार्बिन बाबा कहै छै कि आदमी बन्दर के विकास छेकै, तेॅ आचरजे की, जों हमरोॅ हरकत तोरा बन्दर नाँखी लागौं आरो गन्दौ ।'' एतना कही ऊ मुस्कैलोॅ छेली ।

''आरो तोरा मालूम होना चाहियोॅ कि मार्क्स बाबा ई कहलेॅ छै कि मनुष्य आपनोॅ आस-पास के परिस्थिति के निर्माता होय छै आरो ओकरोॅ भोक्तो.....'' पता नै हमरोॅ बात केॅ की लेलेॅ छेलै जेकि हठाते चुप होय गेलोॅ छेलै आरो तबेॅ सृष्टि तीन दिन तांय हेने खामोश बनलोॅ रहलै कि नै कहेॅ पारौं । बात धरमचंद जी तक पहुँची गेलोॅ छेलै । ऊ दिन हमरोॅ केन्होॅ हाल होय गेलोॅ छेलै.....हुनी ऐलोॅ छेलै आरो कहलेॅ छेलै—कुन्दन, की बात होय गेलोॅ छै कि सृष्टि आय कल घर में चुप-चुप रहै छै, नै तोरोॅ कोय बड़ाय, नै कोय शिकायत । आखिर मामला की छेकै.....आबेॅ मामला की बतैलोॅ जैतियै हुनका, बस कही देलियै—पढ़े में मोॅन नै लगावै छै, यही में कुछ कही देलियै तेॅ ई नारजगी छै.....हमरोॅ बात सुनिये केॅ हुनी हाँसी पड़लोॅ छेलै । कहलेॅ छेलै—यै में हमरोॅ वकिलाय काम नै करेॅ पारेॅ । आपसे में मुद्दय और मुद्दालय समझौता करी लौ, तेॅ अच्छा ।

ई बीचोॅ में सृष्टि नें टेबुल के नीचें हाथ करी नै जानौं कखनी तेॅ कागज के बड़ोॅ रँ गुल्ली बनाय लेलेॅ छेलै आरो धरमचंद जी के जैत्हैं गुल्ली केॅ टेबुल पर राखी, विचलका अंगुली केॅ बुढ़वा सें टिकाय केॅ जे रँ उड़ैलेॅ छेलै कि ऊ गर्दन सें टकरैतें सीधे गंजी में जाय केॅ फँसी गेलोॅ छेलै । विचलित होय उठलियै, तेॅ सृष्टि बच्चे नाँखी ताली बजैतें खिलखिलाय पड़लोॅ छेलै । हमरा दिश से बेखबर । तखनी हम्में कत्तेॅ तेजी सें ऊ गुल्ली गंजी सें नकाललेॅ छलियै आरो टेबुले पर राखी ठीक होन्है केॅ उड़ैलेॅ छेलियै, जेनाकि वैनें आरो जबेॅ गुल्ली होन्है केॅ ओकरोॅ गर्दन सें टकरैतें ओढ़नी में फँसी गेलोॅ छेलै तेॅ हँसतें-हँसतें वैं कहलेॅ छेलै—''निशाना बाँधै छौ ?''

सृष्टि के ऊ मुक्त हँसी के तुलना हमरो॑ पास कुछ नै छै—कुन्दन नें मने-मन सोचले॑ छेलै—सेमर के रूई सें भी ज्यादा गुदगुदो॑, मुलायम आरो उजरो॑; जेकरा देखी ऊ केन्हो॑ मुग्ध होय उठलो॑ छेलै—जेना नद्‌दी सें वैनें पनसोखा उठतें देखले॑ रहे॑......

कुन्दन के आँख अपने आप बंद होय गेलै, जेना ऊ क्षण के॑ दोबारा देखैले॑ चाहतें रहे॑ । आँख बन्द होलै तें॑ ओकरा यहो खयाल ऐलै, ''गुनाहों का देवता'' ओकरो॑ सिलेवस में तें॑ नै छै, फेनू कैन्हें सृष्टि नें जिद्‌द करले॑ छेलै कि अगला हफ्ता सें यहे॑ उपन्यास पर व्याख्यान होतै । उपन्यास थमैतें हमरा सें कहले॑ छेलै, ''गुरू जी, जों उपन्यास पढ़ियो चुकलो॑ छौ, तहियो पढ़ी के॑ ऐइयो॑ । मनो॑ में ढेरे सवाल छै, जे पूछना छै ।'' घो॑र लौटला पर वैनें पढ़ै के ख्याल सें उपन्यास उलटैनें छेलै । पन्ना उलटैतें एक चित्र देखले॑ छेलै—किताब के पन्ने पर बनैलो॑—एक ठूंठ छै, ठूंठ के फुनगी पर एक फूल आरो ठूंठ के आधो॑ भाग एक ठो विशाल अजगर के जबड़ा में फंसलो॑ । कुन्दन नें गौर सें देखले॑ छेलै, ऊ छपलो॑ फोटो नै छेलै—हाथ सें बनैलो॑ गेलो॑ छेलै आरो चित्र के एक कोना में लिखलो॑ छेलै—सृष्टि । ओकरा आचरज होलो॑ छेलै—किताब के हर पाँच पन्ना के बाद वहे॑ चित्र बनैलो॑ गेलो॑ छेलै—छोटो॑-बड़ो॑ आकारो॑ में । कै दाफी मो॑न होलो॑ छेलै—एकरो॑ माने सृष्टिये सें पूछी लै, मतरकि हेनो॑ नै करे॑ पारलें॑ छेलै ।

बितलो॑ बातो॑ सें कटी के॑ कुन्दन नें सोचलकै—की हमरो॑ चिट्‌ठी ओकरो॑ सब सवालो॑ के उत्तर नै छेकै, ई सोचत्हैं, ओकरा एक झटका रँ लागलै आरो ऊ उठी बैठलै । फर्श पर चहलकदमी करे॑ लागलै । ओकरो॑ दिल अजीबे नाँखी धड़के॑ लागलो॑ छेलै, कभी तें॑ लागै, ऊ एकदम रुकी गेलो॑ रहे॑ आरो कखनियो-कखनियो एकदम तेज, जेना, छाती नै, भांती धुक-धुक करतें रहे॑ ।

ओकरा ई बातो॑ के खयाले नै छेलै कि कोठरी में कजरोटी के कालिख रं अन्हार पसरी गेलो॑ छेलै । लैम्प दिश देखलकै, तहियो ओकरो॑ मो॑न होलै—कोय रौशनी नै करौं, हेने अन्हार रहे॑ दियै, मतर नै, जों सृष्टि आविये जाय । ई बात मनो॑ में ऐत्हैं ऊ फेनू चौंकी पड़लै, जेना दरवाजा पर कोय दस्तक देले॑ रहे॑ । वैनें घुमी के॑ देखलकै । मतर, हेनो॑ कुछुवे बात नै छेलै, कोय दस्तक देले॑ होतियै तें॑ उत्तर नै पावी के॑ फेनू नै देतियै, केबड़ो तें॑ होन्हे भिड़कलो॑ छै । कुन्दन नें हुड़का छूवी के॑ देखले॑ छेलै—कही वै भूलो॑ सें लगाय तें॑ नै देले॑ छै; नै हुड़को खुल्ले छै । ओकर्है भरम होलै । वैनें खिड़की दिश देखलकै, वहू खुल्ला । कि तभिये ओकरो॑ मनो॑ में ऐलै—कोठरी में रौशनी नै देखी हुएँ सकै छें॑,

सृष्टि लौटियो जावेॅ पारेॅ.....मतर, है की जरूरी छै कि सृष्टि आविये जैतै ? .....जों नै आवै छै, तेॅ एकरोॅ मतलब होय छै कि कल सें हमरोॅ वहाँ जाना बन्द । .....अच्छा नै करलियै, हमरा हेना केॅ चिट्ठी ओकरोॅ हाथोॅ में थमाय केॅ नै आना छेलै । खोली केॅ पढ़लेॅ होतै तेॅ की-की सोचलेॅ होतै.....मतर नै, सृष्टि, हमरा सें जे नै कहेॅ पारी रहलोॅ छेलै; वहेॅ तेॅ हम्में ऊ चिट्ठी में लिखलेॅ छियै । आबेॅ सब फैसला सृष्टि के हाथोॅ में छै । आरो ई हुऐ नै पारेॅ कि ऊ नै आवेॅ । ...कै दिन सें ओकरोॅ चुप-चुप बनी केॅ रहवौ—जानेॅ कत्तेॅ-कत्तेॅ बात कहै लेॅ चाहतेॅ रहेॅ, जेकरा वैं आपनोॅ बंद ठोर आरो कभी-कभी बंद आँखी सें कहै छेलै । हमरोॅ चिट्ठी ओकरोॅ शंका के निदान छेकै.....आखिर बिना संदर्भे के वै कैन्हें ई पूछी बैठलोॅ छेलै—कुन्दन, उर्वशी की ठिक्के में पुरूरवा के पुकार पर स्वर्ग सें दौड़ी केॅ धरती पर आवी गेलोॅ होतै ? आरो हमरोॅ ई कहला पर, ''सिद्ध करना छौं की?'' ऊ की रँ कठुआय केॅ रही गेलोॅ छेलै.....नै हम्में कुछुओ गलत नै लिखलेॅ छियै, ऊ सृष्टि के मनोॅ के बात छेकै.....

कि तखनिये भिड़कलोॅ केबाड़ खुललै । केवाड़ केॅ हौलें सें पीछू करलोॅ गेलोॅ छेलै । सृष्टि केॅ देखत्हैं, कुन्दन आगिन पर चढ़लोॅ दूध नाँखी उफनाय उठलै । जेना कोय गुफा में खजाना के द्वार मिली गेलोॅ रहेॅ ओकरा । मुँहोॅ सें निकललै, ''सृष्टि ! हमरा पूरा विश्वास छेलै, तोहें हमरोॅ पुकार पर जरूर ऐवौ, तोहें रुकै नै पारौ.....अरे, द्वारिये पर कैन्हें छौ, भीतर आवोॅ.....'' कुन्दन नें दोनों हाथ बढ़ैलेॅ छेलै ।

''नै कुन्दन, नै ।'' फेनू सृष्टिं नें चिट्ठी केॅ कुन्दन के हाथोॅ में थमैतें कहलेॅ छेलै, ''ई तोरोॅ चिट्ठी होन्है केॅ बंद छौं, जेना तोहें देलेॅ छेलौ । शैत एकरा खोलै के हमरा कोय जरूरते नै छेलै । हमरा तुरत लौटना छै, बाबूजी के लौटै सें पहिल्हैं ।'' एतना कही सृष्टि दरवाजा के दोनों फाटक केॅ फेनू सें भिड़कैलेॅ छेलै आरो सड़क पर उतरी ऐलोॅ छेलै । बदहवास बनलोॅ कुन्दन नें खिड़की सें ही सड़क के रौशनी में देखलेॅ छेलै—एक छाया धीरें-धीरें लम्बा होलोॅ छै, जे ओकरोॅ खिड़की पर फैली केॅ हठाते खतम होय गेलोॅ छेलै ।

चन्दन विष व्यापत नहीं

नूरपुर इस्कूल छोड़ला के बाद ई ओकरा सें हमरो॑ पहलो॑ मुलाकात छेलै । ठीक फुलवड़िया मोड़ो॑ पर ऊ मिली गेलै—एक पान दुकानी पर खाड़ो॑ । केकरो इन्तजारे करी रहलो॑ छेलै ? देखत्है वैनें आवाज देलकै—''विकास, अरे रुक'' आरो वैनें आपनो॑ दोनों हाथ उठाय देनें छेलै, जेकरो॑ कारण भीड़ के॑ चीरतें हमरो॑ ध्यान सीधे ओकरै पर गेलै । ओकरा वहाँ देखी हमरा कुछ अचरज नाँखी होलै, मजकि आपनो॑ सब भावो॑ के॑ छिपैतें ओकरे दिश बड़ी गेलियै आरो नगीच आवी कहलियै, ''मन्टू, तोहें यहाँ ?''

''पहिलें तोंही बताव कि तोहें यहाँ ?''

''यही तगेपुर हाई इस्कूल में बदली होय गेलो॑ छै । आबे॑ साइकिले सें आना-जाना करै छियौ ।'' आरो ई कही हम्में आपनो॑ साइकिल वाहीं दुकानी के एक दिश खाड़ो॑ करी देलियै, ''मजकि तोहें ई ते॑ बताव कि तोहें यहाँ पर की करी रहलो॑ छैं ?'' ई कही हम्में हिन्नें-हुन्नें नजरो दौड़लियै । काँही कुछ नै । कुछ होय के सवालो नै छेलै । आस-पास कोय बस्तियो ते॑ नै छै, छेवो करै ते॑ सौ-पचास बाँस के दूरी पर । हमरा यहू मालूम छेलै कि यै इलाका में मंटू के नै ते॑ कोय संबंधी रहै छै, नै ते॑ कोय दोस्त-मोहिन ।

मन्टू नें हमरो॑ सवाल के कोय जवाब नै दै के॑ उल्टे हमरै सें पुछलकै, ''इस्कूल ते॑ दस, साढ़े दस सें लगै छै, आरो तोहें इखनियै.....है नवे.....।''

''बाजार के कुछ सामान छै, सोचलियै, जल्दिये निकली जांव ते॑ इस्कूल सें लौटै वक्ती सामान खरीदै-उरीदै के झमेला नै रहतै ।''

''खैर, तबेॅ तेॅ तोरा समय छौ, एक काम कर'' वैनें आपने सें ऊ दुकानी के नीचें राखलोॅ बेंची केॅ खींचलकै आरो ओकरा रूमाल सें झाड़तें बोललै, ''तोहें, बैठी केॅ दस मिनिट हमरोॅ इन्तजार कर । तोरोॅ साइकिल लै केॅ जाय छियौ । बस भेंट करलियौ कि लौटलियौ ।'' आरो वैनें हमरोॅ कोय उत्तर के बिना अपेक्षा करलैं हमरोॅ साइकिल केॅ लेलकै आरो साइकिल के पीछू सें आपनोॅ लम्बा दाँया टाँग केॅ पार करतें सीटोॅ पर जमी गेलै । यद्यपि वैठां नै तेॅ दूर-दूर तांय आरो नै तेॅ आगू ही कोय आदमी दिखाय छेलै, तैहियो वैनें तीन-चार बार घंटी बजैलकै आरो जल्दी-जल्दी पैडिल घुमैतेॅ आगू बढ़ी गेलै ।

पीछू सें हम्में ओकरा देखलियै तेॅ हमरा हँस्सियो आवी गेलै । छोॅ फुट के लम्बा-चौड़ा जवान । इखनियो देहोॅ पर वहेॅ लम्बा खलत्ता कुर्ता आरो चूड़ीदार पैजामा । हमरोॅ छोटोॅ रँ के साईकिल केॅ चलाय में ओकरा कत्तेॅ दिक्कत होय रहलोॅ छेलै, ऊ देखतें कोय्यो हँसी पड़ेॅ । प्रतिक्रिया देखै के खयाले सें ही हम्में पानवाला दिश देखलियै, जेकरोॅ ठोरोॅ पर पान के रंग नाँखी मुस्कान फैली रहलोॅ छेलै । हमरा आपनोॅ दिश देखतें देखलकै तेॅ हठाते गंभीर होय गेलै, शायत ई सोचियै, कि हमरा ओकरोॅ मुस्कैवोॅ अच्छा नै लागतै । आरो ई बताय लेॅ कि ऊ हौ दिश देखिये नै रहलोॅ छेलै—वैनें एक बड़ोॅ रँ बाटी में राखलोॅ पानी केॅ पाने पत्ता सें पान के ढेरी पर छिड़कना शुरू करी देलकै, जरियो टा हमरोॅ दिश देखले बिना । आरो पानिये छिड़कतें पूछलकै, ''पान-ऊन चलतै की बाबू जी?''

''नै, पान नै खाय छियै ।''

''कसेलिये, मुँहोॅ में दबैइयै ।'' ई दाफी वैनें सामना में राखलोॅ एक छोटोॅ रँ बाटी सें कसैली के दू टुकड़ा उठैलकै आरो हमरोॅ दिश बढ़ाय देलकै ।

हेना केॅ तेॅ हम्में कसेलियो नै खाय छियै, मतरकि हर बातोॅ में इनकार करवोॅ ठीक नै होतै, यहेॅ सोची केॅ कसेली लै लेलियै आरो दाँया हाथ के अंगुठा, तर्जनी आरो मध्यमा के बीच टुकड़ा सिनी घुमावेॅ लागलियै ।

''आपने माट साहब के के लागै छियै ?'' दुकानदारें पान के पिछुलका डंटी तोड़तें आरो फेनू बीचोॅ सें चीरतें, हमरोॅ दिश देखी केॅ बोललै ।

''दोस्त छेकै ।''

हम्में सोचलेॅ छेलियै, एकरोॅ बाद वैं आरो कुछ पुछतै, मजकि हेनोॅ बात नै होलै । पहिलके नाँखी दुसरोॅ पान के डंडी तोड़लकै; बीचोॅ सें चीरी वै पर चूना-कत्था लगैलकै आरो एक लाल रँ के कपड़ा सें हाथ पोछी लेलकै ।

''से की, कुछ बात छै की ?'' हम्मी ओकरा सें पूछलियै । लागलै, ओकरोॅ प्रश्न

करै के पीछू जरूर कोय रहस होतै ।

''बस हेन्है केॅ जानै लेॅ चाहै छेलियै कि हिनी कौन पाटी के नेता छेकै ?''

''अरे नेता-वेता नै छेकै । सुनलौ नै, बतैलकै कि यही मुखेरिया हाई इस्कूली में मास्टर छै ।''

''आय बुझलियै । चेहरा-मोहरा सें आय तक हिनका हम्में कोय नेताहै बुझतेॅ रहियै ।'' ई कही वैनें आपनोॅ मूड़ी बाँया दिश झटकैनें छेलै, जेना ओकरा आपनोॅ समझ पर आचरज साथें ग्लानियो होलोॅ रहेॅ । आरो फेनू दोनो हथेली केॅ केहुनियाँ से जोड़ी ओकरा फलकलोॅ कमल नाँखी बनैलेॅ छेलै, जैमें ऊ आपनोॅ ठुड्डी डाली केॅ मौन होय गेलै ।

हमरा खयाल ऐलै, मंटू के बदली जबेॅ जमदाहा इस्कूली सें नूरपूर इस्कूल होय गेलोॅ छेलै, तेॅ एकरा नेताहै समझी केॅ साल भरी हेडमास्टरें कोय टोक-टाक नै करलकै । गोरोॅ दिप-दिप चेहरा तेॅ छेवे करै, हाथोॅ में ताँबा आरो चाँदी रंगोॅ के तारोॅ सें गुंथलोॅ मोटोॅ मठिया मंटू केॅ आकर्षक बनावै आरो दबंगो । हमरा याद छै, साल भरी में एक्को दिन ठीक टैम में ऊ इस्कूल नै ऐलोॅ होतै । कभी बारह बजेॅ, आरो कभी एक बजेॅ । एक दाफी हेडमास्टरें टोकी देलकै तेॅ आपनोॅ निचलका ठोर केॅ दाँतोॅ सें दबैलकै आरो फेनू छोड़तें कहलकै—माट साब, तोरोॅ बात हम्में समझेॅ पारौं, मोटर गाड़ी आरो ट्रेन नै..... एक हमरोॅ लेली नै ट्रेन दू घंटा पहिलें पहुँचतै, नै मोटर । गाड़ी खाली हमरै लेलेॅ-लेलेॅ तोरोॅ लुग पहुँचाय देतै की ? की हमरोॅ बिना तोरोॅ इस्कूल बंदे होय जाय छौं । अरे गाड़ी-घोड़ा छेकै, बीचोॅ-बीचोॅ में पसैंजर उठैवे करतै, आबेॅ जों आवै में मोटर बीसे बार रुकै छै, आरो पच-पचे मिनट देर होय छै तेॅ सोचौ, एकरै में डेढ़-दू घंटा पार । आबेॅ जबेॅ हम्में कुछ देर करी ऐवे करै छियै, तेॅ एकरा ध्यानोॅ में राखै के जरूरत नै छै ।'' आरो फेनू हमरोॅ दिश इशारा करी केॅ कहलेॅ छेलै, ''पूछी लौ, विकास सें, जमदाहा में कभियो हम्में लेट आवै छेलियै, हों, पंकचुअल कहावै वाला विकास भले लेट आवेॅ तेॅ आवेॅ ।''

तखनी तेॅ हमरोॅ हालत एकदम विचित्र होय गेलोॅ छेलै । आबेॅ बोलौं तेॅ बोलौं की.....हमरा विश्वासो नै छेलै कि मंटूओ के बदली वहेॅ इस्कूली में होय जेतै, जैमें हमरोॅ । एकरोॅ पहिलें दोनों जमदाहै इस्कूली में छेलियै । तबेॅ हमरोॅ यहेॅ कोशिश रहै कि इस्कूल लागै सें पाँच मिनिट पहिलें पहुँचौ, तभियो कुछ नै कुछ देर भइये जाय.....केना नै होतियै—बौंसी सें जमदाहा तक जाय वाली गाड़ी बस एक्के आरो वहेॅ गाड़ी सें सबकेॅ आना-जाना । गाड़ी खुललोॅ नै कि पीछू सें हो-हो के आवाज हुऐ आरो गाड़ी रुकी जाय । नै रुकै के मतलब

छेलै, दुसरे दिन गाड़ी कें दे ईंटों-पत्थर सें शीशा तें चूर करवे करतियै, ड्रायवरो माथों- कपाड़ भंगवाय लेतियै । दुसरो बात यहू छेलै—सड़के पर हाथ, पाँच हाथों पर बित्ता-बित्ता भर के गड्ढा । सुनाफड़ पावी कें तेज चलें भी तें केना । यैमें पाँच-दस मिनिट देर होय जैवों कोय बड़का बात नै छेलै । आरो हेनों कोय दिन नै होय छेलै कि कोय-न-कोय मास्टर कें देर होइये जाय । खुद हेडमास्टर साहब कें कै दाफी हेनों हाल सें गुजरै लें लागै । बात ई छेलै कि इस्कूली में जत्तें मास्टर छेलै—काहीं-न-कांही सें आवै—हमरे नाँखी । केकरौ-केकरौ तें रास्ता में एक-दू गाड़ियो बदलें लें लागै—आरो जों केन्हौं कें जमदाहा जाय वाली ई पहिलकों गाड़ी छूटी जाय छेलै तें समझों घंटा भरी के लेट होनाहै होना छै—चाहै तोंय पैदले जा कि वहें गाड़ी के फेनू सें लौटै के इन्तजार करों । मन्टू है सब बात नै जानै छेलै, से बात नै । तभियो वैं ई सब बातों कें देर होय के कारणे नै मानै । वैं कहै—नौकरी के मतलबे होय छै—नौकर नाँखी बनी कें रहवों । जों बाबू बनी कें आना-जाना छौं, तें आपनों कोय व्यवसाय करों, है नौकरी करै के की जरूरत छै । आबें सरकार जबें ठीक टैम में आवै-जावै आरो पढ़ावै के पैसा दै छौं तें बाबू नाँखी टहललों-बुललों, दस बजें के बदला ग्यारह-बारह में ऐवौ, तें नै नी होतौं ।'

ई बात मंटू खाली जुनियर मास्टरे कें कही देतें रहें, से बात नै छेलै, केकरौ नै कुछ बुझै—की सिनियर आरो की हेडमास्टर । कोय ओकरों विरोधो नै करें पारै—एक तें सब आपनों गलती पर भीतरे-भीतरे आपना कें हीन महसूस करै, दुसरों ई कि मंटू कभियो इस्कूल में देर करी नै आवै । इस्कूल दस बजें सें लागै आरो मंटू पौने दसे बजे आवी कें दम दाखिल । आवी कें इस्कूल के चारो दिश घूमै—अहाता के एक-एक गाछ कें देखै आरो कोय गाछी के कोइयो ठाहुर टुटलों मिलै तें ऊ दिन लड़का सें लैकें मास्टर तक कें उपदेश दै में लीन रहै, ''जबें गाछे के हिफाजत यहाँ मुश्किल छै, तबें इस्कूल के पढ़ाय-लिखाय के की हिफाजत होतै.....ई इस्कूली के मास्टरे जबें बारह बजे ऐतै, तें लड़का सिनी के की, छुट्टी होला के बादे आवै छै तें की ।''

मंटू कें कोय बातों के जरियो टा कन्हौ सुराग मिलें तें ऊ सीधे मास्टर के देर सें आवै के विषय पर उतरी जाय । एकरा सें एक फायदा होय जाय कि मंटू कें कोय क्लास-उलास लै लें नै कहै । हेडमास्टरो तक नै । बस हमरा सें कही दै ''जरा मंटू बाबू के किलास लै लियौ ।''

एक तें मंटू के, दुसरों हेडमास्टर साहब के आदेश; आपनों घंटी साथें ओकराहौ लेना हमरों उत्तरदायित्व बनी गेलों छेलै जेना । मजकि एकरा सें

एतना होलै कि मंटू आरो जेकरा जे कहेॅ, हमरा कुछ नै कहै । एक तरह सें हम्में ओकरोॅ दोस्ते बनी गेलियै । यहाँ तक कि तुम-ताम पर हमरा सिनी उतरी ऐलियै। मतरकि जहाँ तक क्लास के बात छेलै, वैनें घंटी लै के भार तभियो वापिस नै लेलकै ।

सब मास्टर ई मानी लेलेॅ छेलै कि ओकरा जब तांय ऊ इस्कूली में रहना छै, मंटू के यै विषय पर फुंफकार सुननै छै ।

दसे-ग्यारह बाँसोॅ के दूरी पर छेलै मंटू के घोॅर, जहाँ सें ऊ पैदले चललोॅ आवै ।

क्लास करै लेली तेॅ आवै पौने दस बजेॅ, मतरकि एकरोॅ पहिलो बिना नागा के भिहानै एक दाफी जरूरे इस्कूल दिश आवै टहलै के बहाना । गाछ-बिरिछ के भोररकोॅ हवा तन-मन केॅ मजगूती दै छै, यही सोची । आबेॅ जबेॅ दसे-ग्यारह बाँस के दूरी पर मंटू के घोॅर छै तेॅ टिफिन वक्ती ऊ टिकतियै केना; जलखै लेॅ घोॅर दिश बढ़ी जाय आरो तखनी सब टीचर इकट्ठा होय मंटुवे के बारे में कोय-न-कोय शिकायत निकाली लै । है बात नै छेलै कि हम्में वै मंडली सें अलग छेलियै ।

बात की छिपलोॅ रहै । ई कानाफुसकी केन्हौ-न-केन्हौ मंटू के कानोॅ में चल्ले जाय आरो दुसरे दिन वैं कोय-न-कोय बहाना निकाली केॅ ऊ सब दोहराय दै, जे मास्टर सिनी के बीच बितलोॅ दिनोॅ में होलोॅ रहै आरो आखरी में उपसंहार नाँखी जरूरे कहै, "है नै सोचोॅ कि तोरोॅ सिनी के शिकायत-षड़यंत्र से हम्में यहाँ सें खिसकी जैवै, हों तोरा सिनी जरूरे खिसकी जैवा, जोन दिना हम्में चाही लेवौं।" ई उपसंहार सुनावै वक्ती मंटू दोनों हाथ ऊपर करी लै आरो फेनू फेरा-पाती सें एक-दुसरा हाथोॅ सें कुर्त्ता के हत्था बाँही तक ससारी दै ।

जेना ई दिरिश नै देखै के मनोॅ सें ही सब मास्टर चौख-डस्टर लेलेॅ स्टाफ रूमोॅ सें निकली जाय—घंटी लै केॅ बहाना सें ।

.....कोॅन मास्टर नै होतै, जे तंग नै आवी गेलोॅ होतै । के मनों सें चाहै कि क्लास लेवे करौं । त्रिलोचन, भुवनेश्वर और त्रिवेणी तेॅ एकदम अक्कच आवी गेलोॅ छेलै । होना केॅ सब चाहै कि कोय दुसरोॅ इस्कूली में बदली होय जाय, मजकि त्रिलोचन, भुवनेश्वर आरनी तेॅ यै वास्तें शिक्षा-विभाग के पदाधिकारी आरो हेडक्लर्क केॅ भारी घूसो दै ऐलोॅ छेलै । दस-पन्द्रह रोज के छुट्टी लै केॅ भागलपुर दौड़ो-धूप करलकै, मतरकि सब बेरथ—टाकाहौ गेलै आरो परेशानियो । ई तेॅ भाग मनावौ कि कोॅन विन्डोवोॅ उठलै जे टीचर सिनी केॅ एक जिला सें दुसरोॅ जिला में बदली होना शुरू भेलै आरो त्रिवेणी आरनी हौ इस्कूली से हेनोॅ भागलोॅ छेलै

जेना गोहाली सें खुललोॅ लेरू उड़लोॅ रहेॅ.....।

ऊ दिन के बात याद ऐत्हैं विकास मुनलोॅ ठोरोॅ सें हाँसी पड़लै, कुछ एतन्है जोरोॅ सें कि ओकरोॅ पूरा देह-हाथ डोली पड़लै ।

''भला की सोचलेॅ होतै ई पानवाला, हमरा हेना केॅ मने-मन हाँसतें देखी'' ई सोची हम्में पानवाला दिश देखलियै, जे अभियो तांय होन्है केॅ फलकलोॅ तरत्थी पर ठोढ़ी फँसैलेॅ सड़कोॅ दिश ताकी रहलोॅ छेलै ।

हमरा आपना दिश देखतें देखलकै तेॅ सीधा होतें कहलकै, ''नै कसेली, तेॅ लोंगे-इलाइची लिऐ । देखै छियै कसेली के दोनों टुकड़ा तेॅ आपने के अंगुरिये बीचोॅ में छै ।'' आरो झट सनां वैनें एक छोटोॅ रँ डिबिया केॅ खोली वैसें इलायची निकालकै, फेनू छिलका उतारी केॅ ओकरोॅ दाना हमरा दिश बढ़ैलकै—बड़ी निष्ठा साथें । हेनोॅ करै वक्ती ओकरोॅ बाँया हाथ के अंगुली सिनी दाँया हाथ के बाँही पर आवी केॅ जमी गेलोॅ छेलै आरो हमरोॅ दाना उठैला के बादे जे हटलोॅ छेलै । ''आचरज छै, दस मिनिट बोललकै आरो आभी तांय नै ऐलोॅ छै ।'' हम्में ई बात दुकानदार केॅ सुनइये केॅ बोललियै । से वैं उत्तरोॅ में कहलकै, ''दस मिनिट कहलेॅ छौं तेॅ साठ मिनिट बूझोॅ । कहै के हिनी माट साहब रहौं, मतरकि हिनी छेकौं पकिया नेता आरो आयकल ऊ टीचरे की, जे नेता नै रहेॅ । तखिनकोॅ जमाना छेकै थोड़े, जखनी गुरू के मतलब गुरू होय छेलै, आय गुरू के माने होय छै—गुरू घंटाल ।'' ई बात केॅ वैंने थोड़ोॅ दबले-दबलोॅ आवाजोॅ में कहलकै, मतरकि एतना साफ, कि कोइयो सुनेॅ पारेॅ ।

''तेॅ की, है बात यैं मंटुवे केॅ सामना में राखी केॅ बोललकै ?'' हम्में पानवाला के बातोॅ के बिना कोय उत्तर देल्हैं सोचलियै—झूठ भी तेॅ नै बोली रहलोॅ छै ई । नया जगह में ऐत्हैं मंटू जे चाल चलना शुरू करी देलेॅ छेलै, वै सें बंधलोॅ व्यवस्था में जेना उबाल आना शुरू होय गेलोॅ छेलै.....छुट्टी होला के बाद, रोजे कोय न कोय टीचर साथेॅ लय्ये केॅ ऊ निकलै आरो ओकरा ई विश्वास दिलावै कि हेडमास्टर के एत्तेॅ सवेरे आवै के की मानी छै.....वैं कहै, ''हमरौ मालूम छै कि इस्कूली के पैसा कोॅन-कोॅन फण्डोॅ के नीचेॅ दबलोॅ रहै छै, आरो जेकरोॅ नीचें हेड के परानो । ई तेॅ भाग मनावौ कि हमरोॅ गाड़िये देर पहुँचै छै, नै तेॅ धोॅन सहित प्राण उखाड़ी केॅ राखी दियै ।''

है की खाली मंटुवे के विश्वास छेलै, दुसरो मास्टर सिनी केॅ यहेॅ विश्वास छेलै सालोॅ सें । मंटूं खाली ओकरा बोॅल देलेॅ छेलै—विरोध करै के । आरो फेनू शुरू होलै बातोॅ सें गाली तक के उठा-पटक । पढ़ाय-लिखाय तेॅ हेन्हौ केॅ नहिये हुऐ । पहिलें मास्टर सिनी स्टाफ रूमोॅ में देश सें लैकेॅ दुनिया तक

के राजनीति बतियावै; एकरा सें फुर्सत मिलत्है, वेतन, पेंशन, हड़ताल आरनी पर.....

आबेॅ मंटू के ऐला पर शिक्षक सिनी आपन्हैं में उलझी ऐलोॅ छेलै । लड़का तेॅ तभियो मैदान में दिन भर फुटबॉल खेलतेॅ रहै आरो अभियो..... मतरकि हेडो तेॅ कम बड़ोॅ खेलाड़ी नै छेलै.....एक दिन मंटू नै ऐलोॅ छेलै, हेडें सब टीचर केॅ बोललकै आरो कहलकै—''हमरोॅ कखनू ट्रान्सफर हुऍ पारेॅ । जेकरा जे सीआर हमरा सें लिखवाना छौं, लिखवाय लियोॅ ।''

धनवन्तरी महाराज के जड़ी रँ काम करलकै हेड मास्टर साहब के कथन आरो वही दिनोॅ सें सब टीचरें मंटू के साथ छोड़ी देलेॅ छेलै । हमरा सें कै दाफी ऊ ई रँ कन्नी कटाय के कारण जानै लेॅ चाहलकै, मजकि हमरो गोबध नै टूटै । एकदम गुम्मी साधी लियै ।

आरो फेनू एक दिन हठाते विन्डोवोॅ । ई तेॅ महीना भरी बादे हमरा सिनी केॅ मालूम होलै कि है विन्डोवोॅ हेड सर के उठैलोॅ छेलै । लड़का सिनी केॅ है कही सनकाय देलकै कि हुनी तेॅ यहेॅ चाहै छै कि ओकरोॅ सिनी के परीक्षा-केन्द्र यहेॅ इस्कूल रहेॅ, पटना तक पैरवी होय चुकलोॅ छै, मतरकि नया सर मंटू एकरोॅ विरोध करी रहलोॅ छै । चाहै छै कि सेन्टर दुसरोॅ जिला, दुसरोॅ इस्कूल पड़ेॅ ।

हेडमास्टर के एतना कहना छेलै कि उठवे नी करलै विन्डोवोॅ । लड़का सिनी दिन भरी सड़क जामे रखलकै । आस-पास के छोटोॅ-मोटोॅ दुकानी के लूट-पाट होय गेलै । नारा, अलगे ताबड़ताड़—सब्भे टीचर सच्चा छै, मंटू टीचर लुच्चा छै ।

शिक्षा पदाधिकारी ऐलै, पुलिस ऐलै । हेडमास्टर साहबें दोनों केॅ आपनोॅ रूम लै गेलै । आध घंटा बात-चीत चललै आरो जबेॅ बाहर निकललै तेॅ एकदम चेहरा खिललोॅ-खिललोॅ लै केॅ । जेकरा देखत्हैं लड़का सिनी के विद्रोहो अलोपित होय गेलै आरो ठीक दुसरे दिन सबनें जानलकै कि मंटू के तबादला होय गेलै । इस्कूल छोड़ै के नोटिसो तुरत मिली गेलोॅ छेलै । है सब एत्तेॅ जल्दी-जल्दी होलै जेकरोॅ कल्पना मंटुओ तक केॅ नै रहै ।

''एक बात कहियौं माट साहब ?'' दुकानदार के प्रश्न सुनी केॅ हम्में चौंकी उठलियै, ''हों कहोॅ ।'' आरो गड़लोॅ नजरी सें ओकरोॅ दिश देखलियै ।

''बुरा नै मानियो माट साहब'' फेनू आपनोॅ दाँया हाथ पूरब दिश दिखैतें कहलकै, ''हौ जे इस्कूल छेकै—मिसनरी वाला, वहौं ओत्तो टीचर नै होतै, जत्तेॅ आपने के इस्कूली में । एकाध टा कम्मे होतै, आरो हमरा तेॅ मालूम होलोॅ छै कि तोरा सिनी

के जत्तेॅ तनखा मिलै छौं, ओकरोॅ अधियो नै मिलै छै—मिशनरी इस्कूल के टीचरोॅ केॅ—एक चौथाइये कहोॅ । आरो देखोॅ, की समय पर आवै छै, की समय पर जाय छै । जेहनोॅ लड़का सिनी अनुशासित, होन्हे टीचर.....बुरा नै मानियोॅ माट साहब, आय तांय ई स्कूली के टीचर सिनी केॅ हड़ताल करतें नै देखलियै, तोरा सिनी हेनोॅ आरो तोरा सिनी केॅ हड़ताल-आन्दोलन के नामोॅ पर सालो भर ठीक सें विद्यालय करतें नै देखलियौं । ई दुकानी पर रं-रं के टीचर सिनी आवै छै, है तेॅ कहना मुश्किल कि कोन-कोन इस्कूली के हुनका सिनी टीचर छेकै, मजकि हुनका सिनी के खुल्लमखुल्ला के बातोॅ सें सबटा बात तेॅ समझै में ऐवे नी करै छै । हमरा अभियो याद छै कि खाली शनिचराहै पैसा केॅ आपनोॅ वेतन समझी, हमरा सिनी केॅ गुरू नें ओतन्हे ज्ञान देलकै, जत्तेॅ तोरा सिनी महिनवारी पन्द्रहो हजार टाका लै केॅ नै दिऍ पारै छौ । वहेॅ गुरू के हमरोॅ रं चेला के सामना तोरोॅ एम. ए., बी. ए. वाला चेलाहौ नै टिकेॅ पारेॅ । झूठ नै कहै छियौं.....माट साहब बुरा नै मानियोॅ, सरकारी इस्कूल के टीचर सें लैकेॅ लड़का सिनी के मोॅन-मिजाज एकदम सरकारिये आदमी रँ । आदमी हताशा में आपनोॅ बच्चा मिशनरी इस्कूली में दै दै छै—आरो जबेॅ अंग्रेजी, अंगरेजियत फैलै छै, तेॅ ओकरो लेॅ चीखै-चिल्लावै छौ कि अंग्रेजी शिक्षा बन्द करौक । आपना पास त्याग के तेॅ भावे नै रही गेलोॅ छै । माट साहब, है तेॅ जानलेॅ बात छेकै कि जहाँ पैसा पावै के हाही बढ़ी जाय, वहां आदमी के ज्ञान पहिले बनरयावै छै । आरो हेनोॅ आदमी सें देश-दुनिया के हित सोचवोॅ गूहोॅ में घी ढारबोॅ ।''

ई सब बात ऊ कोय सिद्ध साधू नाँखी बोली गेलै, जे हमरा तीर नाँखी लागलोॅ छेलै । विरोध करतें कहलियै, ''तोरा सिनी के है ओछोॅ सोच के पीछू दरअसल मास्टर सिनी के बढ़लोॅ वेतन छेकै । तोरा सिनी चाहै छौ कि मास्टर सिनी भिखमंगा नाँखी जिऍ तेॅ बड़ी बढ़ियाँ, नेता-मंत्री पर अँगुली तेॅ उठावेॅ नै पारवोॅ ।''

कि तभिये मंटू हुप सना सामना आवी केॅ साइकिल रोकी देलकै । ऊ जोॅन दिश सें गेलोॅ छेलै, हुन्हैं सें नै आवी केॅ दुकानी के ठीक पीछू वाला एकपैरिया रास्ता सें साइकिल हाँकलेॅ ऐलोॅ छेलै । साइकिल रोकतें कहलकै, ''बुरा नै मानियें विकास, हेडमास्टर साहब सें बात करै में कुछ देर होय गेलै, सब्भे बात सलटाना जरूरी छेलै ।'' कहत्हैं-कहत्हैं वैनें साइकिल केॅ स्टैण्ड पर खाड़ोॅ करलकै आरो नगीचे वही बेंची पर बैठी गेलै । पानवाला केॅ दू ओंगुली दिखाय केॅ दू खिल्ली पान दै के संकेत करलकै आरो फेनू हमरा सें कहेॅ लागलै, ''हमरोॅ खिलाफ लड़का सिनी केॅ भड़काय केॅ वैं हेडमास्टर की समझलेॅ छेलै, वैं वाजी

मारी लेलकै । चहैतियै तेॅ बीच रस्ता में छेकी केॅ.....तबेॅ चलें, जे होलै, अच्छे होलै । ई इस्कूल छेवौ करै एकदम अबहट्ट में—सड़क सें चार मील दूर । कोॅन पदाधिकारी के मोॅन करतै कि धुरदा-गरदा फाँकतें आरो गड्ढा-गुड्ढी पार करी इस्कूली के इन्सपेक्शन करौं । सड़के सें पूछ-ताछ करी केॅ चल्लोॅ गेलोॅ आकि हेडमास्टर साहब के घरोॅ पर ऐलोॅ आरो गेलोॅ । लड़का तेॅ पाँच सौ के करीब छै, मजकि खाली रजिस्ट्रे पर । पचासो टा नै आवै छै । हेडमास्टर लगाय केॅ दस मास्टर छियौ । सब के पारी बान्हलोॅ छौ । बस हफ्ता में तीन दिन आना छै, तीन दिन के हाजरी जोॅन दिन ऐलां, बनाय लेलां । कोय हरहर-कचकच नै । खाली जोॅन दिन वेतन उठाना रहै छौ, वहेॅ दिन इस्कूल के सब मास्टर के मेला लागलौ ।'' आरो ई कहतें-कहतें वैं ठहाका लगाय देलेॅ छेलै ।

हम्में चोर निगाह सें पानवाला दिश देखलेॅ छेलियै, जेकरोॅ हाथ तेॅ कत्था-चूना पर चली रहलोॅ छेलै, मतरकि ओकरोॅ कान हमरै दोनों पर गड़लोॅ छेलै । हमरा लागलै, जेना वैं हमरा सें पूंछतेॅ रहेॅ, ''आबेॅ तोरा की कहना छौं, माटसाब ?''

जेना एक कड़ा सवाल गुरू जीं चटिया सें पूछी देलेॅ रहै आरो हम्में बक्खोॅ । की जवाब देतियै ! बस उठलियै आरो मंटू सें दोनों हाथ मिलैतें साइकिल पर सवार होय गेलियै । हेन्हौ केॅ बहुत बेर होय गेलोॅ छेलै । पौने ग्यारह तेॅ अभिये बजी रहलोॅ छै । जैतें-जैतें पन्द्रह मिनट आरो । तेज-तेज चलतें इस्कूल पहुँचलियै । खैर आभी कोय टीचर नै ऐलोॅ छेलै । लड़का सिनी उछल-कूद करी रहलोॅ छेलै आरो इस्कूल के चपरासी बायां हाथ में घंटी केॅ ऊपर उठैनें दायां हाथ के छड़ी सें टनटनाय रहलोॅ छेलै—टन, टन, टन, टन, टन.....।

माय

''माय कें है मालूम नै छै, कि केना कें बाबू जी के ठठरी उठल्हैं जेठों बेटां मइयो के बोरियो-बिस्तर बांधी देलें छेलै आरो हमरा कहलें छेलै—लै जो माय कें, जहाँ लै जाना छौ । बाप-माय के ऋण खाली बड़के बेटा वास्तें नै होय छै, छोटको लें होय छै ।'' कहतें-कहतें हमरों कंठ भरी ऐलै, ''आरो आय देखों, माय बड़के बेटा कन जाय लें जिद मचैलें छै ।''

''जिद मचैल्हैं सें की होतै, माय कें वहाँ नै जाना दै छै । पचहत्तर के होलै, देह-हाथ के काठी होन्है कें झलकै छै, वै पर आँखी सें लाचार । दिशा-मैदान लें बहियार जैतै आरो नहावे लें ओत्तें दूर नद्दी—काँही कुछ होय गेलै तें लेनी के देनी । की होय छै, एकाध दिन शोरे नी मचैतै । समझी जैतै कि नै लै जाय वाला छै, तें आपने चुप होय जैतै ।'' चॉर बिछती शैलजां आपनों मूड़ी बिना उठैले कहलकै ।

''ठीक कहै छौ'' हम्में कहलियै आरो माय दिश एक दाफी ताकी कें आपनों कोठरी में जाय बैठलियै । एक केस के काम जल्दी-जल्दी निपटाना छेलै । जों आय खाता-खसरा पूरा नै होय छै, तें यहू पार्टी हाथों सें निकलै ही वाला छै, जे रँ कि ऊ कल झुंझवैलों बोली गेलों छै ।

अभी फाइल खोललों नै होव्है कि माय उठी कें हमरों कोठरी चललों ऐलै ''दिलो, की सोचलैं—हमरों जाय के बारे में'' आरो बगले में पड़लों टेबुल पर बैठतें कहें लागलै, ''कै दिनों सें तोरा सिनी सें कही रहलों छियौ कि हमरा मुकुन्द कन पहुँचाय दे । तोहें हमरों बेटा छेकैं, तें वहू हमरों बेटा छेकै । साल

भरी होय गेलै; हुनकोॅ उठला के बाद मुकुन्द के मुँह आय तक नै देखेॅ पारलेॅ छियै ।''

मोॅन तेॅ यहेॅ करलै कि कही दियै—तोरहै कोॅन देखै लेॅ ऐलौ छौ—बाबू मरला के बाद । तोहें जोॅन बेटा केॅ देखै लेॅ बेकल होय रहलोॅ छैं, तोरा नै मालूम कि हुनी तोरा देखतैं कत्तेॅ बेकल होय जैतौ । कहीं दुसरे दिन नै कही दौ, ''माय, जानवे करै छैं कि यहाँ नहाय-धोयाय के कत्तेॅ तकलीफ छै, तोहें दिलो के पास रहै छैं तेॅ हमरौ शांति मिलै छै । शहर के बात अलग छै, घरे में मोॅर-मैदान सें लैकेॅ नहाय-धोआय के सब वेवस्था ।'' हुनकोॅ पास तोरा वहाँ सें हटावै के सौ बहाना छौ ।

शायत माय केॅ ई बतैये लेॅ कि हमरोॅ मोॅन ठीक नै छै, हम्में आपनोॅ कपारोॅ पर दाँया हाथ फेरेॅ लागलियै, तेॅ माय लागले कहलकै, ''देखें, तोहें बहाना नै करें कि हमरोॅ तबीअत ठीक नै । आरो सब काम तेॅ करवे करै छैं, खाली हमरा घर पहुँचाय के नामोॅ पर तोरोॅ हठाते तबीअत खराब होय जाय छौ आकि कचहरी में काम बढ़ी जाय छौ । आरो जो एतन्हैं व्यस्तता छौ तेॅ हमरा देघरोॅ वाली गाड़ी पर बैठाय दे। हम्में असकल्लिये चल्ली जैवोॅ। संते नगर तेॅ जाना छै, गाड़ी दुआरिये होय केॅ तेॅ जाय छै ।''

पहिलोॅ दाफी माय केॅ ई रँ बेकल हम्में देखलियै । इखनी माय केॅ कुछुवो कहना ठीक नै होतै, ई सोची हम्में चुप्पे रहलियै । फाइल बन्द करलियै आरो बायाँ हथेली पर कपार टिकैतें केहुनी केॅ टेबुल पर टिकाय देलियै । माय हमरोॅ मनोॅ के बात गमी गेलै, से बिना कुछ बोललेॅ उठलै आरो आपनोॅ कोठरी में जाय केॅ बैठी गेलै ।

शैलजा ऐलै आरो चाय के प्याली हमरोॅ सामना में राखी देलकै । कुछ बोललै नै । मैयो के कोठरी गेलै आरो वहौं ओकरो सामना में चाय राखी केॅ रसोयघोॅर लौटी गेलै ।

घरोॅ में जबेॅ भी माय जाय के बात उठाय छै, कुछ देर लेली माहौल सनसनावै छै, फेनू पहिलके नाँखी व्यवस्थित होय जाय छै । मजकि आय होनोॅ बात नै होलै । माय जे कुछ कहलकै, वै में गुस्सा के रंग छेलै, जेकरा हम्मी नै, रसोई घर में चाय बनैती शैलजौं सुनलेॅ छेलै । यहेॅ कारण छेलै कि ऊ माय के आगू चाय रखी बाहर निकली ऐलै—बिना कुछ बोललै । नै तेॅ चाय रखतें एतना टा जरूरे बोलै, ''माय जी चाय, जल्दिये पीथिन, नै तेॅ ठंडाय जैतै ।''

माय केॅ चाय पीयै के खूब आदत छै । मतरकि चाय जब तक एकदम नै ठंडाय जाय, तब तांय ठोरोॅ सें नै सटावै । चाय पर जबेॅ गाढ़ोॅ लाल पपड़ी

दूध के छाली रँ जमी जाय, तेॅ माय उठावै । घर भरी जानै छै कि माय केॅ खाली मिट्ठोॅ चाहियोॅ—चाय-वाय सें कुच्छू मतलब नै । मजकि शैलजा केॅ ई बात एकदम नागवार गुजरै । से चाय रखत्हैं कहै—पानी बनाय केॅ नै पीथिन । तबेॅ माय हाँसी केॅ प्याली उठावै आरो शैलजा के मोॅन राखै लेॅ ही ठोरोॅ सें लगाय तुरत राखियो दै । शैलजो केॅ मालूम छै, आबेॅ माय एकरा तब्हैं ठोरोॅ सें लगैतै, जबेॅ चाय ठंडाय केॅ कजरी रंग के होय जैतै ।

आय शैलजा के होना केॅ चाय राखी निकली जैवोॅ मइयो केॅ अखड़लोॅ होतै, हम्में जानै छियै, मतरकि ऊ बोललै कुछ नै । बस आपनोॅ गोस्सा जाहिर करै लेॅ प्याली टसकाय केॅ एक दिश करी देलकै ।

हम्में समझी गेलियै, इखनी आबेॅ घरोॅ में रहवोॅ मुश्किल । नै शैलजा कुछ बोलतै, नै माय । बच्चा-बुतरू सहमलोॅ-कठुवैलोॅ हिन्नें-हुन्नें नुकियैलोॅ फुरतै से अलगे । कै दिन सें बीनू, मंटू आरो तुलसी देखी रहलोॅ छै—जबेॅ-जबेॅ दादी कुछ बोलै छै—माय-बाबू, दोनों दिन भरी अनखनोॅ बनले रहै छै आरो हेना में कखनी केकरा डाँट पड़ी जैतै आरो केकरा धुमक्का—है कहना मुश्किल छेलै ।

कुछ सोचलियै आरो चाय सुढ़की केॅ कमीज-फुलपैंट के मांग करलियै, तेॅ शैलजा रसोय घरोॅ सें नै निकललै । है बात नै छेलै, कि हमरोॅ आवाज ओकरा तक नै पहुँचलोॅ होतै, मतरकि सुनियो केॅ अनठियाय देलकै ।

की करतै आवी केॅ । कोॅन ओकरोॅ बातोॅ के हम्में ख्याल राखै छियै । कहतियै—बाहर जाय छोॅ तेॅ खाय-पीवी ला, आवेॅ कखनी लौटवा, नै लौटवा । हम्मू निश्चिन्त रहवोॅ, नै तेॅ मनोॅ में लागले रहतौ कि.... ।

आरो शैलजा के एतना कहला के बादो की होतियै—बस ऊ बोलतें रहतियै आरो हम्में कपड़ा पिन्ही बाहर निकली जैतियै । आरो जबेॅ-जबेॅ हेनोॅ होलोॅ छै, शैलजा भूखले रही गेलोॅ छै—दिन भरी । कोय-न-कोय मुँहोॅ से ई बात मालूम होइये जाय छै ।

''तुलसी कमीज-फुलपैंट दिएं'' बेटी केॅ आवाज देलियै तेॅ वैं झट सना लै आनलकै आरो बिना नजर मिलैलेॅ वहेॅ टेबुल पर राखी लौटी गेलै, जे टेबुल पर माय कुछ देर पहिलें बैठली छेलै । हमरा ई समझै में देर नै लागलै कि इखनी बच्चो-बुतरू यहेॅ चाहतेॅ होतै कि केन्हौं केॅ बाबू जी घरोॅ सें बाहर निकली जाय तेॅ अच्छा । माय-दादी के हेनोॅ कोप तेॅ बच्चा-बुतरू केॅ सहै के जेना आदत बनी गेलोॅ छै । बाहर निकलै सें पहिलें आपनोॅ आवाज केॅ तेज करतें कहलियै, ''बिनू माय सें कहीं दिऐं—दादियो केॅ ठीक टैम पर खिलाय केॅ खुद खाय लेतौ । हमरोॅ कोय ठिकानोॅ नै—संझो बेरां लौटेॅ पारौं । जों ग्यारह बजेॅ तांय नै ऐलियौ तेॅ

समझी लिऐं—हम्में कोय हौटलों में खाय लेलिऐ ।''

घरों सें निकलै वक्ती नै शैलजां टोकलकै, नै मइयैं ।

आखिर कत्तें चक्कर मारतियै । घण्टा भरी पहिलें कचहरी पहुँची गेलियै । एकदम खाली-खाली हाता । मों र-मोकदमा लड़ैवाला के आवा-जाही तें दू घण्टा बादे होतै । हों रोजनके नाँखी हरिचन्दर आपनों टाइपराइटर पर अंगुली जरूरे उड़ाय रहलों छेलै । कलकों बचलों काम दुसरों दिन सबेरिये आवी कें निपटाय लै छै हरिचन्दर । दस आदमी के परिवार चलाय छै—सेहो एक टाइपराइटर पर । कचहरी खतम होला के बादो एक घंटा तांय खुटखुटैतै रहै छै । कोय मतलब नै—कोय कुच्छू बोलें, नै बोलें ।

हमरा लागलै, हमरा सें दस गुना अच्छा छै हरिचन्दर । दू सौ टाका सें एक्को दिन कम नै कमैतें होतै । कोय-कोय दिन तें तीनो सौ आरो यहाँ तें पचास-सौ पुरतें-पुरतें धतपत । वकील बनिये गेला सें की होय छै, पाँच ठो डिगरिये लेला सें की होय जाय छै । पत्थों के काम करै छै तें पुराने चाँर । जे जत्तें पुरानों वकील, ओत्ते नामी । नामी होय में ओकरा आरो बीस-तीस साल आपनों खटास वकील के पुछड़ी थामले राखै लें लागें । दिन भरी टहलगिरी करों तें आखिर वक्ती हाथ में पचास टाका हेना कें थमैतौं, जेना जमीन्दारी के कोय पट्टा थमैतें रहें । आबें की बतैयै कि ई आरती के पैसा सें जबें खैनी के जुगाड़ तांय मुश्किल होय छै तें परिवार कहाँ सें चलतै ।.....माय कें पेंशन नै मिलतें रहतियै तें नै जानौं की हाल होतियै हमरों । हौ तें महीना पुरत्है माय कें छों सौ मिली जाय छै, तें यादो नै आवै छै कि हमरा सिनी किराया के मकान में रहै छियै । मइयो सब बात समझै छै—तहीं सें तें एक तारीख ऐत्हैं शैलजा कें लै कें बैंकों सें टाका लै आनै छै आरो बाहरे-बाहर मकान मालिक के हाथों में किराया थमाय दै छै । कोय तगादा लें दुआरी तांय आवै—माय कें ई बात एकदम पसन्द नै । ''आरो जबें माय देवघर चल्लों जैतै तबें.....'' हठाते हमरों मनों में विचलित करी दै वाला बिन्डोवों उठलों छेलै—तबें किराया ठीक समय पर केना चुकैवै । मानी लै छियै कि ऊ महीना भरी मकान मालिक ठहरियो जाय, मतरकि है जरूरी तें नै छै कि महीना भरी के बाद माय लौटिये ऐतै । जाय रहलों छै तें लौटै, नै लोटै के बात ओकरों मनों पर छै । आरो ई तें हुऐ नै पारें कि मकान मालिक दोसरों महीना के एक तारीख कें बिना दोनों महीना के किराया लेलें मुक्ति दै दें.....आय छेकै बीस, जों माय जिद्दे ठानी दै छै, तें कल नै परसूं ओकरा पहुँचाइये लें लागतै.....पिछले महीना सें जिद् करी रहलों छै, ऊ तें हम्में तीन दिन तांय बीमारी के बहाना करी बिछौना पर पड़लों रहलियै तें मांय

जाय के नाम पर मुँह बान्ही लेलकै.....एकदम चादर तानी कें सुतले रही गेलों छेलियै । शैलजो परेशान रहलै—नै देह-हाथ गरम छै, नै कँपकँपी । हुएँ पारै छै—देह-हाथ के ऐंठन रहें आकि फेनू माथों दरद—यही लें लेटलों रहै छियै आरो माय आपनों बिछौना पर बैठलों-बैठलों बात कें भाँपै के कोशिश करै, आखिर हमरा होलों छै की ? माय कें मालूम छै—बाबू के मरला के ठीक सोलमे दिनों बाद, जबें हमरों पेटों में दरद उठलों छेलै, तें पक्का दस दिन तांय सौंसे घोंर उधियाय देलें छेलियै; बाबू के मरै के दुक्खे जेना खतम होय गेलों छेलै । शायत वहें खयाल करी, जबें हम्में बिछावन पकड़लियै तें माय के चेहरा तीनो दिन उड़ले-उड़ले रहलै । शैलजा जेन्है कें हमरों घरों सें निकलै कि आपनों आँखी पर मोटों शीशा के चश्मा तुरत लगाय, बैठले-बैठले ओकरों चेहरा के भाव पढ़ै के कोशिश करै—कहीं तबीअत ज्यादा तें खराब नै छै ।

.....ऊ दिन जेन्है शैलजा हमरों कोठरी सें निकली कें माय लुग गेलै तें माय बड़ी फुर्त्ती सें साड़ी के अँचरा से आपनों चश्मा के शीशा बारी-बारी सें पोछी आँखी पर चढ़ैलकै आरो ओकरों चेहरा बड़ी गौर सें देखलकै, जेना शैलजा के चेहरा पर हमरों तबीअत के उतार-चढ़ाव लिखलों रहें । हमरा हँसी आवी गेलै । माय तें देखें नै पारै—सवो दाफी कहलें होवै—माय ठंडा आवी गेलौ, अबकी दाफी मोतियाबिन्द के ऑपरेशन करवाय ले, मतरकि ओकरों तें बस एक्के जिद, ''हमरा लें तें दोनों बेटा—दू आँख । बेटा, आबें तें तोरहे सिनी हमरों आँख । ई आँख रहें कि जाय, की फरक पड़ै छै ।''

''की बात छै दिलिप जी, आय एत्तें भोरे-भोर । तोरों कचहरी तें दस-ग्यारह के बादे जमै छौं'' हरचिन्दर नें टाइप मशीन पर आपनों औंगरी बिना रोकल्हैं, हमरों दिश देखतें कहलकै, ''गृहयुद्ध सें लौटलों छौ की ?''

कहतें-कहतें हाँसें लागलै हरिचन्दर । पान सें करियैलों ओकरों बत्तीसो दाँत अचोके दिखावें लागलै । कारों देह पर कारों रँ के कपड़ा सालो भर चढ़ैलें हरिश्चन्दर बारहो घण्टा पान चबैतें रहै छै—यहीं सें ऊ बोलै-हाँसै नै के बराबर छै, जबें एकरों बिना काम्हे नै चलें, तभिये ऊ हाँसै-बोलै छै । आरो जखनी हाँसै, तें सामना ताला के कमीज आरो टाइप पर राखलों कागज छींटदार होन्हैं छेलै । जेना मुँह नै रहें—फुहारा ।

हम्में देखलियै ओकरों हँसी हठाते रुकी गेलों छै । मतलब साफ छेलै कि मशीन सें लागलों कागज कुछ ज्यादाहे रंगी गेलों होतै । हमरौ हँसी आवी गेलै । कोंन हेनों पार्टी नै होतै जे यहें कारण हरिचन्दर सें उलझतें नै होतै आरो फेनू नरमो नै पड़ी जैतै होतै । उपायो की छै—हरिचन्दर अकेला आदमी छेकै जे

हिन्दी टाइप करै छै, नै नरमैतै तेॅ कल सें कामो नै होतै । हमरोॅ मनोॅ में ऐलै, जों हम्मूं हिन्दी टाइप करै लेॅ जानतियै तेॅ हमरोॅ स्थिति आरो कुछ होतियै ।

एकदम सें उचाट होय गेलै मोॅन । जरूर हमरोॅ चेहरा एत्है मनझमान होतै कि जे भी देखतै, वहीं टोकतै । उठलियै आरो हरिचन्दर केॅ बिना कोय जवाब देल्हैं सीधे सड़क पर आवी गेलियै । मोॅन होलै कि जयप्रकाश उद्यान चल्लोॅ जाँव । कै दाफी तेॅ वाँही रही केॅ दिन काटी देलेॅ छियै—मोॅन उचाट होला पर ।

मतरकि हेनोॅ चाहतौं, हम्में हुन्नें जाय के बदला आपनोॅ घरोॅ दिश मुड़ी गेलियै—पता नै, घरोॅ में कोॅन कुहराम मचतें रहेॅ, ओकरोॅ भुखले चल्लोॅ ऐला पर । जों मइयौं कौर नै उठैलकै तेॅ आरो विपद । कै दाफी हेनोॅ होइयो चुकलोॅ छै । आबेॅ माय नै खैतै तेॅ शैलजौं केना खैतै । आरो जबेॅ दोनों भुखलोॅ छै तेॅ तुलसिये, बीनू आरनी के कंठोॅ सें कत्तेॅ कौर नीचेॅ निकलतै । बस ऊ दिन सौंसे घोॅर के उपास.....जबेॅ उपास के सचमुचे नौबत आवी जाय ? ऐतै तेॅ देखलोॅ जैतै, हेनोॅ दिन ऐलोॅ नै छै की ? हम्में केन्होॅ केॅ नै भुलावेॅ पारौं ऊ दिन—हफ्ता भरी के बंदी होय गेलोॅ छेलै—बीच कचहरी में हौ रं के नामी वकील वीरु बाबू केॅ गुण्डा भरनांटी दिखाय देलकै । हेनोॅ बंदी होलै कि कचहरी में भंक लोटेॅ लागलै, तबेॅ मोॅर-मुकदमा लड़ैवाला के दूर तांय छायाहौ नै दिखावै । पैसा आनतियै कहाँ सें ? एक शाम खाना चलै, तेॅ एक शाम उपासे ।

जों सुक्खोॅ के दिन आवियो गेलै तेॅ ऊ दिन केना केॅ भूलेॅ पारवै—सड़क के किनारी गुपचुप के खाड़ोॅ खोंचा । पाँच छोॅ खायवाला के पाँत । खोंचावालां देलेॅ जाय आरो खवैयां मुँहोॅ में देलेॅ जाय । वैंने दूरे सें देखी लेलेॅ छेलै—बिनू-मिन्टू खोमचा सें थोड़ोॅ दूरी पर खाड़ोॅ छै । ओकरोॅ नजर गुपचुप के निकालै आरो उठावै के साथ उठी-गिरी रहलोॅ छेलै । हमरा देखत्हैं दोनों छरबिन्न नाँखी उड़तें घरोॅ में नुकाय गेलै—मारे डरोॅ सें.....हम्में मारतियै की, खुद्दे मरी गेलोॅ छेलियै—जे बाप आपनोॅ बच्चा केॅ दू शाम ठीक सें भोजन नै दिएॅ पारेॅ, ओकरा बाप बनै के की अधिकार । सौ बच्चा के हत्या से भी बड़ोॅ पाप छेकै—एक बच्चा केॅ भूखे रखी केॅ बाबू बनवोॅ ।

गुपचुप वाला बात याद ऐल्हैं हम्में एकदम व्याकुल होय जाय छियै । चाहै छियै—बाते केन्हौ केॅ भुलाय दौं, मजकि ऊ तेॅ तेलन्होॅ कपड़ा पर जमलोॅ धूल नाँखी उतरवे नै करै छै, जबेॅ तांय कोय जब्बड़ बात नै सामना में आवी जाय।

00

''अरे दिलो, आय एत्तेॅ जल्दी । आय कचहरी नै छौं की ?'' दुआरी पर गोड़ राखत्हैं मौसीं टोकलेॅ छेलै ।

''अगे मौसी ।'' हम्मू आपनोॅ चेहरा पर कठहस्सी लानतें कहलियै, ''कखनी ऐलै ? हमरा तेॅ फुर्सते नै मिलै छै कि तोरा सें भेटोॅ-गांट हुऍ पारेॅ । कचहरी के कामोॅ सें मुक्तिये नै मिलै छै । आरो घरो पर वहेॅ हलफनामा-तफलनामा सें उलझतेॅ रहोॅ । मजकि तहूँ तेॅ हिन्नें गोड़ नहियें धरै छैं—जब तांय कोय भारी काम नै आवी जाय । की झूठ कहै छियौ ?''

''नै, झूठ तेॅ नै बोलै छोॅ । की करियै, नौकरी जोगै में साँसो लै के फुर्सत नै । हाय-हाय करी केॅ बिहानै उठोॅ, चौका-चुल्हा करोॅ, बच्चा केॅ खिलावोॅ, फेनू घोॅर लौटोॅ तेॅ वहेॅ माया ।'' मौसी जे दुआरी के बरामदे पर बिछैलोॅ खटिया पर बैठली छेलै, थोड़ोॅ खिसकी केॅ हमरोॅ वास्तें जग्घोॅ बनैलकै आरो वही जग्घा केॅ दू-तीन बार थमथपैतेॅ हमरा बैठै के इशारा करलकै ।

हम्में जबेॅ वहेॅ जग्घा पर बैठी गेलियै तेॅ मौसी कहलकै, ''तोहें ठिक्के कहलौ, मौसी बिना काम के हिन्नें आवै नै पारेॅ । अइयो कामे लै केॅ ऐलोॅ छियै'' आरो फेनू दिलो के कुछ कहला के पहिले कहनौ शुरू करी देलकै, ''है कहै छियौं दिलो, तोहें माय केॅ देवघर पहुँचाय कैन्हें नी दै छौ ? आबेॅ माय के औरदे कत्तेॅ दिन ? जबेॅ तांय जीत्तोॅ छै, जे चाहै छै, पूरा करी देलोॅ करौ । तोरोॅ बाबू नै रहलौं तेॅ की, हुनकोॅ पूरा-पूरा जिनगी तेॅ वांही बितलै । आबेॅ जोॅन-जग्घा सें हुनकोॅ ठठरी उठलै, ऊ जग्घा के प्रति मोह-माया तेॅ होवे नी करतै नूनू । माय कुछ पैसा-कौड़ी तेॅ मांगै नै छौं, से तेॅ तोरोॅ बाबूं आपनोॅ पेंशन सें दीदी के बचलोॅ जिनगी केॅ खेपै लायक वेवस्था करिये गेलोॅ छौं । आबेॅ बचलै—लै आरो पहुँचाय आवै के । से तेॅ तोरहै दोनो भाय केॅ नी करै लेॅ लागतौं । जानवे करै छौ कि माय केॅ सूझै पाकै छौं नै । जों सूझवे करतिऐ, तभियो की ? दीदी केॅ देश-दुनिया के की पता । कभियो बाबूं दुआरी सें बाहर तेॅ निकलेॅ नै देलखौं । शादी के बाद घुरी केॅ नैहरा नै देखलकै दीदीं । कहीं देखलेॅ छौ हेनोॅ मिडिल पास लड़की आकि जनानी, जेहनोॅ दीदी छै ? जबेॅ दीदी वास्तें देहरी के बाहर अन्हारे अन्हार छै, तबेॅ तेॅ तोरा समय निकाल्हे लेॅ पड़तौं । कोन मारेॅ कंधा पर बंधी राखी केॅ तीरथ-वैरांगन कराय लेॅ माय कही रहलोॅ छौं, बस देवघर तांय तेॅ पहुँचाय के बात छै । भोरे जैबा तेॅ सँझकी तांय लौटी ऐवा ।'' मौसी ई सब बात एक्के साँसोॅ में बोली गेलै ।

''मौसी, तोहें समझै नै छैं, ई सब बात थोड़े छै कि हम्में माय केॅ देवघर पहुँचाय

लें नै चाहै छियै । तोहें समझै कैन्हें नी छैं—माय कें आबें आँख-कान तें रहलै नै । आबें ओत्तें समांगो नै रहलै कि आपनों साड़ियो थपकारी लें; कुइयाँ सें पानी खीचै के तें बाते छोड़ी दैं—जबें यहाँ चापाकल के हेंडिलो उठावें-बैठावें नै पारें छै । यहाँ छै तें छोटकी पुतोहू सेवा करी दै छै, वहाँ के नौड़ी बैठलों छै—माय कें हुलकियो ताकै वाली ।''

हम्में है सब बात फोकनैले मनों सें कहलियै । हमरा जानै में ई तनियो टा देर नै लागलों छेलै कि हमरों घरों सें निकलत्हैं माय मौसी कन पहुँची गेलों होतै आरो सबटा हाल सुनाय देलें होतै । दसे घोंर के बाद तें मौसी के घोंर छै । शैलजां खुद दू-तीन दाफी माय के साथे चली कें ओकरा मौसी घोंर तक जाय वाला रास्ता चिन्हवाय देलें छै । आबें माय असकल्लिये, जबें होलों मौसी कन पहुँची गेलों । तें आय पंचैती करै लें माय मौसी कें बुलाय आनलें छै । ''देखों बेटा, वहाँ दीदी कें कोय देखैवाला छै, आकि नै छै, आबें ई बात कें लै कें तोहें माय कें जाय सें नै रोकों । जों कोय नै छै तें जेठों बेटा तें छै।'' ''मौसी, नै जानै छैं कि तोहें जहाँ माय कें लै जाय लें कही रहलों छैं, वहीं ठां सें माय.....''

''छोड़ों-छोड़ों ई सब बात ।'' मौसी बीचे में हमरों बात काटतें हुएँ कहलकै, ''होन्हौ कें माय तें बेटा के सब अनकुट्ठों बेवहार पचाय लें ही होय छै । तोंही की बच्चा में माय कें कम सतैनें छौ । एक दिन गेंद वास्तें तोरा दू टाका नै देलें छेलौं तें माय कें केन्हों पीटी देलें छेलौ, जेना कोय बुतरू कें बड़काहौ नै पीटै छै । दीदी मूड़ी झुकाय कें तोरो सब मार सही लेलें छेल्हौं, मतरकि आपनों नै मूँ खराब करलें छेलै, नै आपनों हाथ । आबें बड़का बेटा जे भी करतै, एकरा सें बेसी तें नहियें नी करतै ।''

मौसी कहीं सें गुस्सा में छेलै । मजकि ओकरों गोस्सा सें कहीं ज्यादा ओकरों बात हमरा लागी गेलै । एकदम गुम होय गेलियै । हमरों चेहरा उतरी ऐलै, जेना कोय पानी ढारी कें आग बुझाय देलें रहें । हम्में पासी पर दोनों हाथ के बल दै कें उठै लें चाहलियै ही कि मौसी हमरों हाथ पकड़ी लेलकै, ''दिलो, माय कें कल बिहानी जरूरे देवघर पहुँचाय दौ । भाय आरो गाय के सींघ भले जन्मों सें अलग रहें, माय के मोंन आरो कोख कभियो बँटलों नै रहै छै । फेनू माय कोन मारे उमिर काटै लें जाय रहलों छै, महीना पुरतें नै पुरतें देखियौ नी, यहाँ आवै लें धड़पड़ करें लागतौं । हम्में जाय छियौं दिलो । देखियों माय के मोंन कलपित्तों नै हुएँ ।''

हमरों कोय बोली नै फुटलै । मौसी उठी कें बाहर निकली गेलै । माय

आपनोॅ कोठरी में बैठली-बैठली सब बात सुनी रहलोॅ छेलै आरो शैलजा शायत रसोय घरोॅ में होतै, यहीं सें मौसी के जाय के बारे में ओकरा कोय इलिम नै होलै । आरो हमरोॅ तेॅ मने एत्तेॅ टूटी गेलै कि मौसी केॅ रोकै वास्तें नै मुहे खुललै, नै हाथे बढ़लै ।

ऊ दिन रात मरुवैलोॅ-मरुवैलोॅ हेनोॅ रहलै । वहेॅ माहौलोॅ में आधो रात के बाद हमरोॅ आरो शैलजा के बात होलोॅ छेलै, जबेॅ माय साथें बच्चा-बुतरू सुती गेलै । हमरोॅ भूल छेलै कि शैलजा मौसी के बात नै सुतलेॅ होतै। जखनी मौसी बोलै छलै, तखनी शैलजा चॉर बीछै के बहाना ऐंगनाहै में बैठली छेलै। सें शैलजाहैं सब तरह सें सोची-विचारी केॅ कहलकै, ''जों माय यहेॅ चाहै छेथिन, तेॅ तोहें हिनका पहुँचाय आवौ—जे होतै, जेना होतै, देखलोॅ जैतै ।''

''तोहें एकदम ठीक कहै छोॅ । हम्मू सोची लेलेॅ छियै, बिहानके गाड़ी धरी केॅ माय केॅ देवघर धरी ऐवै । माय कहीं है तेॅ नै सोची लेलेॅ छै कि ओकरहै सें हमरोॅ सब भांगटोॅ संभरै छै । रहोॅक जेठा बेटा कन, जेठे बेटां आग देतै ।''

आरो विहान होतेॅ न होतेॅ शैलजां माय केॅ जगाय देलकै ।

देवघर जाय के बात सुनिये केॅ माय झबझब आपनोॅ कपड़ा-लत्ता एक प्लास्टिक वाला झोली में समेटी लेलकै । शैलजा रास्ता के नास्ता लेॅ रसोईघर घुसी गेलोॅ छेलै ।

फरचोॅ होय पर छेलै । गाड़ी ठीक पाँच बजै छै । देखलियै आपनोॅ झोली उठाय सें पहलें मांय बिनू, मिंटू आरो तुलसी केॅ गालोॅ केॅ एकेक करी केॅ चुमलेॅ छेलै ।

हमरे नाँखी रास्ता भर माय चुप्पे रहलै । गाड़ी पर चढ़ै वक्ती चेहरा पर जे चमक दिखाय पड़लोॅ छेलै, ऊ अनचोके गाड़ी के खुलत्हैं आलोपित होय गेलोॅ छेलै । बीचोॅ-बीचोॅ में माय हमरोॅ दिश आँख करै—शायत कुछ कहै लेॅ चाहै, मतरकि हमरोॅ नजर ड्रायवर दिश तनले रहलै ।

गाड़ी घरोॅ के दुआरिये होय केॅ देवघर बस स्टैण्ड पहुँचै छै । कन्डक्टर केॅ पहिलैं बताय देलेॅ छेलियै, सें दुआरिये पर गाड़ी रुकलै । सामाने की छेलै—बस एक झोली। ओकरा लेल्हैं माय साथ नीचेॅ उतरी ऐलियै। झपटी केॅ झोली ठो दुआरी पर राखलियै आरो दौड़ी केॅ गाड़ी पकड़ी लेलियै । गाड़ी चलै पर होलै तेॅ माय दिश देखलियै—माय के दोनों हाथ आर्शीवाद दै लेॅ ऊपर उठलोॅ छेलै ।

दुपहरिया के दू बजतें होतै, जखनी हम्में घोॅर लौटलियै । बिनू, मंटू आरो तुलसी इस्कूले में होतै—ई जानले बात छेलै । शैलजा दुआरिये पर ठाड़ी

हमरो॑ इन्तजारी में छेलै ।

दुआर पर गोड़ राखत्हैं अनमनैलो॑ ढंगो॑ सें सूचना देलियै, ''पहुँचाय ऐलियै, बड़के बेटा के॑ पालौ—छायौ झबरले गाछ के॑ मिलै छै, ठूँठ के॑ नै.....'' कि हठाते अकचकैते॑ ठाड़ी शैलजा सें पूछलियै, ''अरे ई तोरो॑ हाथो॑ में ? .... लगै छै, माय हड़बड़ी में लैले॑ भूली गेलै ।'' फेनू झुंझलैते॑ बोललियै, ''आबे॑ एकरा पहुँचावै ले॑ फेनू देवघर दौड़ो॑ ।''

हम्में देखलियै हमरो॑ बात सुनत्हैं शैलजा के आँख डबडबाय ऐलो॑ छै । कहलकै, ''से बात नै छै, जाय वक्ती माय ई हमरो॑ हाथो॑ में थमाय देलकै, ई कहतें कि होना के॑ हम्में तीनो महिना नै ठहरवौं, तबे॑ माय के ममता । वैं कहतें ते॑ रुकियो जाय ले॑ पड़े॑ । तोहें घरो॑ के ख्याल राखियो॑ । है पास बुक छौं । सब पन्ना में दसखत करी देले॑ छियौं । होना के॑ एतना टा टाका सें होवे की करै छै—तहियो ।''

शैलजा माय के एकेक बात सुनाय रहलो॑ छेलै आरो हमरो॑ आँखी के सामना दोनों हाथ उठैनें माय फेनू ठाड़ी होय गेलै ।

कहानी के कोख

स्टेशन पहुँचला पर सतेन्दर कें पता चलै कि विक्रमशिला आवै में अभी दू घण्टा देर छै । ओकरों मों न एकदम सें भिन्नाय गेलै, मतरकि आबें वैं करै की पारै छेलै । है संकट टालौ पारें छेलै, जों घरै सें गाड़ी आवै के बारे में जानकारी लै लेलें होतियै । घर के टेलीफोन खराब छेलै तें की, बूथे कत्तें दूर छेलै—घरों के दुआरिये पर तें । मतरकि ठीक वक्ती पर ओकरों बुद्धि एकदम सें सठियाय जाय छै । आबें चक्कर मारों हिन्नें-हुन्नें टीशन पर आरो ताकतें रहों उल्लू जकाँ सवारी आरो रेल डिब्बा कें । कि तखनिये ओकरा क्षेम सुमन के खयाल ऐलै ।

स्टेशन के ठीक हौ पार के मुहल्ला में रहै छै क्षेम सुमन । रिटायर होला के बाद तें क्षेम कहूँ बाहर निकलवो नै करै छै—सतेन्दर नें मने-मन सोचलें छेलै, होतै तें घरे में । नै होतै तें ओकरी पत्नी सपना तें जरूरे घरों में होतै । तखनिये ओकरों मनों में यहू विचार उठलै, जों क्षेम घरों में नै होतै आरो सपना होवो करै छै, तें एकरा सें होइये जाय छै की ? ज्यादा-सें-ज्यादा सपना एक-दू मिनिट लेली ओकरों पास बैठतै, फेनू घरों के है काम, हौ काम लेली ऊ बौला-बौला । नौकर भी राखलें छै क्षेम नें, लेकिन रसोय के एक काम नै करें पारें नौकर । सब टा काम सपनाहै कें करै लें लागै छै, जों क्षेम कें केन्हौ मालूम होय जाय कि नौकर नें आलू काटलें छै, आकि चॉर धोलें छै, तें हौ दिन क्षेम उपासे पर रहतै । खाना तें खाना, घरों के कपड़ो-लत्ता नै छुऍं पारें नौकरें । नौकर खाली बाजार सें समान लानै वास्तें छै आरो बगीचा के फूल-पत्ती के गाछों कें पटावै-देखै लेली ।

बाकी तें सपना कें टुकनी रङ उड़ी-उड़ी कें देखै लें लागै छै.....हेनों हालतों में वहाँ बैठवो तें मुश्किल । फेनू सतेन्दर के मनों में यहू ऐलै कि क्षेम बाहरो जाय छै तें बस चार-पाँच मिनिट लेली । जों ऊ हिन्नें-हुन्नें गेलों होतै तें यै बीचों में लौटियै ऐतै.....आरो कोंन फेरू हम्में वहाँ रात बिताय लें जाय रहलों छियै। घन्टा-दू-घन्टा के तें बात छेकै । फेनू डेरे कोंन दूर छै, नै होतै तें घूमी ऐवों। आवै-जावै में कुछ समय तें हेन्हौं कें कटिये जैतै । स्टेशन पर बोर होला सें तें यहें बढ़िया ।

द्वार पर आवी कें सतेन्दर नें जेन्हैं कुंडी खटखटैलें छेलै, तें द्वार क्षेम नें ही खोललें छेलै । दोनों के चेहरा पर एक खिललों मुस्कान उभरी ऐलों छेलै ।

''आव सतेन्दर आव, आबें तें हिन्नें आन्है-जाना छोड़ी देनें छैं । की कोय नया रोजगार फेनू धरी लेलैं की ?''

''धूरो, नया रोजगार, आरो ई शहर में ! हों एकटा अखबार में लिखबों शुरू करी देलें छियै ।'' कहतें-कहतें सतेन्दर जबें कमरा के भीतर आवी गेलै तें क्षेम नें केबड़ा ओढ़काय देलकै ।

''सुनै छों, सतेन्दर ऐलों छौं, आबें तें ई सब बड़का आदमी होय गेलौं भाय । अखबार में लिखना की आसान बात छेकै ।'' ई कहतें-कहतें क्षेम गद्दावाला लम्बा कुर्सी पर आपनों दोनों हाथ फैलाय कें बैठी रहलों छेलै, जेना कोय बड़ों पक्षी पंख खोली कें आकाश में उड़ै ही वाला रहें । तब तांय सतेन्दरो वहीं पर पड़लों एक गद्दै वाला कुर्सी पर बैठी गेलों छेलै ।

''की कहलैं, अखबार में लिखना शुरू करी देलें छैं.....'' आरो ई कही कें ऊ हाँसें लागलों छेलै ।

सतेन्दर कें ऊ हँसी में छुपलों उपहास साफ-साफ पकड़ै में आवी रहलों छेलै, मतरकि ऊ यहौ जानै छै—क्षेम के ई पुरानों आदत छेकै । तहियो ओकरों बात सुनी कें ऊ मनझमान होय गेलों छेलै । कि तखनिये सपना ट्रे में तीन चाय लै कें आवी गेलों छेलै आरो मुस्कैतें हुएँ कहलें छेलै, ''आबें ऐतै चाय के मजा । चाय-वाय वक्ती कोय लेखक-कवि सामना में रहै छै तें चाय के मज्हे बढ़ी जाय छै ।''

ई बात पर सतेन्दर के चेहरा हठाते खिली उठलों छेलै आरो कहनें छेलै, ''से बात नै छै, चाय के मजा तें ई बातों पर निर्भर करै छै कि साथ दै वाला के छेकै ।''

सतेन्दर नें ई बात शैत क्षेम कें सुनाय कें ही कहलें छेलै, से वैं ई कही कें ओकरों दिश देखलें छेलै । लेकिन क्षेम ओकरों बात सुनलै नै छेलै । ऊ

तें हाथ में एकदम छोटों रँ के नाव नुमा रिमोट सें टी० वी० के सिरियल धांय-धांय बदली रहलों छेलै, जेना ओकरा कोय सिरियले पसन्द नै रहें—सब फालतू ।

तखनी क्षेम सचमुचे में काफी खिललों दिखी रहलों छेलै—शैत तुरत नहाय कें ऐलो छेलै । खुल्ला देह पर गमकै वाला पाउडर, जे गल्ला सें शुरू होय कें छाती तांय जाय कें हल्का होय गेलों छेलै । फेनू गल्है में स्फटिक पत्थर के माला साथें छोटों दाना के रूद्राक्ष माला, जे चाँदी के तार आरो दाना सें गुथैलों रहै—बड़ी शोभी रहलों छेलै क्षेम ।

सतेन्दर के आँख हठाते घुरी कें सपना पर लौटी ऐलै ।

भारी उमस के बावजूद, शैत सपना कें नहाय के मौका नै मिललों छेलै । जों नहैलें होतियै तें ओकरो केश संवरलों होतियै, साड़ी पर ढेर सिनी सिलवट नै होतियै, तबें चाय लानै के क्रम में कुच्छू ज्यादाहै सावधानी होतियै कि आँचल कंधा सें ज्यादा नै ससरै आरो तबें हेना कें ऊ बैठवो नै करतियै, जेना पलंग में दोनों टांग मोड़ी कें आभी बैठी रहलों छेलै ।

''अजी, ई अच्छा लागै छै कि तोरों दोस्त ऐलों छौं आरो तोहें टी० वी० के सिरियल घुमाय में मग्न छौ ।''

क्षेम नें सपना के यै बातों पर कुछुवो नै प्रतिक्रिया देखैनें छेलै, जेना ई बातों के कोय मान्हे नै रहें । ऊ होन्है कें रिमोट सें सिरियल घुमैंतें रहलै । फेनू ऊ सतेन्दर दिश घुमी कें कहलकै, ''देखै छैं, केन्हों साफ-साफ तस्वीर उतरै छै । ई रंगीन टी. वी. के पुर्जा-पुर्जा विदेश के बनलों छेकै । बड़ी शौक सें महीना भरी पहिलैं तें खरीदलें छियै ।''

''आबें खरीदलें छों, तें इखनी तें बंद करों, दोस्त ऐलौं छौ, की सोचतौं—हम्में ऐलों छी, आरो दोस्त टी० वी० देखै में मशगूल छै ।''

क्षेम नें आपनों बात कहै तांय ही हिन्नें मुड़ी राखलें छेलै, फेनू वहें सिरियल दिश । आबें ऊ हेनों सिरियल बार-बार उतारी रहलों छेलै, जेकरा नंगा नाच नहियो कहलों जाय, तें ऊ नंगे नाच नाँखी छेलै ।

''देखै छौ नी, यहें तोरों दोस्त के पसन्द छेकौं आरो मनाहौ करों तें कोय असर पड़ैवाला नै । संगति के हवा लागलों छै ।''

क्षेम कें जेना हठाते करेन्ट लागी गेलों रहें । वैंने घुमी कें कड़ा आँखी सें सपना कें देखलें छेलै, मतरकि बोललों कुछ नै छेलै । खाली मुड़ी टी० वी० दिश फेनू घुमाय लेनें छेलै ।

एक अजीब किसिम के तनाव कोठरी में हठाते पसरी गेलों छेलै, जे नै तें हमरा सें छुपलों छेलै, नै केकरौ सें । शैत, माहौल कें हल्का बनाय के

कोशिश में ही हम्में सपना दिश होतें हुएँ कहलें छेलियै, ''हों, तोरा एक बात तें कहना भूलिये गेलियौं, हम्में तोरा पर एक ठो कहानी लिखलें छियौं.....याद छौं नी, पहिलों दाफी तोरा कन जबें ऐलों छेलियै आरो तोरों हौ परेशानी.....''

सतेन्दर के बातों के सचमुचे में ओकरा पर अचूक प्रभाव पड़लों छेलै, जेना काँही कुछ होले नै रहें ।

''मतरकि कहानी में तोरों जग्घा पर सब कुछ झेलै छै तोरों पति—यानी हमरों दोस्त ।'' सतेन्दर नें चाय के एक लम्बा घूँट लेतें कहलें छेलै आरो सपना जे हाथों में चाय के प्याली कें उठैलें ही छेलै, नीचें राखतें हुएँ कहलकै, ''से कैहिनें ?''

''हमरा लागलै कि जे हमरा कहना छै, ऊ क्षेम कें ही सामना राखी कें ठीक-ठीक सें मुक्त होय कें कहें पारौं । तोरा कहानी में राखला सें हम्में स्वभाविक नै होवें पारतियै; यै लेली ।''

सतेन्दर नें देखलकै, सपना के चेहरा अनचोके मनझमान पड़ी गेलों छेलै ।

''कहिनें ? की भेलौं ? कहानी के बात अच्छा नै लागलौं की ?''

''से बात नै छै । दरअसल, हम्में सोचें लागलों छेलियै, कि ऊ कहानी में तोरों दोस्त के जग्घा में हम्मी रहतियै तें की होतियै ! कैहिनें हर दाफी थोड़ों-टा सुख के नामों पर जनानी मात खाय जाय छै । जे कहानी हमरा सें जुड़लों छेलैं, ऊ जग्घा पर हमरों पति केना आवी गेलै ।'' कहतें-कहतें ओकरों चेहरा एक मुलायम विरोध सें भरी गेलों छेलै ।

''तोहें समझै नै छौ, दरअसल.....''

''हम्में खूब समझै छियै सतेन्दर जी.....कोय स्त्री के सुख-दुख हसौती कें पुरुष जत्तें महान होय जाव, मतरकि है बात तहूं जानतें होभौ—पुरुष के जीवन में कोय कहानी नै होय छै, कहानी तें होय छै जनानी के जीवन में ।'' कहतें-कहतें सपना नें चाय के प्याली उठाय कें ठोरों सें लगाय लेलें छेलै । बस हल्का-हल्का चुस्की लेतें रहलै, ओकरों बाद ऊ कुछ बोलवो नै करलै ।

क्षेम होन्है कें हाथवाला रिमोट सें सिरियल घुमाय में मस्त छेलै आरो हम्में ई सोच सें चुप होय गेलों छेलियै कि जना अनचोके हमरा सें कोय बड़ों अपराध होय गेलों रहें । गोबध लागी गेलों छेलै हमरा ।

जहाँ न अपनो कोय

देखै के तेॅ साल भरी सें जयन्तो ऊ जग्घोॅ केॅ देखै, मजकि वहाँ पर गुमटी बैठाय के साहस ओकरा केन्हौ केॅ नै हुऐ । रोज शाम केॅ चौबटिया पर बनलोॅ शहीद चौरा पर ऊ बैठी जाय आरो वांही सें जग्घोॅ केॅ देखी-देखी मने-मन खुश हुऐ; सोचै—जल्दिये गुमटी बैठाय लेना ठीक होतै, केकरो नजर गड़ेॅ पारेॅ । की पता, कल्हे वहाँ कोय टटिया केॅ घेरी खाड़ोॅ होय जाय आरो परसुवे वैंमें फोॅल-फलारी के दुकान खुली जाय । फेनू तेॅ हेनोॅ सोना रं जग्घोॅ हाथोॅ सें गेले समझोॅ ।

सोचतें-सोचतें जयन्तो बेकल हुऍ लागै, ओकरोॅ सब खुशी पानी रं बहेॅ लागै । फेनू आपना केॅ ढाढसो दै, ''धुर, ई निरघिन जग्घा पर के टटिया घेरी केॅ गुमटी बैठाय के बात सोचतै । ई तेॅ हम्मेॅ नी सोचै छियै कि ई सोनोॅ रं जग्घोॅ छेकै, मजकि आरो केॅ यहेॅ रं लागतेॅ होतै की ? दीवाल सें सटलोॅ-सटलोॅ है नाली पहिलें तेॅ बिहारी स्कूल के सीमाना तांय जाय केॅ खतम होय छेलै, आबेॅ तेॅ नाली के मुँहे ठो जग्घोॅ-जग्घोॅ सें मुनाय गेलोॅ छै । नालिये पर ईटोॅ-माँटी के पिंडा आरो पिन्डा पर चलै छै मूढ़ी-घुमनी, अंगूर-बेदाना सें लैकेॅ सैलून साथें-साथें पैंट-पतलून के बेचै के धन्धा । नाली के पानी बहै छै—बीच सड़क होय केॅ—शिवाला के एकदम सामना सें—पिछुवाड़ी होलेॅ नै । ओकरोॅ पिछुआड़ी वाला तेॅ मुँहे मुनाय गेलोॅ छै ।''

जयन्तो केरोॅ मोॅन सोचतें-सोचतें एकदम भिन्नाय उठलै, ''यहाँकरोॅ आदमियो सिनी धन्न छै । देखै छै कि नाली बन्द होय गेलोॅ छै, तहियो खाड़ोॅ

होय कें पेशाब करवे करतै, नाली नाली रहलै; जे मूत बहतै ! दीवाली सें ससरी कें सड़कों दिश टघरलों जाय छै आरो मूते पर खाड़ों होय कें गारलें जाय रहलों छै सब—कोय मानै वाला नै—घिन केकरौ नै ।''

''सुनों, ई कोय तरीका छेकै'' कि तखनिये जयन्तो खाड़ों होतें बोललै । ओकरों दाँया हाथ ऊ आदमी कें रोकतें उठी गेलै, जे आदमी अभी बाँया टांग थोड़ों मोड़ी दीवाली सें लगभग सट्टी कें खाड़ों होलों छेलै । जयन्तो के बातों के असर ओकरा पर अगर कुछ होलै तें एतने टा कि वैनें घुरी कें ओकरा देखलें छेलै आरो फेनू मुँह सीधा करी कें कुछ देर लेली खाड़े रहलै ।

जयन्तो कें लागलै, जेना वैं जाय कें ऊ आदमी कें पीछू सें पकड़ी ओकरा वांहीं गोती देतै, आरो आय तक जे गत नै पुरलों होतै, पुराय देतै । अभी ओकरों क्रोध उफाने पर छेलै कि ऊ आदमी ओकरों पास आवी कें खाड़ों होय गेलै, तमतमैतें बोललै, ''लगै छै, खरीदी कें जमीन छोड़ी देलें रहौ । बड़का मना करै लें ऐलों छों । यहाँ बैठी कें सबके टांग नाँपै छों, फुटों यहाँ सें ।'' जयन्तो तें थरथर । ऊ तें खैर कहों कि आत्मरक्षा में जबें वैं हिन्नें-हुन्नें निहारी रहलों छेलै तें ओकरों नजर आपनों पुरानों साथी शिवेन्द्र पर गेलै, वहू कि पुलिस वाला वर्दी में । सुरक्षा वास्तें जयन्तो नें शिवेन्द्र कें हाँक देलकै ।

बात बनी गेलै । पुलिस कें देखत्हैं ऊ आदमी धीरें सें टसकी गेलै । ''की जयन्तो, तोरा यहाँ देखै छियौ । यही शहरों में रहें लागलैं की ? हमरों बदली यहें शहरों में होय गेलों छै—इन्सानपुर फाँड़ी में मुंशी छियौ । आबें ई शहर छोड़नौ नै छै । बसोवासी जमीनो-जग्घों देखी लेलें छियै.....।'' शिवेन्द्र नें एक्के साँसों में जेना आगू-पीछू के सब बात बताय देलकै, सब पूछियो लेलें छेलै । मतरकि पूछलौ पर जयन्तो ई नै बतैलकै कि ऊ आदमी के छेलै आरो कोन बातों पर गरम होय रहलों छेलै । ई सब बतावै के रों बदला में वैनें मनों के किंछे सीधे शिवेन्द्र के सामना में राखलें छेलै, दाँया हाथ के इशारा सें जग्घों दिखैतें, ''जों यैंठां हमरों एकटा गुमटी बैठी जाय तें सब बेड़ा पार ।''

''अरे ई तें तोहें हमरों मनों के बात करी बैठलैं । हम्में चाहवो यही करै छेलियै कि कोय मोंन लायक आदमी मिलै तें ई जग्घों ओकरै दिलवाय दियै, अभी तक खाली छै तें समझैं हमरा सिनी के परमीशन बिना तें यहाँ कोय दुबड़ियो नै उगें पारें ।''

शिवेन्द्र के बाकी बात पर जयन्तो ज्यादा ध्यान नै देलकै, बस एक्के टा बातों सें ऊ खिली गेलों छेलै 'अरे ई तें तोहें हमरों मनों के बात करी बैठलैं' । ओकरा लागलै, जेना ओकरों सब बंद रास्ता खुली गेलों छै, ''केकरों हिम्मत

होतै कि गुमटी बैठाय सें मना करतै ।'' वैंने मने मन सोचलकै आरो घुमी कें चारो दिश देखलकै । आस-पास के गुमटी वाला के आँख ओकरे दिश उठलोॅ छै । जयन्तो पल भरी लें एक अजीब ऐंठ सें भरी उठलै । वें सोचलकै, शायत कोय नहियो देखलें रहें, आरो यही सोची कें वैनें दाँया हाथ रही-रही उठाय कें गुमटी सिनी के तरफ इशारा करलें छेलै । बोलै कुछुवो नै । हेना करी कें वैं आपनोॅ पहुँच सब गुमटी वाला कें बताय दै लें चाहै छेलै ।

जयन्तो कें मालूम छेलै कि वैठां नया गुमटी खाड़ोॅ करना कोय सहल काम नै छेकै । सब गुमटीवाला चाहै छै कि ओकरे लोॅर-जोॅर के गुमटी बैठै । शिवेन्द्र के मिली गेला सें पाशा पलटी गेलै ।

आनन-फानन में दुसरे दिन रातो-रात जयन्तो के गुमटी वहाँ खाड़ोॅ होय गेलै । खाड़ोॅ तें होय गेलै, मतरकि भर महीना ऊ हुन्नें ताकहौ लें नै गेलै । कारण कि गुमटी बैठला के ठीक दुसरे दिन शिवेन्द्र घोॅर चललोॅ गेलै—खगड़िया । आबें वहाँ जाय तें केना । कोॅन ठिकानोॅ—सब जुटी कें कुछ करिये बैठें । भीड़ के की मोॅन-मिजाज । हेन्हौ कें आयकल पुलिसोॅ के डरे कत्तें रही गेलोॅ छै—भला लोग भले डरौक । वहू में शिवेन्द्र की एस. पी., डी. एस. पी. छेकै—बस फांड़ी के मुंशिये तें छेकै । होना कें ओकरोॅ यार-मित्रें ढाढ़सो देलें छै, मतरकि सब व्यर्थ ।

महीना भरी बाद जबें शिवेन्द्र लौटलै तें ओकरोॅ हाजरिये में वैंनें गुमटी के बंद कपाट खोललकै । कपाट तें खुललै, मजकि हफ्ता भरी कोय सामान वैमें नै ऐलै । बस आवै आरो दिन भरी बैठलोॅ-बैठलोॅ मने-मन गुरू के नाम सुमिरन करतें रहै । गुमटी देखी कें जों एकाध गाहक हुन्नें टुघरी आवै तें जयन्तो हेनोॅ हड़बड़ाय उठै, जेना कोय विपत्ति के सामना करै लें झटपट आपना कें तैयार करतें रहें आकि फेरू गाहक कें ई बताय के कोशिश कि आज्हे तें दुकान खोललें छियै, बस दू-एक दिनोॅ में सब व्यवस्थित होय जैतै ।

मजकि आस-पास के सब लोगें ई जानै छै कि आय तांय ऊ व्यवस्थित नै हुऍ पारलोॅ छै ।

सोचै के तें जयन्तो यहू सोचलें छेलै कि ई गुमटी, खाली पाने वास्ते नै होतै, अखबार-पत्रिका, चॉकलेट, बिस्कुटो के व्यवस्था होतै आरो गुमटी के एक कोना में, चाय के व्यवस्था वैं करी देतै, तें पान के दुकान एकदम चली निकलतै । चाय पीला के बाद पान के तलब होवे करै छै । आसपास चाय के कोनो दुकानो तें नै छै । फेनू कोय चाय पीयै लें आवौ, नै आवौ, ओकरोॅ पहचान के दस यार-मित्र तें संझकी ऐवे करै छै—दसो-बीस कप बिकी जाय छै तें काफी छै ।

यही सोची वैनें आठ-दस ईंटो जोड़ी के खाड़ो करलकै कि तखनिये एक आदमी आवी के पूछले छेलै, ''है की बनाय छौ ?''

जयन्तो के लागलै जेना वैं ओकरो पलान बुझी गेलो छै आरो आबे खा-म-खा बितंडा खाड़ो करतै । दस आदमी के जुटैतै आरो ई चुल्हो-चाल्हो ते छोड़ी दे, गुमटियो-उमटियो नै उखाड़ी के फेंकी दे । से घबड़ैतें होले दोनों हाथ के पंजा के इनकार में हिलैते हुऍ जयन्तो कहे लागलै, ''नै नै । है नै समझियो कि चूल्हा बनाय रहलो छियै, चाय-वाय के बिक्री ले ।'' आरो कहतें-कहतें ऊ गुमटी सें उछली के नीचें उतरी ऐलो छेलै—आपनो धोती रो ढेका ठीक सें संभालतें ।

''खैर तबे ते कोय बात नै छै, हम्में ते वही बुझलियै ।'' कही के ऊ आदमीं चूना माँगलकै ।

जयन्तो के मालूम छै कि वैं सामने में जे चूना-कत्था के बाटी सिनी सजाय के राखले छै, वैमें नै ते कत्था छै, नै ते चूना । जबे पाने नै छै, ते चूना-कत्था कथी ले । शायत ऊ आदमी खैनी के पुड़िये लटकलो देखी के सोचलकै कि चूनाहो जरूरे होतै । मतरकि है सुनी कि चूना नै छै, कहलकै, ''ते बेचै छो की—आपनो भदरोइयाँ ?''

जयन्तो के मोन होलै कि कही दै, ''हों, वही ते बेचैले गुमटी खोललै छियै, मजकि तोरासिनी वहू बेचैले दौ, तबे नी ।''

ओकरो वहाँ सें निकलला पर जयन्तों कनखियाय के ओकरा पीछू सें देखले छेलै—आखिर जाय छै कहाँ ? आरो ई देखी, ऊ बड़ी चिन्ता में डूबी गेलै कि हौ आदमी सामनाहै के एक दुकानी पर जाय रुकलै । चूना लेले छेलै आरो नजर घुमाय के ओकरे दिश एक दाफी देखलकै । आखिर कैहनें देखलकै ? देखै के की मतलब हुऍ पारे ? ई बातो के लै के ऊ कै एक दिन तांय परेशान रहलै ।

पहिलो दू-एक दिन ते ओकरो मोन एकदम्मे बेचैन रहलै, फेरू ई सोची केन्हौं के मोन इस्थिर करलकै कि जों हेनो कुछ बात होतियै, ते होय गेलो होतियै । ऊ ते बेकारे नहियो बातो में हों बात लै के बैठी जाय छै । ई बात जयन्तो मनो में खूब गांथी के बैठाय लै ले चाहले छेलै, मतरकि कोय नै कोय मौका पर, घूरी के ताकै वाला बात, उखड़िये आवै । तखनी ऊ भोलेबाबा के गीत मूड़ी हिलाय-हिलाय के मनेमन गावे लागै—सब बातो के भूली जाय ले.....कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ । तखनी जयन्तो के आँख सिर्फ शिवाला दिस हुऐ । भजन गैतें-गैतें ऊ अपने-आप बुदबुदावे लागै, ''सब सोचै छै, गुमटी बैठाय लेलियै ते जेना भरलो दुकान बैठाय लेलियै । अरे, गुमटी चलाय

में अभियो हजार-दू हजार के जरूरत छै, आरो ई पूंजी ऐतै तबें नी । कत्था, सुपाड़ी, पाँच किसिम के जर्दा, खाली पानों के पत्है लानी देला सें की होतै..... देखों ऊ आदमी कें—बोललै, ''तें बेचै छों की ? आपनों भदरोइयाँ ?'' ऊ तें खैर पोंर आदमी छेलै.....बीचों-बीचों में शिवेन्द्रें है-रं जे बोली जाय छै कि ''तोरा सें गुमटी चलाना मुश्किल छौ जयन्तो । यही तोरों जग्घा पर कोय आरो होतियै तें बीस कमैतियै आरो पाँच दुसर्‌हौ में लुटैतियै ।'' आबें बताबों, शिवेन्द्र कें ई बोलना चाहियों । ऊ थाना के मुंशी छेकै, ओकरा हजारो अलगी ऐतें होतै, हम्में केना तुरत हजार लै आनियै । एकाध कें कहलें छियै, देतै तें गुमटियो चलतै, आरो देवे करतै—देर-सबेर ।

ई सोचतैं जयन्तों के चेहरा पर एक सन्तोष के भाव जागी गेलै आरो फेनू शिवाला दिश मूँ फेरी गावें लागलै—कखन हरब दुख मोर हे भोला नाथ ।

००

अइयो शिवेन्द्र जयन्तो के दुकानी दिश सें गुजरलै, चार दिन पहिलो गुजरलों छेलै, आरो पहिलके नाँखी ओकरा एक नजर देखतें साइकिल सें गुजरी गेलै, टोकलकै नै । आरो तखनिये सें ऊ यही बात लै कें परेशान छै, आखिर वें टोकलकै कैन्हें नी ? ओकरों मनों में अन्धड़ चलें लागै छै । हम्में फिजूल बात सोची रहलों छियै, शिवेन्द्र कें कुछ गुस्सौ छै, तें कथी लें, हमरे हित लें नी। बुरे की कहलें छेलै, जे हम्में बुरा मानी लेलियै ।

जयन्तो कें आपनों ई स्वभावों पर लज्जो आवै छै, गुस्सौ । आखिर बाते की होलों छेलै ।

कि हठाते ओकरा आपनों ई सोभावों पर हँसी आवी गेलै । एकदम जनानी नाँखी ओकरों सोभाव छै—जनानियो सें गेलों गुजरलों । जनानी तें तभियो मौका ऐला पर तनी कें खाड़ों होय जाय छै । आरो हमरों तें ई हाल छै कि टूल बनाय लें जोंन बढ़ैय कें सौ रूपा देलें छेलियै, वहूं तीन महीना नचवैतें रहलै—आय लियों, कल लियों, भोरे देवौं, संझकी देवौं; दुपहरियाँ बनैवौं .....बाप रे बाप, हेनों आदमियो होय छै । वही आदमी गुमटी बनाय के जे पचास टाका हमरा कन बाँकी रही गेलों छेलै, तें छाती पर खाड़ों होय कें दोसरे दिन दुहवाय लेलकै । बेटा साथें ऐलै, तखनी ओकरों बोली छेलै, ''पैसा नै दौ तें एकरा दोकानिये में बंद करी कें आग लगाय दैं, दुकान समेते जरी कें खाक होय जैतै । पैसा नै देतै.....''

आरो वही आदमी हमरो ँ सौ रूपा लेली हमरा केन्हो ँ नाँच नचवाय देलको ँ । बाप रे बाप । तबे ँ दोष हमरे छै—जों एकबार ओकरे हेनो ँ तनी के ँ ठड़ा होय जैतियै ते ँ की मजाल छेलै कि टाका नै देतियै । मतरकि हम्में तनै केना पारतियै । तने ँ ते ँ हम्में आपनो ँ जनानियो के सामना नै पारै छियै'' ई बातो ँ पर जयन्तो अपनेआप ठठाय के ँ हाँसी पड़लै । जो ँर-जनानी सें हार के बाते सें जयन्तो के ँ एक विचित्र गुदगुदी हुऍ लागै छै । इखनियो वहा भेलै । ओकरो ँ दोनों तरत्थी जोर सें मिलतें थपड़ीवाला आवाज करलकै, आरो खिलखिलाहटे में ओकरो ँ मूड़ी ऊपर दिश उठी गेलै ।

''की बात छै जयन्तो जी, बड़ी ठिठियाय रहलो ँ छो ँ ।'' कोय छवारिकें गुमटी के ठीक सामन्हैं बिजलीवाला खम्भा सें धौनो ँ टिकैतें कहलकै, ''अहो, आपनो ठिठियाय छो ँ आरो संझकी दस ठो के ँ घंघेटी के ँ दतनिपोड़ी करवाय छौ । सुनो ँ, जों दुकानी पर फलतुआ सिनी के अड्डा लगवैलौ, ते ँ सोची ले ँ । हमरा सिनी के बैठकी खराब करी देले ँ छौ । आयके सांझी सें जों यहाँ कोय अड्डी मारै ले ँ ऐलौं ते ँ बुझियो ँ ।''

जे रं ई छवारिक कही के ँ चली देलकै, होन्है भला जयन्तो केना मुँह खोली के ँ कहे ँ पारतै, एत्ते ँ-एत्ते ँ यार-मित्रो ँ के ँ । नै ई केन्हौ के ँ नै हुऍ पारतै । वैंने गुमटी टैम सें पहिले बढ़ैलकै आरो सीधे फाँड़ी दिश चली देलकै । फाँड़ी सें दस कदम हिन्नहै होतै कि वैनें वहे ँ छवारिक के ँ ऐते ँ देखलकै, मतरकि दोनों अनजाने आपनो ँ रास्ता पर चलतें रहलै—ते ँ की यहू फाँड़िये गेलो ँ छेलै, गेलो ँ छेलै ते ँ कथी ले ँ ? कहीं हमरो ँ शिकायते ते ँ नै करै ले ँ ऐलो ँ छेलै ? सोचल्है एक बार विचलित होय उठलै जयन्तो, मतरकि ई सोची कि आखिर मुंशीजी ते ँ हमरे साथी छेकै, हम्में ते ँ बेकारे कोय बातो ँ के ँ हद तांय सोची डरे ँ लागलौं ।

फाँड़ी पहुँची के ँ ऊ देर रात तांय फाड़िये दरवाजा पर खाड़े रहलै.... आखिर शिवेन्द्र निकली कैन्हें नी रहलो ँ छै ? कत्तो व्यस्त रहतै ते ँ की खिड़कियो सें नै बाहर झांकतै ? काँही हेनो ँ ते ँ नै कि हमरा देखिये के ँ हेनो ँ करी रहलो ँ छै ? जों कुछु बात छै ते ँ हमरा ऑफिसे जाय के ँ मिली लेना चाहियो ँ.... ई बात सोचै के ते ँ सोची लेलकै, मतरकि जयन्तो के एक्को डेग फाँड़ी के भीतर दिश नै उठे ँ पारलै । वैं मनेमन सोचलकै—ऊ आयतक थाना-फाँड़ी नै गेलो ँ छै, कौनें की समझी ले ँ, कोय कुछ पूछिये दे ँ.... नै-नै, वैं बाहरे में शिवेन्द्र के इन्तजार करतै। आखिर कखनियो ते ँ शिवेन्द्र बाहर निकलतै । निकललै पर सब बात बतैवै कि केना के ँ आय एक छौड़ा ओकरा धमकाय गेलो ँ छै ।

आरो काम निपटाय कें शिवेन्द्र जबें बाहर निकललै तें जयन्तो ओकरों लुग स्प्रिंगवाला खिलौना नाँखी उछली कें आवी गेलै । आपनों संकट बतैतें जल्दी कुछ करै लें कहैलकै । सब बात सुनी कें पहिलें तें शिवेन्द्रें बेरुख भावों सें यहें कहलकै, ''गुमटी के जग्घों केकरो जरमियाना करैलों आकि खरीदलों थोड़े होय छै, जे जोगें ओकरे । सब जानै छै—जोरू-जमीन जोर के । होना कें हम्में जाय कें समझाय ऐवै'', आरो फेनू हठाते रुख बदलतें कहलकै, ''जयन्तो, तोरा गुमटी यै लेली नै दिलवैलें छेलियौ कि दस ठो आवारा किसिम के आदमी कें जुटाय कें तमाशा लगवावें । दुकान छेकै धन्धा वास्तें, नौटंकी लगावै वास्तें नै । दस रोज बाद मिलिएं ।'' आरो एतना कही मुंशीजी फाँड़ी के बैरक दिश चली देलकै ।

जयन्तो लौटी ऐलै आरो देर तांय सोचतें रहलै—आबें भला आपनों मुँहों सें केना कहतै यार-मित्रों कें—तोरा सिनी सांझकी यहाँ बैठकी नै करों । मतरकि जे रं ऊ छवारिक आरो आय शिवेन्द्र कही गेलै, ओकरा सें तें चुप रहवो मुश्किल । तें करौं की ?.... हों, एक बात हुऐ पारें कि हम्में घोंर चल्लों जांव । की होतै—आठ-दस रोज गुमटी बन्दे रहतै । शिवेन्द्रो तें दस दिनों के बादे बुलैलें छै । फेनू जबें हिनकासिनी समझी लेतै कि आबें दुकान नै खुलतै, तें आपन्है रास्ता बदली लेतै । होन्हौ कें हमरों गुमटी खुलवे कै दिन करै छै....आबें आठ-दस रोज बन्दे रहतै तें की ?''

ई नया विचार सें जयन्तो एक तरह सें निश्चिंते होय गेलै, फेनू मने-मन सोचलकै, ''यहू रिटायर्ड दोस्त सिनी कोन मारे हमरा निहाल करै छोंत । गाहक वास्तें एक बेंची बिछाय छी, तें वै पर मधुमक्खी के झुंड नाँखि जमलों रहै छोंत । जैतात तें दुकान बन्द करला के बादे । बेंची पर जग्घों नै मिलतै, तें डिब्बा-डुब्बी हटाय कें दुकानिये के भीतर महाजन नाँखि बैठलों रहतात, जेना हम्में सब्भे के करजा खैलें रहियौं । आरो नै तें तीन-चार ठो दुकानिये के आगू खाड़ों । जों एकाध ठो गाहक बीड़ी-सिगरेट लें आवै छै तें भीड़ देखत्हैं टसकी जाय छै । शैलेन्द्रें हमरे हित लें तें कहलकै, ठिक्के कहलकै । सब दोख हमरे छेकै । अच्छे होतै, दस रोज दुकाने बंद करी कें घोंर चली दौं ।

आरो करलकै वही । एक दिन जयन्तो ठीक दुपहरिये ऐलै, गुमटी खोली कें कुछ छोटों-मोटों सामान आपनों झोली में घुसलकै; फेनू गुमटी पर ताला चढ़ाय देलकै, आरो बिना हिन्नें-हुन्नें देखल्हैं बस स्टैण्ड दिश मलकलों-मलकलों बढ़ी गेलै ।

००

दस दिन बादे आय जयन्तो शहर लौटलोॅ छै । गोधुली बेरा गिरहैवाला छै—गाड़ीवालां आय देर करी देलकै । हेनोॅ कभियो नै होय छेलै, खैर कुछ नै होतै तेॅ नै, धूप-ऊप दिखाय केॅ गुमटी बढ़ाय देवै—यहेॅ सोची जयन्तो लम्बा-लम्बा डेग मारतें गुमटी तांय ऐलै, पर गुमटी तक ऐहैं ऊ तेॅ पत्थल के मुरूत बनी गेलै। बिना लाठीवाला पत्थल के गाँधी । एक दाफी तेॅ ओकरा विश्वासे नै होलै कि वैं जे कुछ देखी रहलोॅ छै, ऊ सहिये छेकै । वैनें आपना पर काबू पैतें दू-तीन दाफी मूड़ी झोललकै आरो फेनू आपनोॅ गुमटी केॅ गौर सें देखलकै ।

झूठ नै छेलै, वैं जे कुछ देखलकै, एकदम सही छेलै । गुमटी पर जे जग्घा पर वैष्णवी ताम्बूल भंडार के तख्ती छेलै, वहीं पर नया तख्ती टंगलोॅ छेलै—'शुद्ध देशी शराब की दुकान' । गुमटी बाँस के टटिया सें घेराय गेलोॅ छेलै, जेकरा में मूड़ी घुसै मान खोल बनलोॅ छेलै । गुमटी के भीतर अस्सी मनोॅ के एक आदमी बैठलोॅ ।

जयन्तो मने-मन याद करलकै—एत्तेॅ दिन ऊ यहाँ पर रहलै—कभियो तेॅ ई आदमी के शक्ल वैं नै देखलकै । कारोॅ चमड़ी पर कारो बाल, कारोॅ घन्नोॅ मूँछ आरो दाढ़ी एक होय रहलोॅ छेलै । आँख के घुरतें डिम्मी सें जयन्तो बुझलकै कि ऊ आदमी ओकरै देखी रहलोॅ छै ।

जयन्तो केॅ जना थरथरी लागी गेलै । ओकरा बुझैलै, जेना ऊ आदमी अभी तुरत टटिया के बाहर होतै आरो ओकरोॅ कालर पकड़ी केॅ कहतै, "चोट्टा, जबेॅ माल लेना नै छौ, तेॅ हेना केॅ घूरै की छैं रे । माल टपाय के रास्ता खोजी रहलोॅ छैं की ? भागले कि अभी....."

आरो जयन्तो हड़बड़ाय केॅ पाँच कदम पीछू हटी गेलै, शहीदवाला चबूतरा के पीछू, जहाँ सें ओकरा पर ऊ मूछियल के नजर नै पड़ेॅ सकेॅ । कैन्हें जयन्तो केॅ आभियो लागी रहलोॅ छेलै कि ऊ आदमी छलांग मारी केॅ ऐतै आरो.....

जयन्तोॅ के पेटोॅ में बेचैनीवाला दर्द उठेॅ लागलै । दर्द कम करै के कोशिशे में वैनें आहिस्ता सें आपनोॅ आँख बंद करी लेलकै । आँख बन्द करत्हैं ओकरा लागलै कि दरद कम हुएँ लागलोॅ छै । आरो नै जानौं, कखनी ओकरोॅ आँख लगी गेलै ।

जखनी ओकरोॅ आँख खुललै तेॅ कानोॅ में शिवेन्द्र के आवाज सुनाय पड़लै, "कै दाफी तोरा कही चुकलौं कि तोरा डरन्हे नै छै । पहिलें ऊ मिलौक तेॅ.... । वैं तेॅ हमरोॅ कैय्यो महीना के कमाय पर चूना लगैनें छै । जग्घा पर गुमटी दिलवैलेॅ छेलियै कि...पहिलें ऊ मिलौक तेॅ, हम्मू फाँड़ी खोलिये केॅ बैठलोॅ

छियै । तोरा डर्हे के कोय बाते नै छै.....तोरा सें काम छै....कल.....तें ठीक ।''

जयन्तो के गोड़ एकदम थरथरावें लागलै । मूँ सें लै कें भरी देह तांय में जेना झुरझुरी ढुकी गेलों रहें । काहीं वै दोनों में सें कोय ओकरा देखी नै लै आरो कोंन ठिकानों.....'' ई सोचत्हैं जयन्तो के सौंसे बदन सिल हुऐं लागलै। वैं आपनों सांस कें एकदम सें बंद करलकै आरो रेंगतें होलें ऊ मूर्त्ति के पीछू छिपी गेलै । धोती के एक छोर सें आपनों मूँ ई रँ ढांकी लेलकै कि नीन आवी गेला के कारण वाहीं पर कोय मुसाफिर ओघराय गेलों रहें । ऊ तब तांय ओघरैले रहलै, जब तांय गुमटी बंद नै होय गेलै ।

धरमदास रो कपली गाय

ढीबा धरमदास के पूरा नाम सें शायते कोय पुकारलकौ, पुकारलकों तें ढीबा जी ही कही के । हों, ओकरो संगी साथी जरूरी ढीबा धरमदास कहै, जे खाय-पीयै में बरवक्त साथे रहे ।

ढीबा । ई नाम ओकरो दादीं राखले छेलै । जनमलै ते एकदम लार-पुआर होय रहलो छेलै । वैद-हकीम, ओझा-गुनी-मंतरिया सब कन दौड़ी-दौड़ी दादीं ओकरो जान बचैलकै आरो हालत सुधरलै ते हेनो कि साले भरी में गोड़-हाथ कद्दू नाँखी और पेट कदीमा रँ होय गेलै; ई देखी, एक दाफी दादीं ओकरा ढीबा की कही देलकै कि ओकरो नाम ढीबाहै पड़ी गेलै ।

ढीबा जों-जों बढ़लो गेलै, तों-तों हौलको-फुलको कामो सें ओकरो जी उचाट हुऍ लागलै । देखै में भले ऊ जत्ते भोकसो दिखावे—छेलै एकदम फोकसो । भरलो बड़ो बाल्टी की उठावै, साँड़ो हेनो फू-फू करे लागै । यही वास्तें ओकरो मय्यो-बाप कुछ काम करै ले नै कहै ।

ई ते भाग कहो कि वहे गाँव के चकबन्दी ऑफिसो में दास बाबू एक अफसर बनी के ऐलै आरो ढीबा के भाग खुली गेलै । एक दिन केकरो पैरवी लै के ऊ दास बाबू लुग पहुँचलै, ते ओकरा देखिये के दास बाबू ओकरो दिश खिंचाय गेलै । जटा-जूट, दाढ़ी-मूंछ रहला के बादो एकदम शहरुआ छवारिक रं चालू-पुरजा । फिनू की छेलै—दास बाबूं कन ओकरो उठकिए-बैठकिए शुरू होय गेलै ।

गाँव भरी में ढिंढोरा पिटी गेलै—ढीबा चकबन्दी अफसर दास बाबू के दोस्त भै गेलै ।

आबे की, आबे ते ढीबा के तूती बोले लागलै । जत्ते दास बाबू के

पूछ चौक-चौराहा पर नै, ओकरा सें बढ़ी केॅ ढीबा के । ढीबाहौं समय केॅ पलटा खैतें देखी आपनो चाल-ढाल में पलटी खैलकै ।

आबेॅ वैं कोशिश करै कि गाँव के सब्भे लोगोॅ सें जखनी-तखनी मूँ नै लड़ावौं । अब तांय तेॅ ओकरोॅ यहेॅ आदत रहै कि जेकराहौ खैनी रटैतें देखै, ओकरे आगू हाथ फैलाय दै, आबेॅ ई आदत तेॅ वैं एकदम्में बन्द करी देलकै । बहुत होय छै तेॅ आपनोॅ जेबी सें खैनी वाला डिब्बी निकाललकोॅ आरो केकरौ थमाय देलकोॅ, मतरकि ओकरोॅ लगैलोॅ खैनी खैलकोॅ नै—ज्यादा केकरौ सें चिन-परिचय बढ़ाना ठीक नै । होन्हौ केॅ साधू-सन्यासी केॅ सबके छूलोॅ-छालोॅ नै खाना चाही ।

दास बाबू कन ढीबा रोॅ बस एतन्है काम छै—हुनकोॅ साथ बैठी केॅ चाय पीयौक आरो गाँव के लोगोॅ के बारे में एक-एक जानकारी दौक । एकरा सें ई होलै कि ऊ गाँव के बारे में जत्तेॅ जानकारी दास बाबू केॅ छेलै, ओत्तेॅ ऊ गाँववालाहौ केॅ नै । ढीबां रोज-रोज नया बातोॅ के जानकारी इकट्ठा करै आरो चाय के चुस्की साथें रस लै-लै केॅ एक-एक बात बतावै । दास बाबू के साथें ई बैठकी सें ढीबाहौं बहुत कुछ नया सीखलेॅ छेलै ।

वैनें दासे बाबू सें सिखलेॅ छेलै कि चाय माँढ़ नाँखी सुड़-सुड़ करी पीयै के नै होय छै । बस हेनोॅ पीयै के छेकै कि ठोर तांय के आवाज नै हुऍ । ई हिदायत के पालन में चाय कै दाफी ढीबा के ठोर सें छुवैये केॅ रही जाय; जीहो तक नै पहुँचै ।

एक दिन ढीबू दास बाबू के साथ हेन्है केॅ चाय पर बैठलोॅ छेलै तेॅ बात बाते में वैनें दास बाबू सें कहलकै, ''हम्में चाहै छियै कि आफिस के सामना में, ऊ जे ठाकुरबाड़ी छै, तोहें वै में भोरे-साँझ धूप-धूपकाठी आरनी के व्यवस्था करवाय दौ । बिना पुजारी के की रं घास-पतार सें ठाकुरबाड़ी भरी गेलोॅ छै, साफ-सुथरा होय जैतै, तेॅ आखरियो-पिपरी के डोॅर नै रहतै ।''

दास बाबू के चेहरा पर संतोष के भाव झलकी ऐलै, मजकि ओकरा सें ज्यादा संतोष के भाव ढीबा के चेहरा पर छेलै । सरकारी मदद मिली गेला सें तेॅ ढनमनैलोॅ ठाकुरबाड़ी मथुरे के मंदिर बनी जैतै । वैं आपनोॅ ई खुशी एकदम सें छिपाय लेलकै । सालोॅ सें तेॅ वैं यहेॅ चाही रहलोॅ छेलै । ढीबू, आय सें तोहें ई मन्दिर रोॅ पुजारी । तोरोॅ काम आय सें मन्दिर में भगवान के सेवा । हम्में तोरोॅ लेॅ यहेॅ बगलोॅ में एक मड़ैयो बनवाय दै छियौं । रहै-सहै में दुख नै होत्हौं।'' दास बाबूं कहलकै ।

आरो ठीक वहेॅ दिन सांझकी बेरा में लोगें शंखोॅ के पहिलोॅ दाफी

आवाजो सुनलकै—चकबन्दी ऑफिसो॑ के सामना वाला ठाकुरबाड़ी में । सब्भे आचरज में । कोय धूप-दीप ते॑ ऊ ठाकुरबाड़ी में रखी आवै, मजकि शंख के आवाज ते॑ आय तक नै होलै । वहाँ छेवे करलै की । बस दू दिशो॑ सें गिरलो॑ दीवारी के मन्दिरे ते॑ ।

कभी एकरे भीतर में अष्टधातु के एक मूर्त्ति छेलै—बड़ी पुरानो॑ आरो बड़ी कीमती; हाथ भरी के जरूर होतै । एक दिन हल्ला होलै कि मूर्त्ति गायब होय गेलै । आखिर के गायब करलकै ? गाँववाला के शक ढिबाहै के ओर जाय । होय नै होय, ई काम ओकरे छेकै । वही महीना भरी से ठाकुरबाड़ी के पिण्डा पर ओघरैलो॑-पटैलो॑ देखलो॑ जाय छेलै—बिहानै, दुपहरकी आरो संझकी । कै दाफी ते॑ लोगें ओकरा वहे॑ ठाकुरबाड़ी दिशो॑ सें होय के॑ आपनो॑ घो॑र जैतें देखलें॑ छै—आखिर हुन्नें सें घो॑र जाय के की मतलब, जबे॑ कि ढीबा के घो॑र पछिये पड़ै छै, फेनू पूरबें होय के॑, एत्ते॑ घुरी के॑, घो॑र जाय के की मतलब । संझकी वक्ती के बात होतियै, ते॑ लोगें मानियो लेतियै कि ठाकुर के दर्शन लेली घुरी के॑ घो॑र जाय रहलो॑ छै, सेहो बात ते॑ नै छेलै—दस बजे रातको॑ बाद हुन्नें से जाय के बात केकरो दिमागो॑ में नै अटै ।.....मतरकि है काम जों ढीबा के नै छेकै ते॑ केकरो॑ छेकै । सौ सालो॑ सें ऊ मूर्ति ठाकुरबाड़ी में छेलै, नै पहरा, नै पुरोहित । गाँव भरी के पहरेदारी छेलै, मजकि जहिया सें लोगें ढीबा पर एक तरह सें भरोसा करी के ॑ मूर्त्ति के बारे में सोचना छोड़ी देलकै, ठीक ओकरो॑ महीना भरी के भीतर मूर्तियो अलोपित होय गेलै...बात ते॑ सहिये छेलै, मजकि ढीबाहौ कोय ऐरू-गैरू घरो॑ के ते॑ नै छेकै....ओकरो॑ एक पुश्त पुरहैतगिरिये में रहलो॑ छै ।

ई बातो॑ पर जोतखी का एकदम गरम होय जाय छै—ई बात ते॑ तोरासिनी सतयुगो॑ के करी रहलो॑ छो॑ । अरे आयको॑ बात करो॑ कि केना मन्निरे के पुजारी मूर्ति गायब करी के॑ विदेशो॑ में बेचवाय दै छै । ते॑ ढीबा को॑न वशिष्ट आरो विश्वामित्र छेकै कि ई नै करे॑ पारे॑ ।

बात यहाँ तांय बढ़लै कि पुलिसो ढीबा तांय पहुँची गेलै । आरो जबे॑ थाना पर ओकरा लानलो॑ गेलै, ते॑ ढीबा के चेहरा पर कोय रकम के अनचित वाला भाव नै छेलै । दारोगा के सब पूछला के बाद वैनें एतनै टा कहलकै, ''भगवान सब देखी रहलो॑ छै दरोगा बाबू, हुनका सें बड़ो॑ सजा तोरो॑ नै हुएँ पारे॑ । जौनें-जौंने हमरा यहाँ पहुँचैनें छै, हुनी-हुनी भगवान सें मिलै वाला सजा के इन्तजार करौक ।'' ढीबा के एतना भर कहना छेलै कि ढीबा के विरोधियो पलटी खाय गेलो॑ छै । सब ढीबा के पक्षो॑ में बोले॑ लागलो॑ छेलै । सच पूछो॑ ते॑ भगवान के बात सुनी के॑ दरोगो के पसीना उतरी गेलो॑ छेलै । महीनै भरी बाद

परमोशन के कागज निकलै वाला छै; की ठिकानोॅ ढीबा बेकसुरे रहेॅ, जो भगवान नाखुश होय जाय.....आरो ढीबा निर्दोष घोषित होय गेलै—थानाहै सें नै, गाँववाला दिशोॅ सें भी ।

कोय नै जानै छै कि थाना सें छुटला के बाद ऊ सालो भर कहाँ रहलै आरो सालो भरी के बाद जबेॅ घोॅर लौटलै तेॅ दाढ़ी, जट्टोॅ एकदम बढ़ैनें । सबनें देखलकै—ढीबा तेॅ एकदम साधू बनी गेलोॅ छै ।

जोॅन दिनां ढीबां गाँव छोड़लेॅ छेलै, वही दिनोॅ सें ऊ ठाकुरबाड़ी में लोगोॅ के आनाहौ-जानाहौ बंद होय गेलोॅ छेलै । रहिये की गेलोॅ छेलै वहाँ, जे लोग जैतियै ! जों कोय मंदिर के बाहरी पिन्डा पर धूप-दीप जलाय-उलाय ऐलकोॅ, तेॅ बहुत—भीतर तेॅ कोय ढुकवे नै करै ।

सफाई-पोताई के बिना ठाकुरबाड़ी के दीवार ढनमनाय गेलै । अन्धड़ बरसात, धूप सें दीवार सिनी हेनोॅ होय गेलोॅ छेलै कि धीरें-धीरें यहू बात फैली गेलै—ऊ ठाकुरबाड़ी में रात-बेरात भूत बोलै छै । फेनू की छेलै—लोग दिन्हौ हुन्नें सें गुजरै तेॅ एक-दू आदमी साथ चलैवाला लै केॅ ही । जबेॅ चुल्हाय काका आपनें सें दस के बीच कहलकै—परसुके बात छेकै । ऊ गाड़ी पर बीस बोरा गहुम लादी केॅ घोॅर जाय रहलोॅ छेलै । झुकझुकी बेरा । ठीक ठाकुरबाड़ी के नगीच ऐलोॅ होवोॅ कि ओंटी औटेॅ लागलै । गाड़ी रोकलियै आरो वही ठां एक दिशोॅ में बैठी रहलियै । मिनिट भर बाद उठलियै तेॅ देखै छियै तेॅ दोनों बैल जुआ सें निकली केॅ बोरा दिश मुँ करी केॅ खाड़ोॅ होय गेलोॅ छै आरो आँख फाड़ी-फाड़ी केॅ गाड़ी पर बैठलोॅ कोय आदमी केॅ देखी रहलोॅ छै । हमरा कुछ समझै में नै ऐलै । गाड़ी पर कोय नै छेलै । हम्में एकेक करी केॅ दोनो बैल केॅ जुआ में टानी केॅ लानै के कोशिश करियै, मतरकि बैलवो एकदम सें छलांग मारी केॅ फेनू मोढ़ा दिश आवी केॅ खाड़ोॅ होय जाय आरो होन्है केॅ हड़कलोॅ-हड़कलोॅ गाड़ी पर बैठलोॅ कोय आदमी केॅ देखेॅ लागै । आबेॅ तेॅ हमरोॅ माथोॅ ठनकलै । सोचलियै, डरला सें तेॅ आरो गड़बड़ । जी केॅ कड़ा करलियै, हनुमान चालीसा दुहरैतेॅ गाड़ी पर छड़पी गेलियै । आभी गाड़ी पर बैठलोॅ नै होवै कि लागलै—गाँड़ी पर हाथ धरी केॅ कोय हमरा नीचेॅ पटकी देलेॅ रहेॅ । हम्में तेॅ खच्चा में । आबेॅ हमरा सब बात समझै में आवी गेलोॅ छेलै.....

ई सब बात चोलाय का बड़ी विस्तार सें सबकेॅ सुनाय छै कि केना वैं रात काटलकै ।

चुल्हाय काका के बातोॅ पर के विश्वास नै करेॅ । हौ दिन सें तेॅ ऊ दिश जायवाला आदमी जों असकल्ले रहै छै तेॅ बीस बाँस हटिये केॅ पोखरिया

वाला रास्ते सें होय कें जाय छै । थोड़ों घुरावटे नी पड़ै छै, छै तें सुरक्षित ।

आय पहिलों दाफी बहुत दिनों के बाद लोगें ठाकुरबाड़ी में शंख गूंजतें सुनलकै । तबें लोगें यहू जानलकै कि ढीबा ठाकुरबाड़ी के सरकारी पुजारी होय गेलों छै, तबें की छेलै, मूर्त्तिये गायब होय जकां ढेरे-ढेरे बात उठलै, लेकिन बात दुए टा निष्कर्षों पर खतम होलै कि ढीबा आबें सरकारी पुजारी होय गेलों छै, यै लेली भूत-प्रेत ओकरा धरै नै पारें । सरकारी आदमी तें आपने भूत-प्रेत होय छै, भूत-प्रेतें ओकरा की धरतै; वहू में सरकारी पुजारी कें । फेनू दोसरों बात ई—कि ढीबू तें अपने पहिलें से सिद्ध छै । ओकरा तें टैम मिललों छेलै कि अमुक समय में ओकरा पूर्ण सिद्धि मिली जैतै, से आबें मिली गेलै.....जों नै मिली गेलों छै तें पटना-दिल्ली तांय पढ़लों-लिखलों दास बाबू हेनों आदमी केना ओकरा इज्जत दै छै ।'' आरो ई विश्वास ही धीरें-धीरें लोगों में एत्तें बढ़लै कि दासे बाबू रं सौंसे गाँव ओकरा ढीबा धरमदास कहें लागलै, हेना कें एकरा में सबसे अधिक मदद करलकै तें दासे बाबूं ।

आरो शंख गूंजै के ठीक चौथे दिन ठाकुरबाड़ी में हाथ भरी के मूर्त्तियो आवी गेलै, छिनमान पहिलके ठाकुर जी के मूर्त्ति नांखी । लोगें देखै तें आचरज करै । अष्ट धातु वाला मूर्त्ति, मतरकि कारों केना होय गेलै ? ढीबां ई बात भरी इलाका कें समझावै कि मूर्त्ति तें वहें छेकै, हमरों सिद्धि सें डरी कें चोरवैय्यां धरी ऐलों छै.....पाप के घरों में रहलाहै सें भगवान कारों पड़ी गेलों छै, भगवान कें ई पाप के छाया सें मुक्त करै लें महीना भरी के अष्टयाम करवाना जरूरी छै । हेनों होतै तें भगवानो आपनों रूप में आवी जैतै आरो भरी इलाका में पुण्य फैली जैतै । कोय एक शंका करै तें पाँच समझावै वाला । समझाय वाला में चुल्हाय काकाहौ शामिल छेलै । काकां समझावै, तखनियो लोगें यहें शंका करलें छेलै कि कि मूर्त्ति भला दूध केना पीतै, मतरकि पीलें छेलै की नै.....तबें मूर्त्ति कारों सें गोरों केना नै होतै—भजन-कीर्त्तन आरो तंत्र-मंत्र में कोंन ताकत नै होय छै । एक बात फेनू कैन्हेंनी समझै छैं—ढीबू धरमदास आवै के पहिलें केकरौ हिम्मत छेलौ कि ठाकुरबाड़ी दिशों सें दुसकल्लो टुघरी जांव । पाँच ठो मिली कें जाय छेलैं आरो पाँचो हनुमान चालीसा पढ़तें । ई हमरों ढीबू धरमदास जी ही छेकै कि भरखर राती में असकल्लों वहाँ पड़लों रहै छै । की हेन्है कें पड़लों रहै छै ? सिद्धि पैलें छै—पाँच परैंतें दिन-राती हमरों ढीबू धरमदास के आगू-पीछू करतें रहै छै । धरमदास जी के तें खाली इशारा होतै, सब अटका-टोटका तें दूर करतै भूत-प्रेत । करिये रहलों छै, नै करी रहलों छै तें हमरों बैलगाड़ी आबें रात-बेरात निरबिघिन केना घोंर पहुँची जाय छै । आरो फेनू एतन्है बात नै नी छै,

ठाकुरबाड़िये नगीच धरमदास के गुरू महाराज देवो दास के समाधियो बनतै—ताजमहल नाँखी भव्य । सब बात बड़ी तेजी सें फैली रहलोॅ छेलै ।

ढीबा सें कोय पूछै तेॅ वैं हेनोॅ आँख-मूँ बन्द करी लै, जेना ई बातोॅ पर शंका करवोॅ, एत्तेॅ बड़ोॅ पाप छेकै, जेकरा सौ अष्टयाम करला के बादो दूर नै करलोॅ जावेॅ सकेॅ । हेनोॅ शंका करैवाला केॅ देखवो पाप ।

सौंसे इलाका में खलबली छेलै—रामनवमी के महीना भरी पैहिलैं सें अष्टयाम शुरू होय जैतै आरो रामनवमी के दिन खतम होतै । जे जत्तेॅ दान दिएॅ पारेॅ । आखिर इलाका भरी के मरजाद के बात छेकै आरो फेनू की हेनोॅ उत्सव बार-बार होय छै ।

ढीबू साथें सौ कार्यकर्त्ता सें कम नै लागलोॅ छै—एत्तेॅ बड़ोॅ जग जे होय रहलोॅ छै । आखिर भंडारा की असकल्ले संभलै वाला छै । दस जनानी सें कम खटै वाली नै चाही । मतरकि ढीबू केॅ आन जनानी पर विश्वास नै छै । वैंने खाली आपनिये दोनों जनानी केॅ बुलैलेॅ छै, आरो आन काम संभारी दै लेॅ अपनी दू बूढ़ी सासो केॅ ।

जोॅन दिनोॅ सें एक घोॅर पीछू एक पसेरी धान वसूली के काम चललै, वही दिनोॅ सें ढीबूं गद्दी धरी लेलकै । ठाकुरबाड़ी के बाहर बाँस-बत्ती छानी केॅ बड़ोॅ रँ दू कोठरी के कुटिया बनैलोॅ गेलै । एक में ढीबू आरो ओकरोॅ साथें चुल्हाय का । दुसरा में ढीबू के लॅर-जॅर सब । ई बात तेॅ कोय नै समझै कि जे चुल्हाय का के साथें ढीबू के कभियो नै पटलै, ऊ एक्के कोठरी में रात-दिन केना बिताय छै ।

रामचेलवां एक दिन चुल्हाय केॅ कहलकै, ''हो काका, जखनी ढीबू का प्रवचन करै छै, तखनी हुनकोॅ आवाज के पीछू आरो एक आवाज हौले-हौले उठै छै, हमरा तेॅ ऊ आवाज तोरहे बुझावै छौं ।''

''चुप ! लागै छै तोरोॅ दिन पुरी गेलोॅ छौ । अरे ऊ जे दू बार आवाज बुझाय छौ, ऊ दू दाफी बोलै वाला साउण्ड बॉक्स के कारणें ।'' चुल्हाय नें रामचेलवां के मुँह पर हाथ रखतें कहलकै, ''तोरा मालूम नै छौ कि ढीबू सरकारी पुजारी छेकै, ई सब बोलवैं तेॅ कल्हे जेल में दिखाय पढ़वे ।

जे हुएॅ ढीबू के प्रवचन सुनै लेॅ जॅर-जनानी उपटै । हफ्ता में पाँच दिन दासो बाबू आवी केॅ खाड़ोॅ होइये जाय, अलग बात छेलै कि जोतखी का हुलकियो केॅ ताकै लेॅ हुन्नें नै जाय । पूछला पर कहै, ''आंय रे, जे ढीबां के चानी पर बाल नै छेलै, ई दास बाबू के कारने ओकरा नाँकी में जट्टोॅ होय गेलोॅ छै । बोलैं—जे जिनगी भर आपनोॅ मौगी सिनी केॅ वनवास देलेॅ ऐलै, आय ठाकुरबाड़ी में बिठाय

कें गृहस्थ धरम के महत्व बतावै छै । कहै छै—असली सन्यास तें परिवारे बीच रही कें भगवत रों भजन छेकै । ढिंढोरा पिटवाय रहलों छै कि वैं चंदा-पैसा सें आपनों गुरू के समाधि ठाकुरबाड़ी सें सटलों बनवैतै, आंय रे ! आरो तोरा सिनी हेनों कि मूर्त्ति वाला बाते भुलाय गेलैं ।''

जोतखी का के बात ढीबा के कानों में नै पड़ै, हेनों बात नै छेलै, मतर ऊ ई सब सें हेनों अनजान बनलों रहै कि ओकरा खुद्दे अपना पर आचरज हुऐ । फेनू ढीबा कें ई सब बातों पर ध्यान दै के फुर्सते कहाँ छेलै । घी रे , चॉर रे, तेल रे, दाल रे, चिकसों रे, फोंल-फलारी रे—एत्तें-एत्तें समान जुटी रहलों छेलै—सब के ध्यान रखना छेलै । ओकरा टपैयो वाला के कमी नै छेलै—ई बात ढीबा सें बढ़ी कें ज्यादा आरो के जानै छै ।

मतरकि ई सब सें बढ़ी कें ओकरों ध्यान इलाका भरी सें आवी रहलों चंदा के टाका-पैसा पर छेलै । के कत्तें देलकै—एकरा सें ज्यादा वैं ई बातों पर ध्यान दै कि कत्तें ऐलै ? के की देलकै आरो लैवालां कत्तें जेबी में राखलकै—ढीबां जानै छै, एकरा पर ध्यान देला पर चंदा कटवैया के टीमे भंगटी जैतै । बाढ़ के पानी जे टा पोखरी-कुइयाँ में बची जाय, वही पानी-पानी, बाकी फानी ।

खाली पाँच दिनों में पन्द्रह हजार जुटी गेलै । कम बड़ों बात नै छेकै । खोमचा आरो लेमनचूस बेचैवालाहौ सें चंदा उसूललों गेलों छै । होना कें ढीबां आपनों आदमी सें सुनाय कें तें यहें कहलें छेलै, ''चंदा वास्तें केकरो तंग नै करलों जाय, धरम-करम छेकै स्वेच्छा सें ।'' मतरकि मुखिया, सरपंच, चौधरी हेनों घरों कें छोड़ी कें हर घरों सें पर मुंडा दस टाका आरो बाजार में पर दुकान सौ टाका दल बांधी कें वसूल भेलै । सड़क पर दौड़ैवाला मोटर-ट्रक सें मनमाना । ढीबाहै के इशारा पर मोटर-ट्रक रोकै वास्तें सड़क पर बांस के बल्ला आरो बैलगाड़ी बीचे बीच लगैलों जाय छेलै आरो चंदा वसूल्है पर गाड़ी हटै । काफी उछाह छेलै चंदा उगवैया में ।

ढीबां गद्दी पर बैठलों-बैठलों खाली गाड़ी के गिनती लिखै । टाका लिखै के जरूरते नै छेलै । टाका तें बांधी देलों गेलों छेलै—ट्रक पीछू बीस टाका आरो सवारीवाला मोटर पीछू पच्चीस टाका । झारखण्ड सें जोड़ैवाला एक्के तें ई सड़क छै । ढीबू तें गाड़िये गिनतें औल-बौल होतें रहै । यही सें गाँववाला चन्दा पर ओकरों विशेष ध्याने नै रहै । कहौं सें तें आँख मून्है लें लागें—बहुत कुछ पावै लें । ई राज कें ढीबूं खूब अच्छा रं जानै छै ।

अष्टयाम कल सें शुरू होयवाला छेलै आरो मूढ़ी-घुँघनी, कचड़ा-फुलौड़ी, घुपचुप के ठेला-खोमचा के अइवों एक दिन पहिलें सें शुरू छेलै । बिकौ कि नै

बिकौ । पाँच टाका—पर ठेला । माल नै बिकौ, तें पाँच टाका के समाने कार्यकर्त्ता खाय लेतै—ढीबू के व्यवस्था छेलै । ई व्यवस्था सें कार्यकर्त्तो खुश तें, खोमचो वाला । वाह एकरा कहै छै धर्मी आरो भगत—आपनों एक-एक आदमी के खयाल राखै वाला ।

गनगन करी रहलों छेलै गाँव । ठाकुरबाड़ी के पछियें सटले बड़का पीपर रों गाछ । वहें पीपर गाछ के चार डाली पर चारो दिश कण्डाल लगैलों गेलों छेलै । दिन-रात भजन-कीर्त्तन ठनका वाला आवाजों में गूंजतें रहै । आबें अष्टयाम छेलै, तें एक्को पल रुकतियै केना । रात भरी सौंसे गाँव उधियैतें रहै । जे सुतें पारलों—ऊ मीर, नै तें अधीर। केकरों मजाल कि जाय कें कोय ढीबू कें बोली दौ—जरा कण्डाल के आवाज कम करवाय दौ । ई तें गनीमत समझों कि इलाका भरी में जगह-जगह पर कण्डाल तारों सें नै जोड़वैलकै, होना कें ढीबा के विचार तें यही छेलै । शहरों में ई वेवस्था देखलें छेलै । पीपर गाछी पर चार कण्डाल लगाय के जबें पहिलों दाफी विरोध होलै, तें ढीबां कहलकै, ''जे पीपल गाछ पर तैंतीस करोड़ देवता बसै छै, हुनका सिनी कें, की ई चारे कंडाल सें भजन-कीर्त्तन सुनैलों जावें सकै छै—एक करोड़ देवता पीछू कम-सें-कम एक कण्डाल लगतै की नै ? मानी कि तैंतीस कण्डाल ।'' एकरा सें ज्यादा बात करै के फुर्सत ढीबू कें नै छै ।

हुन्नें ढीबू के आदमियो कम व्यस्त नै छेलै—रोज-रोज, कुछ-नै-कुछ ढीबू के बारे में नया खबर लोगों के बीच लानै—

''आय हुनी है पड़पड़िया रौदी में एक ठोप पानियो नै राखलकै जीहा पर''

''आय हुनकों एक दिवसी साधना छेलै''

''दू दिन सें एक सबद नै बोललै''

'' एकदम निराहार छै तीन दिनों सें''

ढीबूं चुल्हाय का रों गोड़ पकड़ी लेलकै । केन्हों-केन्हों बुद्धि लगाय रहलों छै, आखिर केकरों लें—ओकरे लें नी । चुल्हाय के भी मोंन भरी गेलै । मनों में कुछ बात उठलों छेलै, वहू धोलाय गेलै, मजकि ढीबू सधलों जोतसी रं ओकरों मन-मिजाज कें गमतें कहलकै, ''काका, है नै समझियों कि सतकर्म के फोंल बेरथ जाय छै । धर्म तें कपली गाय होय छै, आरो कोय काम बेरथ चल्लों जाय तें चल्लों जाय, कपली गाय के सेवा नै.....काका जखनी हम्में हरीद्वार में छेलियौं, एक साधू के सेवा करै छेलियै, हुनी समाधि लेलकौं तें हम्में हुनकों समाधिये थान के सेवा करें लागलियै । पहलें तें ऊ समाधि थान पाँच हाथ के छेल्हौं, दुवे साल में ऊ दस हाथ के जमीन पर फैली गेलौं । भजन करियौं, प्रवचन

करियौं, भीड़ लागौं, फेनू एक दिन जहाँ तांय भीड़ लागलोॅ छेलौ, वहाँ तांय बाँसबत्ती सें घेरवाय देलियौं । पैसा तेॅ भादोॅ के पानी रं झरौं । जों ऊ सन्यासिनी के फेर नै पड़तियौं तेॅ की हम्में यहाँ होतियौं । चुड़ैल की रं हमरा आपनोॅ माया में फाँसी लेलकौं । खुल्ला बाल, हाथोॅ में कड़ा आरो चुट्टा देखी केॅ हमरोॅ मति भ्रम में पड़ी गेलौं । सब खजाना के सब तरह सें मालकिन वहेॅ होय गेलौं..... .मजकि जावै लेॅ दहौ सब बातोॅ केॅ । हम्में तेॅ तोरोॅ मन गमतें है सब कहीं देलियौं; फेनू यहू बात छै—हमरोॅ बाद तोंही नी धरमदास ।''

चुल्हाय एकदम नरम पड़तें कहलकै, ''तोहें जत्तेॅ बात मनेमन सोची गेलौ ढीबू, ओत्तेॅ दूर तांय हम्में नै सोचलेॅ छेलियै । हों एतना टा जरूर सोचलेॅ छेलियै कि ई अष्टयाम सें जों हमरोॅ व्यापार आरो बढ़ी जाय, तेॅ आपनोॅ आढ़त अलगे लगय्यै ।''

''होतै काका, यहू होतै, मजकि पहिले अष्टयाम । आरो हों, बहुत सोच-विचार के बाद हम्में सोची लेलेॅ छियै—छाती पर कलश राखी केॅ निराहार रहै के ।''

फेनू की । भोर होतें न होतें खबर फैललै कि ढीबू रामनवमी के ठीक नौ दिन पहिले सें रामनौमी तांय निराहरै रहतै, छाती पर कलश धरनें—नै जीहा पर एक बूँद पानी जैतै, नै दिशा-मैदान । यहाँ तांय कि सबके छायायो सें दूर रहतै । देखियो केॅ कोय नै देखेॅ पारतै ।

सबकेॅ आचरज हुऐ । फेनू यहू सोचै, ढीबा वास्तें एत्तेॅ सब बात खाली ढीव नै हुऍ पारेॅ । पूरे इलाका में ई खबर सें सनसनी छै । मजकि जोतखी का केॅ ई सब बातोॅ पर एकदम विश्वास नै । कहै छै—जे पेटू दिन भरी में बीस बार अंगुली जुठावै छै, ऊ नौ दिन छाती पर कलश धरलें भुखलोॅ रहतै, हुवै नै पारै । सुनियैं, निराहार रहै के दिन ऐत्हैं गामोॅ सें फिरारे होय गेलोॅ छै । विश्वास नै छौ तेॅ देखी लियैं । आरो रहिये गेलोॅ छै कत्तेॅ दिन—बस आरो तीन दिन ।

आय दू रोज सें ढीबा कुटिया सें बाहर नै निकली रहलोॅ छै । ई बात खाली चुल्हाय केॅ मालूम छै कि कैन्हें नी ऊ बाहर निकली रहलोॅ छै—रिहर्सल करी रहलोॅ छै, जखनी मॅन तखनी चित्त लेटी जाय छै, छाती पर भरलोॅ कलश राखी केॅ आरो फेनू आठ-नोॅ घंटा पड़ले रहै छै.....तखनी ओकरोॅ मोॅन एकदम चंचल होतें रहै छै, किसिम-किसिम के बात उठतें रहै छै.....दास बाबू के छाया उभरै छै, सरपंच-मुखिया के छवि उठै छै आरो सबके आँख ओकरे दिश उठलोॅ होलोॅ.....तखनी ढीबा के ठोरोॅ पर मुस्की फैली जाय छै आरो ऊ बुदबुदाय उठै छै.....दास बाबू, तोरोॅ कारनामा केकरा नै मालूम छै, ऊ तेॅ मुखिया-सरपंच तोरोॅ पच्छोॅ में छौं, बस यही लेॅ, है अष्टयाम में तोरोॅ दरियादिली

के मतलब हम्में नै समझै छियौं की ? आरो फेनू हम्में देखै नै छियै, की रं सरपंच-मुखिया तोरो ँ पीछू लागलो ँ रहै छौं एकदम दासमदास । आबे ँ जे एत्ते ँ भक्ति करै छौ तोरो ँ, ओकरो ँ विरुद्ध तोहें बोलवौ करभौ ते ँ केना के ँ । शिवाला तांय मुखिया के हाता में होय गेलै.....तबे ँ की करभौ, भगवानो ँ के ँ यहे ँ मंजूर छै । हौ कहै छै नी कि भगवान ते ँ भक्त के मुट्ठी में कैद होय छै, तबे ँ मुट्ठी जेकरो ँ जत्ते ँ मजबूत, ऊ ओत्ते बड़ो ँ भक्त आरो मुट्ठी मजबूत होय वास्तें की चाहियो ँ—हड्डी-माँस ? नै, एकरो ँ वास्तें चाहियो ँ टाका ।....ई सब जे हम्में एत्ते ँ उद्योग करी रहलो ँ छियै, कथी ले ँ ?

सोचतें सोचतें ढीबू एत्है खुश होय जाय छै ऊ छाती पर धरलो ँ कलश के ँ एक दिश धरी, स्प्रिंग वाला पुतला नाँखी उछली के ँ खाड़ो ँ होय जाय । ध ोती ठेहुनां सें ऊपर उठाय के ँ ढेका खोसै आरो कोठरी में 'ता थै' के नाच शुरू करी दै—कभी थोड़ो ँ लबी के ँ दोनों टांग फैलाय लै, कभी बारी-बारी सें दाँया-बाँया कमर के बरोबर उठाय लै आरो कभियो दोनों हाथ ऊपर नीचे करतें कोठरी के एक दिश जाय ते ँ कभी दुसरो ँ दिश । एकदम उन्मक्त होय उठलै ढीबू।

थकी गेलै ते ँ कलशो ँ छाती पर राखी के ँ होने दोनों हाथ कमर तांय सीधा करतें चित्त लेटी गेलै ।

आरो ऊ दिन ते ँ सब्भे के मुँहो ँ पर बस ढीबू के चर्चा छेलै । ठाकुरबाड़ी के ठीक पीछू, पीपर गाछी सें थोड़ो ँ हटी के ँ आठ हाथ लम्बा आरो तीन हाथ चौड़ा गड्ढा खोदलो ँ गेलै—करीब पाँच हाथ गहरा । वही में पुआल पर साफ-साफ गेरूआ रं के चादर बिछेलो ँ गेलै आरो वही पर जबे ँ ढीबू चित्त लेटी गेलै—छाती पर धान सें गुंथलो ँ गिल्ला मांटी के चकती धरी के ँ आरो चकत्ती पर भारी रं कलशो ँ—जे आमो ँ के पल्लो से ढँकलो ँ छेलै, ते ँ सबके आँख लोराय गेलै ।

ढीबूं एक दाफी नजर फेरी सबके ँ निहारलकै आरो फेनू इशारा करलकै । इशारा करत्है गड्ढा के ऊपर तख्ता बिछाय देलो ँ गेलै । फेनू तख्ता पर बित्ता भरी माँटी के मोटो ँ परत । जेना कि गड्ढा पर तख्ता रखै सें पहिलें ढीबूं देखवैया के ँ देखी आहिस्ता से हाथ जोड़ले ँ छेलै, होने के ँ, तख्ता पर मिट्टी पड़त्है सब्भैं ढीबू के जिनगी ले ँ ठाकुर दिश मूँ करी हाथ जोड़लकै ।

जमीन के सो ँर बराबर होना छेलै कि भजन-कीर्त्तन, ढोल-झाल के हेनो ँ विन्डोवो ँ उधियैलै कि मत पूछो ँ । चारे कंडाले चार सौ के काम करे ँ लागलै । कुछ हेन्हे कि आपनो बात कहै ले ँ कण्डाल के जरूरत पड़े ँ । गाँव भरी के लोगो ँ के मुँहो ँ पर बस ढीबुए के चर्चा ।

जों-जों दिन कटलो॑ गेलै, चर्चो गनगनैलो॑ गेलै । रामनौमी आरो अष्टयाम के जिकर के बदला ढीबुए के चर्चा छेलै ।

आठमो॑ दिन बीती रहलो॑ छेलै । कल्हे ढीबू बाहर निकलतै । देखवय्या ते॑ हद-हद हो॑-हो॑ करी रहलो॑ छेलै ।

मतरकि है की ? माँटी आरो तखता हटैलो॑ गेलै ते॑ गड्ढा में ढीबू वहाँ कहाँ छेलै । बिछैलो॑ चादर पर, ढीबू के जग्घा पर मांटी सें जेना-तेना बनैलो॑ आरो भसकलो॑ आदमी छेलै आरो धान के घास चारो दिश उगलो॑ । गाँव-टोला आरो इलाका भरी में खबर भादो के बोहो॑ रं होहाय उठलै—ढीबू धरमदासें देह तेजी देलकै, माँटी के देह माँटी बनाय लेलकै, कोय बात सें हुनको॑ मो॑न दुखित होय गेलो॑ छेलै ।'' खबर दै वाला के आँख लोराय रहलो॑ छेलै ।

गड्ढा देखवैय्या के ते॑ ठ्ठ्ठ लागी गेलै । इंचियो भर जग्घो॑ नै कि टाँगो॑ बीचो॑ सें निकली के॑ कोय बच्चो वहाँ तांय पहुँची जाय । लोग पीपरो॑ गाछी पर चढ़ी-चढ़ी गड्ढा हुलकी रहलो॑ छै ।

सबके चेहरा पर किसिम-किसिम के भाव छै, मजकि चुल्हाय के चेहरा पर एक्के भाव—जों केन्हौ के॑ ढीबा पकड़ाय जाय ते॑ ओकरा यही गड्ढा में जीत्ते जी भत्ती दियै । कलश में पानी राखै के जग्घा में चंदा रो॑ लाखो टका राखी के॑ गायब होय गलै । जहाँ टाकावाला कलशो॑ गाड़ी जाय के बात वैं कहले॑ छेलै, वहाँ ते॑ पानी भरलो॑ कलशो॑ छेलै । चुल्हाय के॑ आपना आप पर भारी गोस्सा ऐलै कि तखनिये वैं एक दाफी कैने नी माँटी खोदी के॑ कलशो॑ देखी लेलकै, जे ढीबा के गायब होला के बाद देखलकै ।

आरो चुल्हाय चट सना एक कसलो॑ थाप आपनो॑ दाँया गाल पर दै मारलकै । ओकरो॑ कानो॑ में जोतखी का के खिलखिलैवो॑ सुनाय पड़ै छै, मतरकि चुल्हाय इस्थिरे बनलो॑ रहै छै ।

आरो ऊ जे चुप होलै ते॑ चुप्पे होय गेलै । कुछ नै बोलै छै ।

ढीबा के हौ रं अलोपित होय गेलो॑ साल भरी होय गेलो॑ छै । जहाँ सें ऊ गायब होलो॑ छेलै, वहीं पर आबे॑ एक लम्बा-चौड़ा समाधि स्थान छै । समाधि पर लिखलो॑ छै—ढीबा धरमदास समाधि-स्थल । समाधि-स्थल महीना भरी में अपने आप एक हाथ बढ़ी जाय छै आरो ओकरो॑ बढ़त्हैं घेरलो॑ दीवारो अपने आप हाथ भरी बढ़ी जाय छै । केना बढ़ी जाय छै ? जों कोय वांही पीपरो॑ गाछ के नीचें बैठलो॑ चुल्हाय धरमदास सें पूछै छै, ते॑ उत्तर दै के बदला खाली उल्टा राखलो॑ एक तखती सीधा करी के॑ देखाय दै छै, जै पर लिखलो॑ छै—''धरमदास ढीबू के पुण्यफल सें ई संसार में कुछुओ संभव छै, कुछुओ आचरज नै।''

एक सावित्री रोॅ मौत

''तोहें ठिक्के पहचानलौ बाबूजी, ई वही बसमतिया छेकै—छट्ठू मरड़ के जेठी बेटी, मतरकि आबेॅ एकरोॅ नाम बसमतिया नै । आबेॅ यैं आपनोॅ नाम रबिया खातून बतावै छै ।''

''से कैन्हें ?''

''बड़ी लम्बा कहानी छै बाबूजी । सब तेॅ बतैबोॅ एकदम मोश्किल । होनो केॅ के नै जानै छै—बसमतिया के कहानी ! आबेॅ तेॅ गाँव केरोॅ बच्चा-बच्चा जानी लेलेॅ छै—बसमतिया के कहानी । बसमतिया नै कहिऐ बाबू ! रबिया खातून कहिऐ ।''

''मतरकि ई सब होलै केना ?''

''की कहियौं बाबूजी; ननकेसर भगत छेलै नी—अरे वही, पूबारी टोला वाला ननकेसर भगत—ओकरे बेटा कर्कट....की कहियौं बाबूजी, ऊ तेॅ बसमतिया पर ई रं लट्टू-लट्टू छेलै कि बस ! गाँव-टोला भरी में दोनों के प्रेम के चर्चा उठतैं रहै। यहू बसमतिया की कम रहै बाबूजी.... कहै के तेॅ तेरह-चौदह बरस के छेलै, मतरकि राधाहौ के कान काटैवाली ।''

''जात तेॅ दोनों के एक्के छेलै । कैन्हें नी ननकेसर आरो छट्टूं बातचीत करी केॅ दोनों के जोड़ी लगाय देलकै ।''

''ई बारे में आबेॅ हम्में की कहियौं, मतर एत्तेॅ तेॅ जानै छियै कि ई बातोॅ केॅ लै केॅ बसमतिया मांय कर्कट के दुर्गत पुराय देलकै । समैयो के फेर देखोॅ, की सुमति-कुमति के फेर पड़लै कि बसमतियो के मोॅन धीरें-धीरें कर्कट सें उचाट हुऐॅ

लागलै ।''

''से कैन्हें ?''

''ई बारे में की बतैय्यौं बाबूजी । होना कें गोतिया-लोहिया रों यही कहवों छेकै कि बसमतिया मांय ओझा-गुनी रों मन्तर पढ़लों बतासा बसमतिया कें खिलाय देलें रहै—देवघरों के परसाद कही कें, आरो वही दिनों सें बसमतिया रों मोंन कर्कट दिशों सें उचाट हुऍ लागलै । मजकि ईटहरीवाली भौजी के तें कहवों छेकै कि एकरा ओकरी मैय्यें कहनें छेलै कि आबें सें जों बसमतिया कर्कट सें मिललै-जुललै, तें वैं ओकरों चमड़ी उतरवाय देतै आरो यहें डरों सें यैं कर्कट सें मिलनौं-जुलनौं छोड़ी देलकै....मतरकि कर्कट एकरा कहाँ सें छोड़ै वाला छेलै । कोय-न-कोय वक्त, आरो कोय-न-कोय बहाना बनाय कें ऊ दिन भरी में बसमतिया सें मिलिऐ लै.... ई परेमो अजगुत चीज होय छै बाबूजी—आदमी कें नचाय-नचाय कें राखी दै छै....आरो जबें देवी राधाहै कें नचाय देलकै, तबें मनुक्खों के की बात । मजकि बाबूजी, की हेनों परेमों सें केकरौ जशो मिललों छै ? बदनामी छोड़ी कें आरो मिलले छै की ? कर्कटो के की नै दुर्गत पुरलै.... की कहियौं बाबूजी, एक राती बसमतिया मांय ओकरा आपनों घरों के पिछुवाड़ी में पावी, ओकरों जुल्फी लचाय-लचाय कें जे पिटाय करलकै कि मत पूछों, ओकरों परेम करै के सब निशाँवे उतरी गेलै । की जानौं, केना कें भोर होत्हैं-होत्हैं ई खबर सब्भे कें मिलियो गेलै । पूबारी टोलों सें लै कें पछियारी टोलों आरो उतरवारी सें लै कें दखिनवारी टोलों तांय रों के नै जानलकै ।...कर्कटो आपनों कारिख लगलों मूँ कहाँ-कहाँ नुकैतियै, तेसरे दिन जे गाँव छोड़लकै, तें आय तांय नै लौटलों छै । कोय तें कहै छै, कर्कटें कहलगांव टीशनों के नगीच टरेनों सें कटी कें जान दै देलकै—लहाश छिनमान कर्कटे सें मिलै-जुलै छेलै, मजकि सुरेनमां आपनों आँखी देखलों बतावै छै कि वैं पौरकां साल कर्कट कें जमालपुर टीशनों पर खोमचा बेचतें देखलें छेलै—सुरेनमा कें देखत्हैं ऊ भीड़ कें ठेलतें टीशनों सें बाहर निकली गेलै । आबें के की कहें सकै छै बाबूजी कि कर्कट जीत्तों छै आकि मरी गेलै.... ।''

''मजकि बासमती रों ई हाल ?''

''मत पूछों बाबूजी, कर्कट के गेला रों बाद, साल भर तें बसमतिया रों घर-दुआर सें निकलवों बन्द होय गेलै—नद्दी-बारी करबों तें छोड़ी दौ । जोंर-जनानी की बात कहै छै, की सुनभौ । तोरा याद होतौं बाबूजी, नहियो हुऍ, तबें महमूदवा चार या पाँच साल के होतै ।''

''के महमूदवा ? वहें इस्माइल रों बेटा ?''

''हों-हों बाबूजी, वहे ॅ इस्माइल रो ॅ बेटा, तबे ॅ ते ॅ यादे छौं । बम बैजनाथ, हम्में एक्को बात जों झूठ बोलतें रहौं बाबूजी । महमूदवा रो ॅ लच्छन हमरूहो ठीक नै लागै, मजकि गाँव-जवार रो ॅ बात छेलै, के की बोले ॅ । होना के ॅ जे कहो ॅ बाबूजी, घरवैय्या के ॅ बुरा लगौ, नै लगौ, आन-आन के ॅ बुरा जरूरे लगै—घरे-घर काना-फूसी ते ॅ चलवे करै ।''

''ते ॅ तोरो ॅ मतलब छै की..... ।''

''बम बैजनाथ, जों हम्में झूठ बोलतें रहौं । विश्वास नै छौं ते ॅ गामो ॅ के बिन्देसरी पांडे, कैलू भगत, रामचन्नर मरड़, गोविन्द घोष—जेकरा सें चाहौ, पूछी ला । सब्भैं एक्के बात बतैथौं । ठिक्के कहावत छै कि तिरिया रो ॅ चरित्तर आरो पुरुखो ॅ के भाग—भगमानो नै जानै छै ते ॅ आदमी की जानतै । यहे ॅ बसमतिया जे कर्कट बिना चोइयाँ नोचलो ॅ मछली सन लागै छेलै; महमूदवा साथें लटसट होल्हैं केन्हो ॅ हलफलाय उठली छेली—ई ते ॅ हम्में आँखो ॅ देखलो ॅ बताय रहलो ॅ छियौं बाबूजी । बसमतिया के फेनू सें नद्‌दी-बारी जाना शुरू होय गेलो ॅ छेलै ।''

''ते ॅ की एकरी मांय एकरा नै रोकै छेलै ?''

''माय की रोकतियै बाबूजी, जे आपन्हैं चरतें-फिरतें रहै, वैं बेटी के ॅ भला की रोकतियै....नारी मरजाद के ॅ ताखा पर राखी देले ॅ छेलै बाबूजी ।''

''ते ॅ दोनों रो ॅ व्याह कैन्हें नी करी दै छेलै ?''

''अहा, वही कहाँ हुएँ सकलै । माय जे कुछ सोचै छेलै, ओकरा सें ते ॅ ऊ बाते छिनाय गेलै ।''

''ऊ की ?''

''तोंहे ते ॅ जानवे करै छौ कि छट्‌ठू के खाय-पीयै के ठिकानाहे की छेलै । खींची-तीरी के ॅ बसमतिया रो ॅ जनम तांय ते ॅ चललै, मतरकि ओकरो ॅ बाद बसमतिया माय बसमतिया के ॅ लेनें चचेरो ॅ दियोर खखरूहै कन पड़ली रहै छेलै । मजकि तोहें कहो ॅ बाबूजी, ई कोय अच्छा काम भेलै ! पेट रो ॅ आगिन केकरो ॅ पास नै होय छै....आरो एक दाफी शरम जेकरो ॅ साथ छोड़ी दै छै, तबे ॅ ते ॅ जानबे करै छो ॅ बाबूजी....खखरा गामे के पुलिस चौकी में रतजग्गी करै छेलै....अरे बाबूजी, चाम जरै छै ते ॅ केकरा लुग नै दुर्गन्ध पहुँचै छै । धीरें-धीरें बसमतिया माय आरो खखरा के लटसट वाला दुर्गन्ध पुलिसो ॅ के नाकी के ॅ लागी गेलै । ओकरो ॅ बाद ते ॅ बसमतिया माय के ॅ लेले ॅ दिन-रात खखरा के ॅ फांड़ी पहुँचते ॅ के नै देखै. ... मतरकि जुआनियो की ओरदा पूरै तांय के होय छै बाबूजी, ओकरूहौ में दस ठो के होय के ॅ—एक्के-दू साल में ते ॅ बसमतिया माय गुलगुलैन नाँखी दिखावे ॅ लागलै आरो जबे ॅ ओकरो ॅ मोल घटलै ते ॅ बसमतिया के ॅ महमूदवा के हाथें बेचै के बात

सोचेॅ लागलै.... नै मालूम, बसमतिया माय केॅ केकरा सें तेॅ ई पता चली गेलोॅ छेलै कि इनरकास्ट बीहा होला सें सरकारी पैसा साथें-साथें सरकारी नौकरियो मिलै छै । .....पेट जे नै करावेॅ । एक दिन वैं बसमतिया केॅ—की कहै छै ओकरा—कोर्ट मैरिज ? वहा करावै लेली गाँमोॅ सें भोरे-भोर बाहर भेजी देलकै ।''

'तबेॅ ?''

''तबेॅ की । तबेॅ तेॅ बिन्डोवोॅ उठवे नी करलै बाबूजी, गामोॅ में । भोरे-भोर खैरावाली, डुमरीवाली आरो गोलहट्ठीवाली जे उधियैलै की मत पूछोॅ—सात पुस्त केॅ निनौन पुराय केॅ राखी देलकै । आखिर हम्मी पूछै छियौं बाबूजी, कैन्हें नी पुरैतियै—गाँव-जवार के मरजाद तेॅ सब्भे पर होय छै । होय छै कि नै बाबूजी ?''

''मजकि बसमतिया रोॅ ई हाल ?''

''वही तेॅ बताय लेॅ चाहै छियौं । बसमतिया केॅ लै केॅ जबेॅ महमूदवा गाँव सें चली देलकै, तबेॅ गाँमोॅ के भयंकर बिन्डोवोॅ उठलै—हिन्दू-मुसलमान रोॅ बिन्डोवोॅ—एक दिश हिन्दू पट्टी रोॅ भोला पासवान, जोगिन्दर जादव, रामकिसुन सिंह रोॅ भीड़ आरो दूसरोॅ दिश मौलाना साथें सब्भे मुसलमान पंचपट्टी वाला मैदानोॅ में जुटेॅ लागलौं । हमरोॅ करेजोॅ तेॅ लोहारोॅ के धौंकनी रं हुएँ लागलौं । ऊ तेॅ ठीक टैम पर दरोगा-निसपिट्टर आवी गेलौं बाबूजी, दू दाफी हवा में फेरिंग करलकौं आरो बन्दूक के आवाज होना छेलै कि एक-एक करी केॅ दोनों पट्टी के लोग खिसकी गेलौं । मतरकि महीना भरी गामोॅ में डोॅर बनले रहलौं बाबूजी, नै हमरा सिनी हुन्नें जइयौं, नै मुसलमान टोला के कोय्यो हिन्नें आवौं ।''

''मजकि ई बसमतिया.... ?''

''बसमतिये के बारे में बताय लेॅ जाय रहलोॅ छियौं....एकरोॅ लेली की-की नै होलै, मजकि सब बतैवोॅ मोश्किल बाबूजी ! टोला-टोला में पुलिस घूमेॅ लागलौं—बसमतिया केॅ खोजै लेॅ । वसुदत्त सरपंचे मियां टोली केॅ चेतावनी दै देलेॅ छेलै—जों पाँच रोजोॅ में बसमतिया केॅ हाजिर नै करलोॅ गेलै तेॅ मियां पट्टी के सब गुंडागर्दी हेट करी देलोॅ जैतै । भला तोहीं बतावोॅ बाबूजी, यै में मियां पट्टी वाला के की दोख छेलै आरो जों हमरा सें साफ-साफ पूछोॅ तेॅ यै में खाली दोखी छै बसमतिया माय । यै में इस्माइल के की दोख ? महमूदवो रोॅ की ? दही बिल्ली रोॅ आगू राखवौ तेॅ चाटवे करतै—ऊ बिल्ली काली रहौक कि गोरी ।''

''हों, तबेॅ की होलै ?''

''होना की छेलै बाबूजी । गामोॅ में बसमतिया रहतियै, तबेॅ नी । मतरकि कानूनोॅ सें के बचेॅ पारलेॅ छै । दसो रोज बितलोॅ नै बितलोॅ होतै कि दरोगा साहबें पकड़िये तेॅ लेलकै महमूदवा केॅ । मुंगेरी के हौ कौन टोला कहावै

छै—इखनी नाम भुलाय रहलोॅ छियौं—कहै छै, सौ योजन दूरो के चीज गिद्ध केॅ दिखाय पड़ै छै । नै जानौं, केना पुलिसोॅ केॅ ई खबर लागी गेलै कि महमूदवा बसमतिया केॅ लै केॅ मुंगेर भागी गेलोॅ छै—मानै लेॅ होथौं पुलिसोॅ केॅ, अजगुत बरेन राखै छै बाबूजी, केन्हौं न केन्हौं सच केॅ उगलवैय्ये लै छै, आरो होलै वही। हेनोॅ पेंच मारलकै कि.... की कहै छै हुनका, जे मुसलमानोॅ के शादी-बीहा कराय छै, जे भी कहैतेॅ रहौ, हुनका सें एक-एक करी केॅ सब बात उगलवाय लेलकै । तबेॅ की छेलै । .....हेनो केॅ जे कहोॅ बाबूजी, बीहा जबेॅ होय्ये गेलोॅ छेलै तेॅ एत्तेॅ घिकवा-मंथन करला सें फायदे की छेलै ।''

''से तेॅ ठीक छै । वहू में जबेॅ बसमतिये माय चाहै छेलै ।''

''बसमतिया माय की चाहै छेलै आरो की नै, ई तोहें की जानवौ बाबूजी, ओकरोॅ तेॅ एक्के किंछा छेलै—कोय रकम सें सरकारी पैसा पावै के । मतरकि ओकरोॅ मनसुआ पर जेना पानी फिरी गेलै, तभिये तेॅ वहूं ई बवंडर के विरोध नै करलकै । बलुक घूमी-घूमी केॅ टोला सें लै केॅ थाना तांय यहेॅ कहतेॅ फिरै कि इस्माइलैं जानी-बूझी केॅ हमरा धरमभ्रष्टोॅ करै लेली हमरी बेटी केॅ उड़वैलेॅ छै.... हद होय गेलै.... बाबूजी, पुलिसोॅ सें तेॅ लटसट छेवे करलै, तभिये तेॅ पुलिसवाल्हौं जी-जान एक करी देलकै । नै तेॅ हेनोॅ इग्गी-दुग्गी परिवारोॅ लेली पुलिसोॅ केॅ की पड़लोॅ छै ।''

''तेॅ तोहें बसमतिया के बारे में बताय रहलोॅ छेलैं ।''

''कहै लेली बसमतिये पर खाली की, ई घटना सें जुड़लोॅ बहुत्ते पर बहुत कुछ कहलोॅ जावेॅ सकै छै, मजकि की होतै कही केॅ.... कहल्हैं सें की होय जैतै । आबेॅ तेॅ बसमतियौ केॅ जिनगी में जे भोगना छै, भोगी रहलोॅ छै—देखवे करै छौ । होना केॅ जे कहोॅ, जों महमूदवा केॅ पुलिसें नै पकड़तियै.... होना केॅ पकड़ियो केॅ कहाँ पकड़ेॅ पारलकै पुलिसें ।''

''से केना ?''

''अरे, की बतैय्यौं बाबूजी, महमूदवा के जग्घा में एकरूहै खींची-तीरी केॅ थाना लानलोॅ गेलै । जोॅन वक्ती बसमतिया केॅ थाना लानलोॅ गेलै, की बतैय्यौं, देखैवाला के की भीड़ छेलै । लागै छेलै, थाना में मेला लागलोॅ रहेॅ । मौगी, मरद, बूढ़ोॅ-बुतरू के ठसाठस भीड़ में जबेॅ पुलिसें बसमतिया सें पूछना शुरू करलकै, तेॅ की कहियौं.... मजकि वाह, बसमतियौं आपनोॅ नाम रबिया खातून छोड़ी केॅ आर नाम नै बतैलकै बाबूजी । पुलिसें जबेॅ माय-बाप के नाम पूछै तेॅ यहेॅ कहै, 'हमरोॅ कोय माय-बाप नै ।'..... जहलोॅ में राखलोॅ गेलै, मजकि बसमतिया पर तेॅ जेना भूत-नाम्ही गेलोॅ रहेॅ । बस एक्के बात बोलै, 'हमरोॅ कोय माय-बाप

नै ।''
''तबेॅ ?''
''तबेॅ की ? डागडरी जाँच भेलै । बसमतिया केॅ कै दिनोॅ तांय कोर्ट-होस्पीटल लै गेला बादें, नै जानौं डागडर आरो पुलिसें मिली-जुली की गिटपिट करलकै आरो बसमतिया केॅ छोड़ी देलकै ।''
''ई कैन्हें, कि ससुराल जाय के बदला यहाँ हटिया में तरकारी बेची रहलोॅ छै ?''
''नै तेॅ आरो की करतै बाबूजी ।''
''कैन्हें, महमूदवां नै लै गेलै ?''
''आय बाबूजी, तोरा तेॅ ई बतैये लेॅ भूली गेलियौं कि जोॅन वक्ती पुलिसें बसमतिया केॅ मुंगेरी में पकड़लकै, तबेॅ तेॅ महमूदवा साथे छेलै, मजकि, थाना पर लोगें नै देखलकै । की कहियौं बाबूजी, दस आदमी, दस रं के बात । कोय कुछ कहै छै, कोय कुछ । तबेॅ तेॅ बिरजू मिसिर हकाय-हकाय केॅ कहै—पुलिसवालां पैसा लै केॅ महमूदवा केॅ छोड़ी देलेॅ छै, मजकि नसीम मियां तेॅ यहेॅ कहलेॅ फुरै कि बसमतियै मांय पुलिसोॅ केॅ पैसा-कौड़ी दै केॅ महमूदवा केॅ भगवाय देलकै—रहस खुली जाय के डरोॅ सें । आबेॅ के की कहेॅ सकै छै । मजकि एतना बात तेॅ जरूरे छै कि तबेॅ सें महमूदवां जे गाँव छोड़लकै, तेॅ घूमी केॅ ओकरोॅ छायाहो यहाँ लौटी केॅ नै ऐलै ।''
''मजकि बसमतिया रोॅ ससुरालवाला ?''
''तहूँ की बात करै छौ बाबूजी । बसमतिया सें मतलब छेलै तेॅ महमूदवा केॅ । घरवाला केॅ एकरा सें की लेना-देना छेलै । बलुक पुलिस-उलिस के चक्कर देखी केॅ तेॅ घरवालां साफ-साफ कही देलकै कि 'हमरासिनी कोय बसमतिया आकि रबिया खातून केॅ नै जानै छियै; जों महमूदवा गलती करलेॅ छै तेॅ ओकरा मारोॅ-डँगावोॅ ।'....मजकि सच पूछोॅ तेॅ बाबूजी, भीतरिया बात कुछु आरो रहै । इस्माइल के साफ-साफ कहना छेलै कि जे जनानी जहल काटी केॅ ऐलोॅ छै, ओकरोॅ अखण्डोॅ होय के की भरोसोॅ । यही लेली बसमतिया केॅ इस्माइलें आपनोॅ द्वारी पर चढ़हौ लेॅ नै देलकै ।''
''ई तेॅ बसमतिया साथें बड़ा अन्याय भेलै ।''
''हों, बड़का भारी अन्याय, आरो की, यहू पर बसमतियां आपना केॅ रबिया खातून कहवोॅ नै छोड़लकै । अइयो कहै छै.... मजकि कहौ आपना केॅ भले कुछ, काम तेॅ आबेॅ करै छै आपनोॅ माय्ये वाला.... । की करतियै.... सास-ससुर छोड़ी देलकै, माय के देहरी लौटनैं नै छेलै.....नौड़ियो के काम पर तेॅ हिन्दू राखै लेॅ तैयार नै छेलै, तेॅ मियां पट्टी रोॅ लोग की.... जबेॅ एकरोॅ वास्तें कोय्यो नै रहलै,

तें सबकें ही यैं आपनों बनाय लेलकै.... पेट की नै करावै.... आबें तें देखवे करै छौ बाबूजी, कभी-कभी सब्जी बेचलकौं आरो कभियो आपनां कें.... नजर घुमाय कें देखिये लौ नी....।''

गर्वी दयालें कुछ यै ढंगों सें हमरा कहलकै कि हमरों नजर एकबारगिये बसमतिया दिश पलटी गेलै । देखलियै—तरकारी भरलों डलिया कें आपनों माथा पर उठैनें बसमतिया एक दिश चली देनें छेलै आरो अधवैसू उमरी के मरद, जे कुछुवे देर पहिलें सब्जी रों मोल-तोल करै छेलै, आबें कुत्ता नाँखी बसमतिया कें पिछुवैलें जाय रहलों छेलै ।

''सुरेनमा चोट्टा छेकौं.... आक्-थू, हेनों सब आदमी कें तें कमर सें काटी कें अलगाय देना चाही ।'' गर्वी दयाल के टनटनैलों आवाज तेज हुऍ लागलों छेलै । हमरा लागलै, हमरों सीना के खून एकबारगिये बलबलाय कें बाहर निकली ऐतै आरो यहू कि बसमतिया रों सौंसे देह खूनों सें लथपथ हुऍ लागलों छै ।

रैन भई चहुँ देस

पाँच दिन पहिलौं एतन्हैं जोरों सें बरसा होलों छेलै । कोशी गांग मिली कें एक होलै तें ओकरों तांडव लीला कटिहार सें लै कें नौगछिया तांय फैली गेलै । कटिहारों के यहें गाँव छेलै, जे बची गेलों छेलै । आय तांय नै भांसलों छै, कत्तो कैन्हैं नी बोहों आवी जाव । ई गाँव के बारे में यहाँकरों लोग यहें जानै छै कि सौंसे इलाका डूबी जाय, तें डूबी जाय ई गाँव केन्हौ कें नै डूबें सकै । औघड़ बाबां आपनों मशानी हड्डी सें ई गाँव कें घेरी देलें छै । आयकों बात नै छेकै, हजार, दू हजार साल पहिलकों बात छेकै.....नै जानौं कहाँ सें ऊ औघड़ ऐलों छेलै आरो यहें उतराही कोना सें सटलों असमसान में जमी गेलै । चार कट्ठा के जमीन पर झबरलों बोंर गाछी के नीचें । नै कुटिया, नै आसन-बासन । सावन-भादो के महीना छेलै । कोशी के पेटी हेनों उमतैलै कि मत पूछों । औघड़ के तें कुछ नै बिगाड़ें पारलकै, हों बोंर गाछी कें जड़ें सें उखाड़लें बही गेलै । औघड़ के गुस्सा तें हेनों बढ़लै कि जेना ऋषि जह्नु हेनों ही चुरूवे में लै कें कोशी कें पीवी जैतै । सात दिनों तांय पानी के बीच खाड़े रही गेलै, एकदम खाड़े उपास आरो जबें बोहों उतरलै तें ऊ औघड़ें एक हड्डी लै कें ई गाँव के सिमाना कें ही बांधी देलकै । वही दिनों सें कोशी कत्तों उछाल मारौ, ई गाँव में नै घुसें पारें.....गाँव के पुरखा-पुरातन सें ई कथा सुनलें छै किसनां, झुट्टों थोड़े हुएँ पारें ।

रात के टापेटुप अन्हार में किसनां आँख उठाय कें देखलकै—बाप रे बाप केन्हों अन्हार, जेना काली मांय आपनों देहों के रंग पोछी कें सौंसे इलाका

के देही पर पोती देलें रहें । सब कुछ कारों-कारों, कुछुओ नै दिखाय पड़ी रहलों छै । बस गंगा आरो कोशी के उमड़तें धार के आवाज । जेना काली माय रेतों पर छमछम नांचतें रहें । ओकरा लागलै, ऊ आवाज ओकरे दिश दौड़लों ऐतें रहें । ओकरों सौंसे देह भौवाय उठलै ।

''किसुनका होऽऽऽऽ''

''के नरैनां आं आं ?'' किसनां अन्हारे में आवाज लगैलकै

''हों, हम्मीं, काकी आरनी पार उतरी गेलौं । काकी कहलें छौं—फसिल लें जान जोखिम में डालै लें नै ।''

एकरों बाद कोय आवाज नै ऐलै, नै किसना फेनू आवाज देलकै ।

ओकरों आँखी के सामनां में अचोके केला रों खड़ा फसिल उब-डुब करें लागलै । लागलै कि वैं आपने हाथें आपनों दोनों हाथ चूरी लेतै, लहूलुहान करी लेतै, ताकि फेनू कभियों कोय किसिम के ऊ खेती करै लायके नै रहें ।

घंटा भर होलों होतै, पानी खूब झमाझम बरसी कें थमी गेलों छेलै । दालानी पर बेचैन घुमतै किसना सोचलकै, ई बोहा सें केला रों ओकरों खड़ा फसिल बर्बाद होय जाय छै, तें वैं केकरहौ दोषियो तें नै ठहरावें सकें । लछमनियौं तें मना करलें छेलै । कहलें छेलै, ''आपनों पास जे कुछ जमीन-जायदाद छौं आरो एकरा सें जतन्हैं टा मकै-गहूम रों फसिल होय जाय छै, ओकरा सें परिवार के तें भरण-पोषण होइये जाय छै, फेनू केला खेती के ई झमेला में की फँसवों । ज्यादा हाय-हाय करल्हैं सें की होतै, परेशानिये होतै आरो फेनू बचलों समय्यो रों सुख सपना ।''

मजकि किसनां अपनी कनियैन लछमनिया रों बाते कहाँ मानलकै । वैं देखलें छेलै कि कोंन रकम दस सालों के भीतरे नौगछिया, कटिहार, पुर्णिया, खगड़िया रों छोटों-छोटों किसान केला रों उपज करी मालोमाल होय गेलों छेलै । वहें किसान, जे पहिले कलाय, रहार, मकै के खेती करै, तबें हुनकों जिनगी हेनों तें खुशहाल नै रहै कि ऊ आपनों बेटा कें पटना आकि भागलपुरो भेजें पारें । आय तें वहें में सें कैकठो के बच्चा दिल्ली आरो बनारस में पढ़ै छै । हमरे टोला के यहें परमेसरी पाँच साल पहिलें हमरहें सें पाँच सौ रूपा लै गेलौं छेलै, पाँचे दिनों में वापिस करी दै के नाम पर आरो साल भरी में नै लौटावैपारलकै । आय महाजन बनलों होलों छै—केलाहै रों खेती पर । सब्भे कें मालूम छै, परमेसरी महीनै में सात-आठ हजार रूपा आपनों बच्चा लेली दिल्ली भेजै छै आरो ऊ हरकरिया, जे कल तांय दसो कोस पैदल चली कें ग्यारह-बारह बजें राती घोंर पहुँचै छेलै, आय ओकरों गोड़ कारों सें नीच्हें नै हुऐ छै.....जब ओकरों

कार गामोॅ में घुसै छै तेॅ माँटी के ऊबड़-खाबड़ रास्ता केॅ पार कारलेॅ सीधे ओकरोॅ घरे पर रुकै छै । सब केलाहै खेती के कमाल । आबेॅ तेॅ यहेॅ परमेसरी हमरौ सिनी सें अंगरेजिये में बतियैलकोॅ, बाप-दादा रोॅ भाषाहै भूली गेलै । खड़ियो बोली बोललकोॅ वहू में तीन-चार ठो अंग्रेजी शब्द दाली में फोरन नाँखी डालिये केॅ । जेना चौबटिया वाला पनेड़ी आपनोॅ पानोॅ में ऊपरोॅ सें कत्था जरूरे डालेॅ, भलेॅ कोय चाहेॅ की नै चाहेॅ आरो परमेसरी के दोनों बच्चा, ऊ दोनों तेॅ खैर हिन्दी जानवे नै करै छै—परमेसरी तेॅ जेना बस कोय अंगरेजी बच्चा केॅ गोद लेलेॅ रहेॅ..... ।

किसना के मोॅन सोचते-सोचतें केन्होॅ तेॅ होय उठलै, एकदम कसैलोॅ-कसैलोॅ । मजकि आधे-एक मिनिट लेली । तुरत्ते नरम पड़तें सोचलकै, ''वहूं तेॅ केलाहै रोॅ आमदनी सें आपनोॅ बच्चा केॅ दिल्ली-बनारस तांय पढ़ाय के बात सोचलेॅ छै—भले आपनोॅ बाप-दादा के जुबाने में—आखिर यही सोची कि हिन्दुस्तानों में जनमलोॅ छै तेॅ हिन्दी नै बोलतै तेॅ की बोलतै । जानले बात छेकै—जों बाप-दादा के भाषा नै बोलतै तेॅ आपनोॅ समाजोॅ, आपनोॅ देश-दुनिया के दुख-दरदे की समझेॅ पारतै...मजकि है सब तेॅ बादकोॅ बात । पढ़ौक कुछुए आरो जेना पढ़ौक—पढ़ै लेली पहिलें चाही टाका । आपनोॅ मुलुक में आबेॅ तेॅ धोॅन बिना शिक्षा के पूछो पकड़बोॅ मुश्किल.....। लछमनिया कहै छै, केला खेती नै करै लेॅ । की वैं है बात नै समझै छै कि एकरोॅ सिवा कोय दुसरोॅ रास्तो की छै । एक तेॅ भगवानें ई इलाका के मिट्टिये हेनोॅ बनैलोॅ छै कि केलाहे यै में सबसें बढ़िया उपजेॅ पारेॅ आरो दुसरोॅ बात छै कि आन खेती में टाका-पैसा लै केॅ ओत्तेॅ परेशानी तेॅ नहिये छै । खुचुर-खुचुर खर्चा करोॅ, एक मुश्त पैसा लगाय के जरूरत नै पड़ै छै, तेॅ अखरबो नै करै छै । आन खेती में तेॅ चोटे पर चोट । केला खेती में खुचुर-खुचुर लगावोॅ आरो हर दाफी झोला भरी-भरी सेती राखोॅ । परमेसरी मुरुख नै छै जे केला खेती नै छोड़ै छै । एक दाफी नै, कै दाफी बिन्डोवोॅ- अन्धड़-बतासें खेते के खेत ओकरोॅ केला गाछी केॅ उजाड़ी देलेॅ छै, तेॅ की वैं ई खेती छोड़ी देलकै...घाटा-लाभ सोचिये-परखिये केॅ तेॅ....

आरो यहेॅ लेली तेॅ किसना पहिलें परमेसरी होय के बात सोची लेलेॅ छेलै । सब ओरी सें हिसाब-किताब बैठाय केॅ वैं देखलकै कि मकै आरो गहुम रोॅ खेती के जग्घा में केलाहै रोॅ खेती पकड़ला में फायदा छै । तबेॅ वैं लछमनिया रोॅ एक बात नै मानलकै आरो सामाचरण बाबू के यहाँ सें सूद पर बीस हजार टाका लै आनलकै ।

सूद पर टाका लै के पहिलें किसना आपनोॅ दोस्त जगेसरो सें मिललोॅ

रहै । बात तेॅ यहेॅ छेलै कि जगेसरहैं सूदोॅ पर कर्जा लै केॅ केला खेती करै के सलाह ओकरा देलेॅ छेलै । सलाहे नै, यहू समझैलकै कि केला रोॅ एक खानी पर बीस सें पचीस टाका के मुनाफा छै । एक एकड़ में जों वैं छोॅ हजार टाका लगाय दै छै, तेॅ बारह हजार समझोॅ ओकरोॅ आपनोॅ छेकै ।

सुनत्हैं किसना के मोॅन झूमी गेलै । वैं करलकै भी वही आरो साल के ऐतें नै ऐतें किसना के खेतो केला गाछी सें लहलहावेॅ लागलै । केला के हरा रंगो सें ज्यादा ओकरोॅ मोॅन हरा होय गेलै । ओकरे नै, लछमनियो के । आपनोॅ भूल केॅ मानतें आरो किसना के साहस केॅ सरैहतें बोललै, ''जन्हैं काटेॅ वोॅन ।''

सचमुचे में किसनां आपनोॅ लगन आरो संघर्ष सें सब किसिम के विपति रोॅ जंगल काटी-छाँटी देलेॅ छेलै । कत्तेॅ मेहनत सें पटाय-पटाय केॅ वैं केला कंद खड़ा करलेॅ छेलै । समय-समय पर कोड़ाई साथें दवाय-दारू के छिड़काव तांय । किसना केॅ मालूम छेलै कि केला गाछ रोॅ सबसें बड़ोॅ बेमारी छेकै—बांझी । जों लागी गेलोॅ तेॅ एकेक पौधा सूखी-सूखी सनसनाठी बनी जाय ।

यही डरें लछमनिया तेबारी थानोॅ में कबूलतियो गच्छी ऐलोॅ छेलै आरो मने-मन यहू कबूली ऐलोॅ छेलै, जों फसल ठीक-ठाक उतरी गेलै तेॅ वैं थान केॅ जरूरे पक्का करवाय देतै ।

तबेॅ के जानै छेलै कि हेनोॅ बारिस होतै । हथिया में सताहा । दस दिन पहिलें किसना केॅ बोहो के चिन्ता नै छेलै । चिन्ता छेलै तेॅ बस एकरे कि कहीं केला पर चित्ती नै पड़ी जाय । चित्ती लगतै तेॅ व्यापारी ना-नुकुर करतै, बीस के माल दस में मांगतै; हेनोॅ केला केॅ छुवौ लेॅ नै चाहै छै । जगेसरे साथ रही केॅ किसना व्यापारी के चालबाजी सें खूब परिचित होय गेलोॅ छै । मजकि चित्ती लागी गेलै तेॅ वैं करवो करतै की । कम में नै बेचतै तेॅ की फसल खेमें में सड़ैतै । ई इलाका में एतना बड़ोॅ मंडियो तेॅ नै कि फसिल वाहीं जाय केॅ बेची आवौं । बस लै दै केॅ धनबाद, पटना, लखनऊ आरो बनारस । आरो जों कोय किसान चाहेॅ कि ट्रक ठीक करी आपन्हैं फसल वहाँ बेची आवौं तेॅ समझोॅ ओकरोॅ हेनोॅ आरो कोय बड़ोॅ मुर्खे नै । किसना के खयाल ऐलै—पिछुलका साल आन में छंगुरी कां यहेॅ करलेॅ छेलै । ट्रक ठीक करी वै पर केला लदवैलकै आरो पहुँची गेलै पटना । सोचलकै, दू के चार बनैवै आरो होलै की ? वहाँ तेॅ केला पहिल्हैं से बाजारोॅ में भरलोॅ छेलै । छंगुरी का केॅ की मालूम कि पटना में केला के भाव कम होय गेलोॅ छै । आबेॅ लौटैय्यो केॅ की लै जैतियै । पैसा-कौड़ी के अभाव में आखिर छंगुरी कां घरोॅ सें घाटा सही केॅ फसल बेची देलकै आरो हेनोॅ टुटलै कि दस साल तांय खेती के बातो नै सोचेॅ सकलकै ।

किसना सोचलकै—छंगुरी का रो॑ खेत ते॑ सड़के किनारी छै । व्यापारी के॑ टरको लानै में कोय दिक्कत नै । जबकि हमरो॑ खेत ते॑ सड़क सें बहुत हटी के॑ दूर पर छै, ट्रक नै पहुँचे॑ पारे॑ । बैलगाड़ी पर लादी के॑ पहिलें सड़क तांय लानो॑, यै में खरच अलगे । किसना मने-मन कुढ़ते॑ फदकलै, ''आखिर गामो॑ के मुखिया एतन्हौ टा कैन्हें नी करै छै कि गामे में एकटा हेनो॑ बाजार हुऍ, जै में हमरो॑ हेनो॑ मँझलो॑ किसिम के किसान आपनो॑ माल बेची आवौं ।''

गंगा-कोशी में सावन-भादो के उफान आवै के ठीक दू महीना पहिलको॑ बात छेकै; किसना सें परमेसरीं कहले॑ छेलै, ''गाँववाला सिनी जों मिली-जुली के॑ शिवराज बाबू के॑ मुखिया सें विधायक बनाय दिऍ, ते॑ कोय्यो कीमत पर है ते॑ तय्ये छै कि हुनी विधायक सें मंत्री बनिये जैतै आरो मंत्री बनत्हैं जे हुनी पहिलो॑ काम करतै, हौ कटिहार में केला सें जेली बनै के कारखाना खोलवाना, है हम्में नै कही रहलो॑ छियौ किसिन, शिवराज बाबूं खुद्दे धानुक, कोरी, यादव टोली के पाँचो सौ आदमी के बीच कहले॑ छै, आरो तोंही सोच-विचार करी के॑ देखैं किसिन, जों हेनो॑ होय जाय छै ते॑ केला बेचै ले॑ किसानो॑ के नै बाहर जाय ले॑ लागतै, नै ते॑ मजूरिये ले॑ दिल्ली आरो पंजाब भागै ले॑ लागतै । बस आपनो॑ टोलावाला सें वोट दिलवाय दिऐं किसिन । आपनो॑ टोला पर तोरो॑ पकड़ छौ, ई बात ते॑ सब्भै जानै छै ।''

किसनां ओकरो॑ बात चुपचाप सुनी लेले॑ छेलै । बोललै कुछ नै । वै जानै छेलै कि है सब होतै कुछुवे नै, कहै-सुनावै ले॑ जे जतना कही, सुनाय लौ । होना के॑ जब तांय परमेसरी कहतें रहलै, तब तांय ओकरा हेने लागलै कि ओकरो॑ सब्भे टा दुख-दरिद्री जइये वाला छै—लक्ष्मी घो॑र, दलिद्दर बाहर । आरो जबे॑ परमेसरी आपनो॑ बात कही गेलै, ते॑ जादा ते॑ नै, एतना किसना जरूरे सोचलकै कि शिवराज बाबू विधायक मंत्री बनला पर जों नहियो कुछ करतै, ते॑ एतना ते॑ जरूरे करतै कि ई गाँव के कच्ची रास्ता के॑ पक्की जरूरे बनाय देतै—पक्की सड़क तांय । आखिर शिवराज बाबू के॑ मौका बे मौका ई गाँव ते॑ आब्है जाय ले॑ पड़तै । जों सड़क बनी जाय छै, ते॑ अबकी वहू बैलगाड़ी सें नै, सीधे टैक्सी करतै आरो लछमनिया साथें भोले बाबा के दरशन लेली सिंघेसर थान पहुँचतै । लछमनियो ई बात कै दाफी कही चुकलो॑ छै । अबकी बाबा के किरपा सें फसलो॑ होन्है लहलहाय रहलो॑ छै । ई फसल सें एतना ते॑ वै जरूरे करतै । चौधरी जी के सबटा कर्ज चुकैला के बादो ओकरो॑ मुट्ठी में एतना टाका ते॑ बचिये जाय छै कि अगला आषाढ़ में केला के कंद रोपै पारे॑ । किसना मने-मन सब हिसाब-किताब लगैले॑ छेलै ।

पर ओकरा की मालूम छेलै कि भादो गेला के बाद हेन्हों बारिश होतै। पाँच दिन पहिलें जबें सताहा लागी कें बरसा रुकी गेलों छेलै आरो मौसम वैज्ञानिकें एकरों घोषणा करी देलकै कि आबें बाकी साल में मौसम सूखे सूखा रहतै तें किसना के बड़ी ढाढस होलै । मजकि ओकरा की मालूम कि मौसम वैज्ञानिक के भविष्यवाणी आरो सड़कों किनारे के पिंजड़ा में बंद सुग्गा के भाग्य बतैवों—दोनों बराबरे ।

छठमों दिन बीततें नै बीततें भोररिये सें वहें प्रलयकारी बरसा शुरू होय गेलै । किसना सुनलकै—समस्तीपुर, खगड़िया के बाद आबें कटिहारो के कै गाँव भाँसै वाला छै । नौगछिया तें पानिये पर तैरी रहलों छै । किसना मनेमन सोचलकै—मनिहारी घाटों में पानी जों सतह सें ऊपर उठलै तें समझों कि ओकरो गाँव नै बचें पारें ।

मजकि हेनों नै हुऍं पारें । किसना फेनू मने-मन सोचलकै—गाँव के पुरखां जे औघड़ वाला कथा कहै छै, ऊ झुट्ठे नै हुऍं पारें । आरो कुछ होय जावें पारें, ई गाँव कें कोशी छुवौ नै पारें । आरो ई सोचत्हैं ओकरा लागलै, जेना वैं बोहा में भाँसतें कोय गाछी के सहारा पावी लेलें रहें। "की सचमुचे ओकरों गाँव बची जैतै, जो कोशी आखरी तांय उमतैलै । तखनी औघड़ के बचन की करतै। सुनै छियै कि एक दाफी बाली रं बलशाली एक राकसें कोशी के छान्है के कोशिश करलें छेलै—रूप सें मोहित होय कें । की बन्हाय गेलों छेलै । तें औघड़ के मंत्र सें की बन्हाय जैतै कोशी माय ।" किसना एकदम सें काँपी उठलै। ओकरों हाथों सें ऐलों गाछ गोता खाय कहीं दूर निकली गेलै—ढेर सिनी शंका रों थपेड़ा खाय कें ।

किसना सोचें लागलै—आय भोररिये सें जोन रकम के बरसा होय रहलों छै, रुकी-रुकी कें, ओकरा सें तें ई नै लगै कि हमरों ई गामो केन्हों के बचें पारतै । आस-पास के नगीच वाला में तें हेलाव भरी पानी छप-छप करिये रहलों छै । समेली, तिनघरिया, बोखरी, अमोध्यागंज, मजडीहा के लोग नाव पर बैठी-बैठी आपनों घोंर-दुआर छोड़ी देलकै—जोंर-जनानी, बच्चा-बूढ़ों सब नाव-डेंगी पर बैठी कें । बस दू-एक टा छवारिक हरेक घरों में रही गेलों छै । बड़ी जिद करी नाव पर वहूं लछमनिया कें चढ़ाय देलें छेलै, बेटा आरो दियोर साथें लगाय कें ।

किसनां सोचलकै ई तें वैं अच्छा करलें छेलै कि लछमनिया के जिद पर मकान के छत पर माँटी गारा पर ईंटा के एक छोटों रं कोठरी आरो बनाय लेलें छेलै । नै जानौ कि सोची कें ऊ उठलै आरो बाँसों वाला सीढ़ी छत सें लगाय

कें ऊपर चढ़ी गेलै । किसना झाँकी कें देखलकै—बाँस भरी दूरी-दूरी पर नाव रेत पर बही रहलोॅ छै, जै पर जनानी बच्चा-बूढ़ोॅ साथें गाय-भैंस-बकरी तांय लादलोॅ छै । नाव बड़ी तेजी सें बढ़ी रहलोॅ छै । किसना आकाश दिख देखलकै। कारोॅ- कारोॅ मेघ बीच मलका साँपे रं ठनकी रहलोॅ छेलै—उखेल होला सें की, कखनियो पानी होहाय कें पड़ेॅ पारेॅ ।

ओकरोॅ दोनों आँख अपने आप मूंदी गेलै आरो दोनों हाथ उठी गेलै कोशी माय के प्रार्थना में । आँख मूंदलै तेॅ कुछ देर लेली मुंदले रही गेलै । कानोॅ में छप-छप के आवाजोॅ साथें मनौन के गीत गूँजेॅ लागलै,

सगरे समैया कोशिका हँसी खेली बितैलियै से भादो मासे
कोशी माय लागै छै पहाड़ से भादो मासें
एक तेॅ अन्हार राती दोसर बरसात घाती सूझै नहीं
मैया गे रेत के बहाव सें गे सूझै नाहीं
मलरी-मलरी कोशिका करै अनघोल सें नदी बीचें
कोशी माय मन डरयाय से नदी बीचें ।

पहचानै में देर नै लागलै । ओढ़ैया के दादी रोॅ आवाज छेलै ''तेॅ की हरिबोलो भैया गाँव छोड़ी रहलोॅ छै ?'' किसना के मुँहोॅ सें आवाज निकललै आरो फेनू ऊ पागल नाँखी आपनोॅ छत पर चक्कर लगैतें बोललै—''हरिबोलो भैया छोड़िये रहलोॅ छै तेॅ की अचरज । अबकी हुनी खेतियो-बाड़ी तेॅ नै करलेॅ छै । कोॅन मोह होतै । मजकि हम्में केना छोड़ी कें चल्लोॅ जांव । ओकरोॅ आँखी में अचोके केला रोॅ हलहलैतें गाछ सिनी नाँचेॅ लागलै जेना सेना के सैनिक के जमात आपस में कोय उत्सव मनैतें ।

''किसना का, नाव लेलेॅ परमेसरी का पुबारी टोलोॅ के ऊ छोरी पर छौं । कोशी के बोहोॅ गाँव में घुसी ऐलौं । समेली, तिनघरिया, बोखरी, अयोध्या गंज, मजडीहा सब हेलम-हेल हुऍ लागलोॅ छै । काका, जल्दी तोरा बुलैलकौं । नाव खोलतौं ।'' ऐंगन सें अठारोॅ साल के एक लड़का हाँक देलकै ।

''की ?'' किसना कें काटोॅ तेॅ खून नै । एक क्षण लेली काठ बनी गेलै ।

''हों काका, जगेसर काका एकदम जल्दी बोलैलकौं ।''

''बिलटा'' किसना तुरते आपनोॅ हालतोॅ पर काबू पैतें कहलकै, ''जो जगेसर कें कही दियैं, ऊ नाव लै कें निकली जैतै, जेकरा-जेकरा लै जावेॅ पारतै, लै जैतै, मजकि हम्में नै जैवै ।''

किसना देखलकै, बिलटा ओकरोॅ पूरा बात बिना सुनल्हैं उड़ान दै देलेॅ छेलै । कुहराम मचेॅ लागलै । हजार, दू हजार के आदमी के आवाज, एक लाख

के आदमी के शोरगुल में बदली गेलै । किसना समझी लेलकै कि कोशी औघड़ के बांधलोॅ रेखाहौ केॅ लांघी गेलै । रेखा लांघी गेलै, तहीं सें तेॅ ई हाहाकार छै । बैरिया, करबोला, पहाड़पुर, जमरा, अमबड़िया आरो गोरबा गाँव तेॅ पहिलैं बोहा में भाँसेॅ लागलोॅ छेलै, आबेॅ यहू इलाका जलमगन । जबेॅ समेली, तिनघरिया आरो मजडीहे डूबी गेलै तेॅ ओकरोॅ केला खेते केना बचलोॅ होतै । आदमी तेॅ छत्तोॅ पर चढ़ी गेलोॅ होतै, गाछोॅ पर चढ़ी गेलोॅ होतै, मजकि बेचारा फसिल .....ऊ तेॅ ढोर-ढांगर नाँखि बही गेलोॅ होतै । ढोर-ढांगर तेॅ तभियो हेली-हूली केॅ बची जैतै, मजकि खड़ा फसिल ? ऊ तेॅ.....कल जबेॅ भोर होतै तेॅ केला के गाछ सिनी कटलोॅ-मरलोॅ सैनिक के लहाश नाँखि हिन्नें-हुन्नें पानी पर पड़लोॅ नजर ऐतै । मजकि आबेॅ भोर होतै की ?

सोचलैं किसना के आँख आपने आप मुनी गेलै । आरो मुनले आँखी सें वैं आपनोॅ खेत के एक-एक गाछ केॅ देखलकै—एकदम क्षत-विक्षत । जेना धृतराष्ट्र नें मुनलोॅ आँखी सें कुरूक्षेत्र केॅ देखलेॅ छेलै । किसना के छाती फाटी केॅ रही गेलै । ओकरोॅ मोॅन होलै—ऊ उठै आरो हमेशे-हमेशे लेली ई गाँव छोड़ी केॅ चली दै । रहौक कोशिये माय आरो पंचतल्ला हवेली में बाबू शिवराज जी ।

मजकि कहाँ जैतै किसना । ई गाँव में तेॅ किसना रोॅ कनियैनिये के नै, ओकरो सपना गड़लोॅ छै—एक ठो नै, कैक ठो । फेनू कन्नू चौधरी ? सपने नै गढ़लोॅ छै—कन्नू चौधरी के कर्जो गड़लोॅ छै—सान नाँखी ओकरोॅ छाती में । केन्हौ केॅ नै भागेॅ पारेॅ ऊ ।

आकाश कारोॅ-कारोॅ मेघोॅ सें ओन्हे ढलढल छेलै । मलका के अभियो होन्हे मलकवोॅ । बूंदा-बूंदी नै होय छेलै, मतरकि वही राती सें किसना के आँखी सें जे बूंदा-बूंदी शुरू भेलै, ऊ आय तांय नै रुकलोॅ छै ।

पगलवा मरी गेलै

''सुनलैं, पगलवा मरी गेलै ।''

''आंय की बोलै छैं, पगलवा मरी गेलै !''

''झूठ थोड़े बोलै छियौ.....होना कें जे कहैं, लोगें ओकरा पगलवा भले कहै छेलै, बात ओकरों पागलवाला नै छेलै ।''

''बात रहौ कि नै रहौ, हर बातों पर ओकरा भाषण आरो कुढ़बों ओकरा पागले सिद्ध करै छेलै ।''

''से तें ठिक्के कहलैं.....मजकि जे कहैं, आबें ओकरों बिना घोंर, गली, मुहल्ला, चौराहा सब सूने-सूने लगतै ।''

''धूरो ! सूनों की लागतै, ओकरा सें तें सब तंगे छेलै—घोंरवाला सें लैकें गली-मुहल्ला वाला तांय । पता नै, कत्तें बड़ों महात्मा बुद्ध आरो चाणक्य आपना कें समझै छेलै वैं ।''

''मजकि जे भी कहैं, बात बुद्धि वाला बोलै छेलै ।''

''धूरो ! की बोलै छेलै, माथों चाटी जाय । आबें तोंही बोलैं—घरों के औकतों-भाँसों लोगें घरों सें बाहर नै फेकतै तें कहाँ फेकतै । सोचैं, सौ घरों के गन्दगी एक्के ठियाँ जमा होतै तें ढेर नै लागतै की ? आबें यहें बात लै कें ऊ दिन भरी भिनकतें रहै । केकरौ सीधा बोलै के तें दम छेलै नै—कूड़ा दिश मूं करी फदकतें जाय अरबी-फारसी, अंगरेजी में—जथी में जखनी सुर चढ़ी गेलों, बस वही में ।''

''एकदम सुराहा छेलै । फदकी शुरू होलै तें रुकै के नाम नै । यही बातों सें तें ओकरों घरवालाहौ तंग छेलै ।''

''तंग नै ऐतै । छोटो॑-छोटो॑ बातो॑ वास्तें ई रं ऊ बहू-बेटी पर झुंझलैते॑ रहै कि नै पूछैं । जरा-सा बर्त्तन-बासन के आवाज होलै कि हुन्नें से ओकरो॑ आवाज झाँझे नाँखी झनकलै—रसोय घो॑र छेकै की कारखाना ? मार ठांय-ठांय करी रहलो॑ छै भोरें सें ।''

''यहू बात नै छेलै कि एक बात के खतम होतैं वहीं पर रुकी जांव, बर्त्तन-वासन सें शुरू होलो॑ ते॑ तुरत्ते दोसरो॑ बातो॑ पर, लागले तेसरो॑ बातो॑ पर ।''

''घो॑र भरी के॑ उधियाय के॑ राखी दै । एकदम तंग-तंग करी मारै । आबे॑ तोंही बोलैं.....खैर ओकरो॑ डरो॑ सें ओकरो॑ कोय बच्चा-बुतरू टी. वी., रेडियो॑ ते॑ नहियें चलावै, जखनी पड़ोसियो टी. वी. बजावै, तखनी ओकरो॑ मिजाज देखतियैं । हमरा ते॑ कै दाफी देखै के मौका मिललो॑ छै—भन्न-भन्न करतें रहैतियौ—आपनो॑ कोठरी सें लै के पड़ोसी के दीवारी तांय जाय के॑ फदकतियौ 'ई मुहल्ला ते॑ जेना शाह मार्केट बनी गेलो॑ छै ।' पत्नी दिश जाय-जाय कहतियौ—शाह मार्किटे में कैन्हें नी जाय के॑ मकान खरीदी लेला । कान ते॑ छौं नै, कान ते॑ फाटै छै हमरो॑—लागै छै जेना कान्है में कंडाल बजते॑ रहे॑ ।''

''है बात बोललै ते॑ हमरा याद ऐलै, सावनी पूजा के दिन छेलै । फांड़ी के सामना वाला गोवर्द्धन मंदिरो॑ के कंडाल रो॑ मूँ वही दिश छेलै, जन्नें पगलवा रो॑ घो॑र । जखनी हम्में ओकरो॑ घो॑र पहुँचलियै ते॑ देखलियै, कंडाल के आवाजो सें ज्यादा ऊ बाजी रहलो॑ छै । आपनो॑ दोनों छोटकी बेटी पर बरसवो॑ करी रहलो॑ छै—तोरे सिनी हेन्हो॑ परवैतनी के कारणे है कंडाल चंडाल रं बाजी रहलो॑ छै । गाहक जत्ते॑ बढ़तै, दोकान ओत्ते सजतै, ई ते॑ जानले बात छेकै ।''

''फेन्हू ते॑ परवैतनी साथें पगलवो के उपास होलो॑ होतै ?''

''एकदम ठीक बोललैं । बकबक करतें, घरो॑ सें निकलै ते॑ दिन भरी ले॑ निकलिये गेलै । दिन भरी आसरा देखतैं रहलियै कि घो॑र लोटै ते॑ श्यामसुन्दर घोष वाला कविता-पुस्तक लै लियै । कै दिन होय गेलो॑ छेलै—मांगियै ते॑ कहै—आभी ते॑ कुछुवे पंक्ति पढ़ले॑ छियै । पढ़ै छेलै कि गीतो॑ के गोड़ जांतै, पता नै ।''

''अरे, तोहें घोष जी के ऊ किताब की देले॑ छेलैं, सब्भे ले॑ विपत्ति के पिटारा देले॑ छेलैं । एक दिना हम्में वही वक्ती पहुँची गेलियै, जखनी वैं वहे॑ किताब पढ़ी रहलो॑ छेलै । हमरा देखत्हैं इशारा सें बैठै ले॑ कहलकौ आरो सुनाबे॑ लागलौ—गीतो॑ में है जे नदी, जंगल, पहाड़, झरना के बात कवि करनें छै आरो जे रं सरकार सें लै के॑ ठेकेदार तांय पर्वत-जंगल उजाड़ी रहलो॑ छै, तबे॑ कवि के की होतै, कविता के की होतै, नद्दी के की होतै, सबसें बड़ो॑ बात कि नरी के की होतै !'' हर साल

बनले सड़क केॅ बनैलोॅ जाय छै । सालो नै पुरै छै कि सड़क के गिट्टी-छर्री नाली में । फेनू पहाड़ केॅ काटोॅ-तोड़ोॅ आरो सड़कोॅ पर बिछावोॅ । अरे लोगें समझै छै कैन्हें नी कि सड़क तेॅ हजार बनैलोॅ जावेॅ सकै छै, मजकि पहाड़ की वैं दोवारो बनावेॅ पारतै ? अरबौं साल उथल-पुथल के बाद एक पहाड़ मिलै छै, लोगें समझै छै, दनादन तोड़लें जाय छै ।''

''एकदम पागल छेलै, कोय बात मिलना चाहियोॅ, बस वहेॅ पूंछ केॅ लंका में हनुमान रोॅ पूछ बनाय लेलकौ । जे चीज कोय सुनहौ लेॅ नै चाहलकौ, वै पर वैं घंटो सोचलकौ....ही.....ही.....ही....ही ।''

''यहेॅ कहै छैं, एक दिन के बात सुन । ऊ आपने मुहल्ला के बैजानी चौधरी सें लड़ी गेलै । आबेॅ भला तोंही सोचें—कहाँ राजा भोज आरो भोजबा..... । चौधरी जी मंत्री भेलै, दस पुलिस तेॅ संगे-संग लागले रहे छै.....हौ तेॅ वही दिन ठोकाय जैतियै, समझैं कि औरदा नै पुरलोॅ छेलै ।''

''मजकि ऊ भिड़ी गेलै कौनी बातोॅ पर ?''

''अरे बात की होतै । ऊ जे पुलिया नै टुटलै आरो वैमें दस ठो मजूरो नै दबी केॅ मरी गेलै तेॅ चौधरी जीं नें कहलकै कि एक-एक मजूर केॅ दस-दस लाख मिलतै, साथें-साथें एक-एक परिवार केॅ एक-एक आदमी के सरकारी नौकरियो....बस वही बातोॅ पर.....हम्में पूछै छियौ, मंत्री टाका आकि नौकरी देतियै की नै देतियै, ओकरा कथी लेॅ लबर-लबर करना छेलै....ऊ तेॅ कहैं कि चौधरी जे के अमला-कफला ओकरोॅ कालर पकड़ी केॅ धकेली देलकै, नै तेॅ जे रं पुलिस सिनी सावधान होय गेलोॅ छेलै कि तखनिये ओकरा नेक्सलैट कही केॅ ठोकिये देतियै।''

''बतावैं, हौ रं अपमानित होला के बादो ओकरा में कोय सुधार छेलै की ?''

''सुधार कहै छैं, अरे ऊ तेॅ हेनोॅ पागल छेलै कि कांके के डॉक्टरो ओकरोॅ ईलैज करतियै तेॅ डॉक्टरे सिनी पागल होय जैतियै, यै पर ऊ नै सुधरतियै । सुनें एक कहानी.....अच्छा तोंही कहैं, कोय हेनोॅ मुहल्ला छै, जेकरोॅ गली साँकरोॅ-साँकरोॅ नै छै ? दसो फीट के गल्ली छै तेॅ लोगें दुआर के सीढ़ी हेनोॅ बनैलेॅ छै कि आधोॅ सड़के पार ।''

''ई तेॅ छोड़ी दैं, पगलवा रोॅ गल्ली में तेॅ सब्भैं आपनोॅ दुआरी सें लै केॅ बीच सड़क तांय ससरौआ बनैलेॅ होलोॅ छै कि कार हुर सना घोॅर ढुकी जाय ।''

''आबेॅ तोंही सोचें, एक बनैतें तेॅ दुसरोॅ केना चुकतै । ओकरा गाड़ी रहौ कि नै रहौ; वहूँ ससरौआ दुसरोॅ दिशोॅ सें बनाय लेलेॅ छै.....गली के सड़क तेॅ जेना घाटी के बीच नाली । आबेॅ सुनें पगलवा रोॅ बात—ऊ कभियों ऊ मुख्य गली सें नै निकलै, सुरंग नाँखी चिमनिया गली सें निकली जाय, मजकि गली के पक्की

सड़क सें नै । ओकरा ई दिरिश देखले नै जाय—भले यै सें केकरौ कुछ मतलब नै रहेॅ ।''

''कैन्हें नी; पगलवे केॅ तेॅ एकटा आँख छेलै, बाकी तेॅ सब सूरदासे, ही....ही...ही...ही ।''

''तहूँ की याद दिलाय देलैं । ऊ तेॅ आँख रहतौं अन्हरे छेलै । रस्ता में केकरो उटपटांग चाल-ढाल देखै कि आँख मुनी लै, आरो जों मानी ले कि तखनिये उटपटांग ढंग से चलतें कोय ठेलावाला आकि मोटरसाइकिल धक्का मारी देतियै, तबेॅ ?''

''मारी केना देतियै, ऊ तेॅ आपने नाली सें सटले-सटले हाथ भरी अलग हटी केॅ चलै—साइकिल-ठेला के डरोॅ सें । एक दिन तेॅ बिना धक्के खैले नाली में फच सना ससरी गेलै, ही, ही, ही, ही, ही ।''

''अरे रे रे रे, तोंहें जोन दिनकोॅ है बात सुनैलैं, ठीक वहा दिनकोॅ एकठो आरो बात सुन । मारवाड़ी पाठशाला के कोनमा वाला नल.....जानवे करै छैं, ऊ तेॅ दसो सालोॅ सें बिना टोंटिये के ओन्है बहतेॅ रहै छै ।''

''वहेॅ नल की, शहर के सब्भे सरकारी नल के वहेॅ हाल छै.....''

''वहेॅ तेॅ सुनाय रहलोॅ छियौ.....है तेॅ तहूँ जानै छैं कि कोनमै पर विजयेन्द्र जी आपनोॅ कॉपरेटिव ऑफिस खोली केॅ कत्तेॅ परेशान छेलै ऊ पागल सें । साँझकी ओकरा हुन्नें सें गुजरन्है छेलै आरो पानी केॅ हेन्हैं बहतें देखै तेॅ सीधे ऑफिस घुसी जाय आरो विजयेन्द्र पर लागै उपदेश झाड़वोॅ, ''हेन्है केॅ चलतै देश-सेवा आरो समाज-सेवा विजयेन्द्र भाय ? एकठो नल के तेॅ वेवस्था करेॅ नै पारेॅ छौ, वै पर बड़का-बड़का मोर्चा के संयोजक बनी गेलौ ।'' ओकरा सें विजयेन्द्र एत्तैं तंग छेलै कि ओकरा देखत्तैं स्टोररूम में घुसी जाय आरो निकलै तेॅ गेला के खबर पैल्है पर ।''

''हा, हा, हा, हा, हा ।''

''आरो आगू नी सुन ! दिनकोॅ बात छेकै । नल के पानी नाली में वेग सें बही रहलोॅ छेलै, कोय भरवैया नै.....ऊ सीधे सीढ़ी केॅ लांघतें ऑफिस तरफ बढ़लै आरो विजयेन्द्र जी तेॅ भनक मिलत्तैं स्टोर रूम में ।.....है सब बात जखनी कोनमावाला पनवाड़ी सुनावै छै, तखनी मजा आवै छै । पगलबा गुरगुरैतें नीचें उतरलै आरो पहिलें तेॅ नल के मूँ पर हथेली रखतें कुछ देर लेली खाड़े रहलै...हाथ हटैलकै तेॅ वहेॅ रं पानी होॅ-होॅ.....तबेॅ जानै छै वैं की करलकै । जेबी से आपनोॅ रूमाल निकाललकै आरा नल के मूँ में पेंच नांखी अमेठी-अमेठी केॅ घुसाय देलकै । मजकि पानी के हौ वेग, भला रूमाल केॅ की बुझतियै । पहिलें

तें छुर-छुर करी कें हिन्नें-हुन्नें सें पानी निकललै, फेनू हेनों धक्का मारलकै कि पगलवा के रूमाल नाली में । ही.....ही.....ही.....ही ।''

''हा....हा....हा.....हा, एकदम घोर पागल छेलै । जानै छैं, एक दिन की देखलियै ? देखै छियै कि खलीफाबाग चौक के एक दुकानी के बाहर खड़ा छै। हौ चित्रशाला वाला पिन्डा नै छौ, वही पिण्डा पर आरो टुक-टुक चौकों पर खड़ा पुलिस के छतरी कें ताकी रहलों छै । पीठी पर हाथ धरी पूछलियै तें कहलकै—'आपनों आदर्श चौक देखी रहलों छियै—स्मार्ट सिटी रों स्मार्ट चौक । देखै नै छैं—की रं पाँच-पाँच गाय सड़क के बीचो-बीच बैठलों जुगाली करी रहलों छै । खाड़ों साँढ़ पुलिस के डंडा नाँखी नेंगड़ी भांजी रहलों छै । बोहों में खोरपतार, गाछ-बिरिछ आरो मरी नाँखी कार, फटफटिया, साइकिल, ठेला बही रहलों छै—हेनों आदर्श चौक मिलतौ कहीं दुनियाँ में ? ई चौराहा छेकै कि गोशाला—हम्में आय तांय नै समझें पारलियै ।' आरो ई कही ऊ एकदम खामोश भै गेलै भाय, जेना गोबध लागी गेलों रहें ओकरा ।''

''आरो देखैं, वहें गाय-साँढ़ के बेलगाम दौड़ में पगलवा के आखिर जानो चल्लों गेलै । जानवे करै छैं, गरमैलों गाय के पीछू जबें साँढ़-बैल दौड़ै छै, तबें तें रास्ता में केकरौ की देखूहौ लें चाहै छै.....वहें धरमशाला के सामना.....उमतैलों साँड़ दौड़लै तें एक बूढ़ों भागै के फेरा में हिन्नें-हुन्नें करें लागलै । ठेला, साइकिल, कार—भागें तें कन्नें भागें.....हुरै लें साँढ़ बढ़वे करलों छेलै कि पगलवां देखलकै आरो बूढ़ा कें एक दिश धकेली देलकै । धकेली कें भागी नी जाना चाही, से नै, ताकें लागलै कि बूढ़ा कें चोट तें नै लागलै, कि तखनिये साँढ़ें सिंगी सें फाड़िये तें देलकै पगलवा कें.....दोनों सिंगी पर पहलें तें ओकरा उठैलकै आरो नीचें होन्है कें पटकी देलकै, जेना कोय मजूर भारी-भरकम सिमेन्टी के बोरा कें जमीनों पर पटकी दै छै आरो फेनू पेटों में सिंगी कें घुसाय कें हिलकोरी देलकै । मिनटो नै लागलों होतै—फुटलों बेलुन नाँखी लेटाय गेलै माँटी में ऊ. .....खून तें दर-दर ।''

''च्, च्, च् जे कहैं, पगलवा रहै छेलै सब्भे वास्तें चिन्तित । चल दू मिनिट ओकरों आत्मा के शांति लें खाड़ों हो जइयै—वहीं चौधरी जी के लकड़ी-गोला में । कोय आरो आवै वाला तें छौ नै—हमरा सिनी दू होलियै, गोला के विजय बाबू—तीन होलै आरो मुनी लाल—चार । बस खाड़ों होय जाना छै दू मिनिट । आरो की । चल उठ ।''

''ठीक कहलैं, मजकि पहिले एक-एक ठो सिगरेट तें सुलगाय ले ।''

सुख

''बस आयके भर तें । कल फरचों होतै नै होतै कि हम्में बोरिया-बिस्तर समेटी लेवै । अबकी तीन दिन नै आना छै । लदनी घोड़ा नाँखी खटवों सें आराम मिली जाय छै तें देहो-हाथ टनमनैलों लागै छै । आरो कैन्हें नी—जीरबामाय हाथों के बनैलों खाना खाय कें के नै टनमनाय जाय । जेन्हों तन्तों सें खाना बनाय छै, होने तन्तों सें खाना खिलैबो करै छै । जब तांय खाना रों एक्को कौर पत्ता में पड़लों रहै छै, टसकै नै छै । हमरों एकेक कौर पर ओकरों चेहरा खिलतें रहै छै, जेना, कै दिनों के बेमारी सें उठलों रोगी पत्थ देखी । जखनी आखरी कौर मुँहों में राखी गिलास उठाय छियै तें अघाय-अघाय जाय छै जीरबा माय । यही स्नेह तें ओकरों छेकै कि ई ठूँठ जग्घा में रहै के एक जरा मोंन नै करै छै.... इखनी भागौं कि तखनी भागौं .....जों गामे में जीयै लायक खर्ची निकली ऐतियै तें ई परदेश कथी लें जोगतियौं ।'' रिकशा पर बैठलों अजमेरी ई सब याद करी गेलै ।

अजमेरी आय चार महीना सें भागलपुरों में रिकशा चलाय छै । तीस-पैंतीस सें ज्यादा के होतै । काठी-कुठी मजबूत । मौका पड़लों तें दू-तीन सवारी के जग्घा में चार-चार तक खीची लेलकों । एक तें देह सें अलग, दुसरों ओकरों रिकशो हेनों कि केकरो मोंन ललची जाय वै पर बैठै लें । कमाय के पैसा काटी-काटी कें वैं ई रिकशा खरीदनें छै । यहाँ नै, दुमका में । आरो वांही सें चलैतें-चलैतें भागलपुर लै आनलकै । चार-चार ठो सवारी बिना कसमकुस के बैठें पारें । दू आगू में आरो दू पीछू में । सीट के पीछू एक काठ के पट्टी राखी

कें सीट बनैलों गेलों छै ।

हेना कें तें छोंटो-मोटो सवारी ओकरों रिकशा के तड़क-भड़क देखिये कें संकोच में पड़ी जाय छै—पता नै कत्तें किराया माँगी बैठें, मोल-मोलाय करवों उचित नै समझै, कुछ बोली नै दें ।

होन्हौ कें अजमेरी सवारी देखिये कें रिकशा पर बैठलकों । दिन भरी में चार-पाँच लम्बा सवारी मिली गेलों तें रिकशा खटालों में जाय कें लगाय देलकों । खटालों में रिकशा लगाय कें ही ओकरों दस टाका रोज दैलें लागै छै । ऊ तें खैर कहूँ सुती लिऍं पारें, मजकि रिकशा केना कहूँ छोड़ी देतै—नीन खुलै के पहिलें कोय रिकशे खोली लै जाय ! रिकशा खटालों में आरो कमैलों टाका हमेशे कमीज के नीचें गंजी वाला जेबी में, जेकरा वैं कभियो नै खोलै छै । हफ्ता भरी के जमा पूंजी ओकरै में ।

ई कोय नै जानै छै कि साँझ कें रिकशा लगैला के बाद अजमेरी रहै छै कहाँ । ठीक सात बजे ऊ खलीफाबाग के चित्रशाला लुग आवी कें खाड़ों होय छै । स्टूडियो के मालिक रंजन जी, ओकरों आखरी सवारी होय छै । आरो ठीक आठ बजे बाद, जखनी ऊ खलीफाबाग लौटै छै, बिना रिकशा के होय छै । खाली हाथ डोलैनें ।

आवी कें चित्रशाला के संगमरमर वाला बाहरी पिण्डा पर बैठी जाय छै । बस बैठवे भर के देर कि त्रिफला सबसें पहिलें ओकरे सामना में पत्तल परोसलकों । भले कोय रिकशावाला ओकरा सें पहिलें कैन्हें नी ऐलों रहें । ई चौराहा पर बीसो रिकशा खाड़ों होय छै आरो बीसो रिकशावाला कें त्रिफलैं खाना खिलाय छै । ऐलों गेलों, खैलें गेलों, मजकि अजमेरी आपने टैम पर आवै छै—ठीक आठ बजे ।

आय हुवें सकै छै, वैं त्रिफला हाथों के खाना नहियो खावें सकें; जीरवे माय के हाथों सें बनलों खाना खाय । बस दू-चार टा मोटों-मोटों सवारी तें मिली जाव । सौ, सवा सौ होय जाय, तें की कहना—वैं मने-मन सोचलकै—एकरा सें कम आमदनी होलै तें ऊ आय घोंर नै लौटतै । आयकों रात यहीं । एक रात त्रिफला हाथों के खाना आरो, फेनू तें तीन दिन नहिये नी । होन्हौ कें त्रिफलां जीरबा माय सें की कम मनों सें खिलावै छै खाना ।

''की हो, मायागंज चलवौ ? हस्पताल चलना छै ।''

अजमेरी के ध्यान टुटलै । सामना में एक जनानी एक बूढ़ा के हाथ पकड़ने ठाड़ी छेलै । कपड़ा-लत्ता देखला सें बुझावै छेलै कि कोय पढ़लों-लिखलों घराना के छेकै । अभी ओकरों मनों में ई सवाल उठवे करतियै कि—पता नै..

.... कि तभिये जनानी फेनू बोललै, ''बेटा, किराया के चिन्ता नै करियोॅ, जे टा तोरोॅ किराया होय छौं, ओकरा सें दुगने देभौं, कम नै, बस आहिस्ता-आहिस्ता हमरा मायागंज पहुँचाय दा ।''

अजमेरी झट सीटोॅ सें उतरी गेलै—किराया केॅ सुनी नै, ऊ जनानी के भद्र बोली सुनी केॅ आरो जबेॅ दोनों सवारी लै केॅ ऊ चललै तेॅ ओकरोॅ गोड़ पैडिल पर होन्हे कलेॅ-कलेॅ चलेॅ लागलै, जेना ओकरोॅ गोड़ नै रहेॅ, एक चाल में चलैवाला बैलगाड़ी के चक्का रहेॅ—सड़क के बायां दिश रसेॅ-रसेॅ चलतें ।

होन्हौ केॅ अजमेरी जबेॅ खांचा-खूंची वाला सड़कोॅ पर रिकशा हाँकलकोॅ तेॅ रस्हैं-रसेॅ—आपनोॅ रिकशा छेकै, कोनो किराया पर नै । फेनू भागलपुर रोॅ सड़क तेॅ जेना एक्के चेहरा पर गोटियो के गड्ढा आरो ऐलाहो के माँस—दोनों । चेती केॅ नै चलावोॅ तेॅ निनौन पुरी जाय रिकशा के । आरो इखनी तेॅ हेनोॅ सवारी बैठलोॅ छेलै कि जरियो टा झोल पड़ेॅ तेॅ सवारी नीचेॅ । से अजमेरी आगू ताकै, तेॅ घुरी-घुरी केॅ पिछुवो ताकी लै ।

''मालकिन, बूढ़ा मालिक केॅ ठीक सें पकड़लेॅ राखोॅ । ई तेॅ हेनोॅ सड़क छै कि रिकशा खाड़ो रहेॅ, तभियो सवारी उछली केॅ सड़कोॅ पर गिरी पड़ेॅ ।'' सराय होय केॅ जबेॅ भी अजमेरी रिकशा निकालै छै, सवारी सें ई कहवोॅ नै भूलै । तखनी है बात कहै में ओकरोॅ चेहरा अजीबे रं होय जाय छै ।

कै दाफी तेॅ कसम खैलेॅ छै कि भले दस मिनिट देर लागेॅ, हिन्नें सें नै जाना । मजकि करवो करै की, जों पसैंजर यूनीवरसिटी तरफोॅ के मिली जाय। आरो विहानकोॅ बेरा तेॅ अधिकतर सवारी हिनरके मिलै छै । एक्को प्रोफेसर-टीचर मिली गेलोॅ तेॅ भीखनपुर सें मारवाड़ी कॉलेज तांय के पन्द्रह-बीस टाका । अय्यो होने सवारी सुथरी गेलै तेॅ आब्है लेॅ पड़लै ।

प्रोफेसर कॉलोनी सें मायागंज जाय में ओकरा पूरे घंटा भर लागी गेलै । रुकलै, तेॅ हैंडिल में फँसलोॅ रबड़ केॅ ब्रेक सें फंसैतें वै बूढ़ा केॅ उतरै में मदद करलकै । सोचलेॅ तेॅ यहेॅ छेलै कि सवारी उतरतै आरो ओकरा छोड़ी देतै, मजकि हेनोॅ नै होलै । जनानी ओकरा रुकले रहै के बात कही वृद्ध साथें हस्पताल के हाता में घुसी गेलै ।

एकरोॅ मतलब छै, आबेॅ आधोॅ घंटा देर—अजमेरीं सोचलकै आरो फेनू रिकशा एक दिशोॅ में लगाय, वैं पर जमी गेलै । मने-मन हिसाब लगावेॅ लागलै—यूनीवरसिटी सें मायागंज—कत्तो कम-सें-कम तेॅ पच्चीस टाका, रोकै के मतलब होलै, फेनू लौटती—पच्चीस । पचास टाका तेॅ हेन्हैं होय गेलै.....कहलेॅ छै दुगना देभौं । दुगना देतै की हेन्है, घंटा, आध घंटा रुकतै तेॅ पचीस टाका होन्हौ

कें होय गेलै—जों देब्हौ करतै तें पचीसे टाका ज्यादाहै नी.....एत्तें बचाय-बचाय कें लानै में एतना देना ही चाही.....जे सोची कें हम्में गदगद होय रहलों छेलियै, से हेन्हों कोय बात नै छै । मेहनतानै भर मिली रहलों छै । हों, ई होलै कि एक्के सवारी हेनों मिली गेलों छै कि आबें दुसरों सवारी उठाय के जरूरते नै पड़तै । बस आराम सें रिकशा लगाना छै आरो नौगछिया वाली गाड़ी पकड़ी कें सीधे कटिहार । कत्तो देर-सवेर होतै तें आठ बजे रात तांय पहुँचिये जैवै.....अच्छे होतै.....जखनी जिरबामांय हमरा हठाते ऐलों देखतै, तें केन्हों गुदगुदाय जैतै—ई बात सोचत्हैं अजमेरी आपन्हैं ई रकम गुदगुदाय उठलै कि मत पूछों । चेहरा पर एक अजीबे चमक उठी कें फैली गेलै ।

की-की नै सोचतें रहलै ऊ—जब तांय सवारी लौटी नै ऐलै । अनुमानो सें ज्यादा देर करी कें ऐलों छेलै—पौने घंटा बाद ।

—चलों कोय बात नै छै, हिन्नें सें तें ढलुव्वे ढलाव छै । बीचों-बीचों में एकाध पैडिल मारना छै आरो सीधे खलीफाबाग, फेनू सराय चौक सें भैरवा तालाब तांय तें कोय दिक्कते नै—ऊ मने-मन बुदबुदैलै आरो सवारी कें सावधाान करतें कहलकै, ''दोनों आदमी, टप्पर के बत्ती कें पकड़ी लिऐ, ढलाव छै नी, कत्तो कल्लें-कल्लें चलैवै, तेज होय्ये जैतै ।''

रास्ता भर वैं भरसक कोशिश करतें रहलै कि गाड़ी तेज न चलें, नै तें हेनों ढलाव पर ओकरों रिकशा कें पंख लागी जाय छै—पंखवाला गाड़ी आरो अजमेरी ओकरा पर सवार । तखनी ओकरा सवारी के कोय ख्याल नै रही जाय छै । मजकि की मजाल, कि रिकशा रास्ता सें जरिया टा बेरास्ता होय जाय ।

आधो घंटा नै लगलों होतै कि रिकशा फेनू वहें जग्घा पर । आरो जखनी ओकरों हाथों में भाड़ा के सौ टाका पड़लै तें ऊ खुशी सें गनगनाय उठलै । बड़ी गौर सें दोनों सवारी कें देखलकै, पहलें एत्तें ध्याने नै देलें छेलै—जनानी रेशमी साड़ी में आरो मरदाना रेशमी कुर्त्ता में, शांतिपुरी धोती—एकदम चकचक, कोय बहुत बड़ों घराना के बुझाय छै । आपनों कार नै होतै, ई बात हुऐ नै पारें, या तें गाड़ी में कोय खराबी आवी गेलों होतै आकि ड्रायवरे नै ऐलों होतै, तहीं से रिकशा करै लें लागलै—एक क्षण में वैं बहुत कुछ अनुमान लगाय लेलकै ।

सवारी एक नमरी थमाय कें हेने आगू बढ़ी गेलै, जेना वैं कुछ ज्यादा नै देलें रहें, ओकरों वाजिबे भाड़ा भर ।

अजमेरीं नमरी कें निरयासी कें देखलकै, उलटैलकै, पलटैलकै, आँखी के आगू लानी कें कुछ मिलैलकै आरो फेनू जतन सें मोड़ी कें गंजीवाला जेबों

में राखी लेलकै, जेकरा वैं बदन सें कभियो नै उतारै—बस चार-पाँच रोजोॅ के बादे, घोॅर पहुँचलै पर ।

—आबेॅ की कमाना छै । होय गेलै । जीरबामाय के हाथोॅ में जखनी पाँच सौ टाका राखवै, तखनिकोॅ ओकरोॅ खुशी के लिखेॅ पारेॅ । मजकि पाँच सौ टाका वास्तें तेॅ ओकरोॅ पास आरो पचीस टाका होतियै, तब्हैं नी । पाँच सौ हटैला पर तेॅ ओकरोॅ पास पचासे बचै छै, यै में खटाल मालिको केॅ देना छै आरो भाड़ाओ । बस एक-दू पसैंजर आरो उठाय लियै तेॅ बीस-पचीस होय जाना दायां-बांया के बात छेकै । फेनू हेनोॅ रिकशा पर तेॅ हुभौं आदमी चढ़ैलेॅ चाहै छै—मने-मन सोची ऊ मुस्कैलै आरो रिकशा मोड़ी लेलकै ।

खलीफाबाग दिश नै जाय केॅ नया बाजार दिश मुड़ी गेलै ।

चढ़ाव पर भाड़ा दू पैसा लगैय्ये केॅ मिलै छै । आवेॅ जों गाड़ी निकालिये लेलेॅ छियै तेॅ की आधोॅ दिन आरो गोठोॅ बेरा.....मतरकि नै, सवारी मिललोॅ जाय छै तेॅ की, आय उठायवाला नै छियै, भले आय घोॅर नै जावं तेॅ नै, मजकि गाड़ी एक बजे तेॅ लगैय्ये देना छै । लगाना छै आरो बस बैठी रहना छै सिनेमा हॉलोॅ में—उड़ी-उड़ी बैठै मरवड़िया दुकनियाँ.....इस्स, एकेक गाना जोरदार छै, दू बार देखलियै, मोॅन नै भरलै, की पता, लौटी केॅ आवौं आरो फिल्मे गायब । भीड़ो तेॅ नै जुटै छै, मजकि जे पूछोॅ—नौटंकीवाली के नखरा आरो गाना एकदम झकझोरी दै वाला छै—सोचत्हैं अजीबे स्थिति होय गेलै अजमेरीं के—आँखी में मेला के नाच, कानोॅ में ढोलक के थाप आरो मुँहोॅ पर रही-रही वहेॅ गीत के एक पंक्ति—उठी-उठी बैठै मरवड़िया दुकनियाँ ।

आरो ठिक्के एक बजे रिकशा खटाली में लगाय केॅ अजमेरी सिनेमा हौलोॅ में जाय केॅ बैठी रहलै । जबेॅ सिनेमा हौलोॅ सें निकललै तेॅ ओकरा नमरी सिनी याद ऐलै । गंजीवाला जेबी में हाथ डाललकै, कुछ हेनोॅ ढंग सें, कि कोय है नै समझेॅ—टाका समेटी रहलोॅ छै, समझेॅ तेॅ यहेॅ समझेॅ कि पनखोका में खुजली उठी गेलोॅ छै, वही खुजलाय छै । देखैय्ये लेली वैं दू-तीन दाफी पनखोका खुजलैलेॅ छेलै—कोॅन ठिकानोॅ, ऊ नौटंकी वाली केॅ देखै में मशगूल रहेॅ आरो हिन्नें टेवा में पाकिटमार.....बाप रे बाप, जों टिपिये लेलेॅ होतै तेॅ वैं जिरबामाय के हाथोॅ में की देतै, जेकरा हम्में केना जमा करै छियै, हम्मी जानै छियै—सोचत्हैं ओकरोॅ माथोॅ ठनकी गेलै । चुटकी ससारी-ससारी नमरी झब-झब गिनलकै—एक, दू, तीन, चार, पाँच । निश्चिन्त होलै तेॅ फेनू वहा रं वैं हिन्नें-हुन्नें देह-हाथ खुजलैलेॅ छेलै ।

००

हाता सें बाहर निकललै तें साढ़े आठ बजे रात होय छेलै आरो जखनी त्रिफला लुग पहुँचलै तें नों बजें लागलों छेलै ।

''की, आय एत्तें बेर ? कोय दुसरों त्रिफला मिली गेलै राह-बाट में की ?''

त्रिफला के ई बात सुनी कें अजमेरी जानें तें कोंन रसों सें भीतर तांय भीगी गेलै । बोललै कुछ नै, मुस्की कें रही गेलै । त्रिफलौं जानै छै कि शनिच्चर आरो रविवार कें ऊ शहर में नै रहै छै, आपनों गाँव चललों जाय छै—घर वास्तें कुछ कीनै लें निकली गेलों होतै । कत्तें हाय-हाय करतै, हेनों हाय-हाय में परिवारों के सुक्खे नसाय जाय—यही सें अजमेरी कत्तो ओला-पानी कैन्हें नी पड़ौ, ओकरा कोय आंधियो तूफान नै रोकें पारें ।

''बहुत देर होय गेलौं । सच पूछौ तें तोरे लें दुकान अभी तांय नै बढ़ैलें छियै । नै तें जेकरा-जेकरा खाना छेलै, ऊ खाय कें जैवो करलै ।'' त्रिफलां बड़ी नेहों सें धोलों थरिया कें साफ कपड़ा सें पोछतें कहलकै । पोछी-पाछी ओकरों आगू करी वैमें भात रखलकै । सड़ियैलकै । गोल करी गड्ढा करलकै कि दाल डालें तें पसरें नै । दाल डाललकै आरो फेनू थरिया में दू तरकारी राखतें कहलकै, ''आलू के भरता-भुजिया तें खैतैं रहलों छौ । आय आलूदम खाय कें देखौ । तोरों मनपसन्द के बनैलें छियै—खटरुस वाला—टमाटर दै कें । तोहें हेनों तरकारी तें जी-जानों सें चाहै छौ ।'' सब एक्के सांस में कही गेलै—आलूदम वाला कटोरी ओकरों आगू राखतें ।

ओकरा मालूम छै, आयकों बाद अजमेरी आबें दू रोज बादे दिखतै । ओकरों थाली में कुछ कम होवो नै करै कि त्रिफलां ओकरों मना के बादो ऊ चीज जबरदस्ती राखी दै, ''जी-जानों सें खटै छौ तें रुचो के जी भरी खैवो नै करवौ । गाड़ी खींचै के मतलब होलै बरदों रं मजबूत देहो राखों, खाय-पीयै में लाज की । कहै छै नी—एक घड़ी के बेशरमी, चौबीस घड़ी आराम ।''

त्रिफला के बात सुनत्हैं अजमेरी कें जिरबामाय के याद आवी गेलै—हेन्है कें तें वैं खाना खिलाय छै, जोर-जबरदस्ती करी कें । यहें रं के बात वहूं कहै छै—'देह हाथ सलामत रहथौं, तबें नी घोंर-गृहस्थी के भार । जों समांगे नै रहतौं .....'

ओकरा याद ऐलै—जिरबामाय हेन्है कें तें हमरों वास्तें देर तांय आसरा देखतें बैठले रही जाय छै आरो कोय खाना बनावें न बनावें, झोरवाला कोय खटरुस तरकारी ओकरों वास्तें जरूरे बनैतै, जानै छै, ई होला सें दू कौर ज्यादा खाय लै छियै.....ई बात त्रिफला कें केना मालूम होय गेलै.....जनानी छेकै, सौ

दिन खाय छियै तेॅ रुच जानी लेवोॅ कोय बड़का बात नै.....

अजमेरी तेॅ एकदम विभोर होय उठलै । एक-एक कौर पर गुनी रहलोॅ छेलै—त्रिफला बारे में । ओकरा एकरोॅ सुधे नै रहलै कि ऊ घरोॅ पर नै—चौराहा वाला चित्रशाला के पिण्डा पर बैठलोॅ खाय रहलोॅ छै आरो जिरबामांय नै, त्रिफलां ओकरा खाना खिलाय रहलोॅ छै ।

त्रिफलौ केॅ कुछ समझै में नै ऐलै कि आखिर आय अजमेरी कुछ जवाब कैन्हें नी दै रहलोॅ छै । ऊ परेशान होय उठलै, मजकि पूछलकै आगू कुछवे नै ।

अजमेरी के खाना खतम होय गेलोॅ छेलै । एतेॅ दिनोॅ में ई पहले दाफी होलै कि वैं थरिये में हाथ धोलकै । दोनों हाथ के अंगुली सिनी क्रम सें मुट्ठी में बांधतें दू-तीन बार हेनोॅ घुमैलकै कि भींजलोॅ हथेली सूखी जाय। त्रिफलां देखलकै, मजकि बोललै कुछवो नै । बस, थाली एक दिश हटाय केॅ हड़िया-पतली झब-झब समेटेॅ लागलै । समेटी-उमेटी जबेॅ जुट्ठोॅ थाली दिश आपनोॅ हाथ बढ़ैले छेलै कि अजमेरी ओकरोॅ हाथोॅ में आपनोॅ कमाय थमाय देलकै ।

त्रिफलां देखलकै, ओकरोॅ हाथोॅ में दस टाका के बदला पाँच नमरी छेलै । ओकरोॅ आँख फाटी केॅ रही गेलै । अजमेरी दिश देखलकै, हजार-हजार सवाल वाला आँखी सें, मजकि अजमेरी त्रिफला केॅ देखत्हौं कहाँ देखी रहलोॅ छेलै । बेसुध होय रहलोॅ छै । टाका केॅ राखतें नै देखलकै तेॅ अजमेरी कहलकै, "राखी लेॅ, सब दिन की समांग एक्के रं रहै छै ।" कहतैं-कहतैं जबरदस्ती नमरी सिनी त्रिफला के मुट्ठी में बांधी देलकै आरो झब-झब घंटाघर दिश अन्हरिया रातोॅ में बढ़ी गेलै ।

भय

ऊ आदमी आपनोॅ चार-पाँच लोगोॅ के साथें चन्दा माँगै लेॅ ऐलोॅ छेलै । देखैय्ये सें लागै कि ऊ सब चन्दा लेलेॅ बिना कोय्यो रं जाय वाला नै छेलै । मुंशी चन्दा दैय्यो देतियै, मजकि जोॅन रं सें ऊ आदमीं रशीद पर पाँच-दस टाका लिखै के जग्घा पर सीधे पचास टाका लिखी देलेॅ छेलै, ओकरा सें मुंशी के तेॅ मिजाजे चढ़ी गेलै आरो वैं आपनोॅ कुव्वत सें बाहर चन्दावाला केॅ कही देलकै, ''हम्में चन्दा दै वाला नै, तोरासिनी केॅ जे करना छौं, करोॅ ।''

सुनत्हैं ऊ आदमी के रंग चढ़ी गेलै आरो कहलकै, ''की कहलौ, नै देवै ! मुहल्ला में रहवौ आरो चन्दा नै देवौ । तेॅ ठीक छै ! रे सुखना, चल । जबेॅ अपहरण होतै; आपन्है आवी केॅ पचास हजार टाका जमा करवैतै—फिरौती लै लेॅ ।'' आरो ई कही ऊ आपनोॅ आदमी सिनी साथें बडबड़ैतें निकली गेलोॅ छेलै ।

सब के जाय भर के देर छेलै कि मुंशी के दिमागे जेना चक्कर खावेॅ लागलै । ओकरा कुछुवो समझै में नै ऐलै आरो ऊ सीधे आपनोॅ घोॅर सें निकली केॅ नगीचे के थाना जाय पहुँचलै । संयोगे छेलै कि थाना के बड़ा बाबू कुर्सी पर आराम करतें मिली गेलै । मुंशी केॅ देखलकै तेॅ बिना उकुस-पुकुस करल्हैं बोललै, ''की छेकै मुंशी, हिन्नें केना ? तोंहे तेॅ बोलतें रहलोॅ छैं कि भला आदमी केॅ थाना-फाड़ी सें की काम ?''

''धोखा में छेलियै बड़ा बाबू । आयकल तेॅ भगमानो केॅ थाना-फांड़ी के बिना राहत नै ।''

मुंशी के बातोॅ में रस के गंध मिलतैं बड़ा बाबू कुर्सी पर सीधा होय गेलै आरो बोललै, ''बोलें, की बात छै ?'' एक भेद भरलोॅ नजरी सें बड़ा बाबूं मुंशी केॅ देखलकै ।

''हेनोॅ छै कि अभी कुछ लोग हमरोॅ घरोॅ पर ऐलै—चन्दा माँगै लेॅ आरो हमरोॅ मोॅन के खिलाफ रशीद पर अपने मने पचास टाका लिखी देलकै । जबेॅ हम्में नै दै के बात कहलियै तेॅ वै में एक कही गेलै—'आबेॅ अपहरण होला के बादे पचास हजार टाका पहुँचवैतै ।' हम्में जानै छियै कि ऊ सब कत्तेॅ खतरनाक किसिम के लोग छेकै, कभियो कुछ करेॅ सकै छेॅ ।''

बड़ा बाबूं मुशी केॅ ओकरोॅ बातोॅ सें एक पल में तौली लेलकै, आरो फेनू वहा रं कुर्सी पर जमतें हुवेॅ कहलकै, ''तेॅ फेरू जो, जबेॅ अपहरण होतौ, तेॅ कहै लेॅ अय्यें आकि रिपोर्ट करैय्यें । अभी कथी लेॅ आवी गेलोॅ छैं—माथोॅ चाटै लेॅ ।''

''मजकि अपहरण के बाद हम्में यहाँ केना आवेॅ पारौं ?''

''सब होय छै'' आरो हठाते बड़ा बाबू उखड़तें बोललै, ''थाना केॅ कबाड़ी के दुकान समझी राखलेॅ छैं—कहीं कुछ बात होलै नै कि सीधे थाना पहुँची गेलौं । भागै छैं कि नै यहाँ सें ?''

आरो वही दिन मुंशी शहर छोड़ी केॅ भागी गेलै ।

रहस्य

चुनाव जीततैं नेताजी धर्माचार्य लुग गेलै आरो सब तरह के समृद्धि, सफलता वास्तें आशीर्वाद मांगलकै ।

धर्माचार्य नें लाल कपड़ा में लपेटलो॑ एक धर्मग्रन्थ हुनको॑ हाथो॑ में थमैतें कहलकै, ''एकरो॑ नियमित पाठ तोरो॑ यश आरो समृद्धि के दायक बनतौं ।''

नेता जीं आपनो॑ दोनों हाथो॑ सें ओकरा लेलकै आरो ओकरा पर माथा रखतें, बगल में सावधान मुद्रा में खाड़ो॑ एक संतरी के॑ देलकै ।

फेनू मंत्रीजीं एक सफेद कपड़ा में लिपटलो॑ एक ग्रन्थ धर्माचार्य दिश बढ़ैलके । हुनियौ हौ किताब दोनों हाथो॑ सें लेलकै आरो ओकरा सें माथो॑ लगैतें सामना के सिंहासन पर राखी देलकै ।

■■■